हारल चेहरा जीतल रूप

हारल चेहरा जीतल रूप

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

HARAL CHEHRA JITAL ROOP

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-53-8
दाम: 251/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2020)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथाक सत्तैर

केते लग केते दूर

भादव पूर्णिमा, रातिक अन्तिम पहरक आखिरी क्षणक समय, तँए भोरक होइत आगमन; ओना, सूर्योदय भेला पछाइत लोक अपन माता-पिताक संग पैछलो पीढ़ीक मृत्यात्मा लेल जल-तर्पणक माध्यमसँ जलधार सेहो करबे करता। मुदा तीन बजे माने रातिक अन्तिम पहरक पहिल क्षणमे उठनिहार ऋृषि-मुनी पूर्णिमाक अन्तिमे पहरमे असनान करैकाल जल-तर्पण करए लगै छैथ। सावित्री अपन नियमानुसार तीन बजे भोरमे ओंघी तोड़ि उठि कऽ अपन जीवन लीलामे लगि गेल छेली मुदा ने पुतोहुकेँ उठौलैन आ ने बेटे सहजानन्दकेँ। तेकर कारण ई भेलैन जे सभ दिनसँ देखैत आबि रहल छेली जे जहिना बेटा तहिना पुतोहु रातिक पह फटला पछाइत–माने अन्हारक बिसरजन आ इजोतक आगमनक बीच–उठैए तहिना पोतो-पोती सेहो उठिते अछि। तँए जेकर जे समय उठैक छै से तखैन उठैए। होइतो अहिना आबि रहल अछि जे एक्के वंशमे कियो पहिने आबि पहिने उठला आ कियो पछाइत ऐबो करै छैथ आ ओही हिसाबसँ उठबो करै छैथ। किछु समय बीतला पछाइत बेटा-पुतोहुक उठैक समय भऽ गेलैन मुदा दुनूमे सँ किनको उठल नहि देखि सावित्री अकास दिस ताकए लगली तँ देखली जे चानो पूर्ण रूपेँ अखन डुमल तँ नहि छैथ मुदा रूप-रंगमे मलिनता आबि गेल छैन। ओना, चन्द्रपनमे ललिपन जरूर आबि गेल छैन मुदा मलिनपनक आगमन भेने रसे-रसे उदयपन आबिये रहल छैन।

चन्द्रमाक चन्द्रपन देखि सावित्रीकेँ मन मानि गेलैन जे आब

सबहक उठैक समय भऽ गेल तँए जे अपने नहि उठल तेकरो सभकेँ जगा दिऐ। आँगनसँ आगू बढ़ि सावित्री सहजानन्दक कोठरीक केबाड़केँ थपथपौलैन।

सहजानन्द जगले छल मुदा केबाड़ खोलि बाहर नहि निकलने सावित्रीकेँ बुझि पड़लैन जे पोता-पोती आ पुतोहु सहित सहजानन्दो सुतले अछि। तीन-चारि बेर केबाड़केँ थपथपौला पछाइत सावित्री बजली- “बौआ, बौआ..!”

जागल बेटा, माने नीन टुटल सहजानन्द अपनाकेँ मने-मन दोखी बुझए लगल। दोखी बुझैक कारण मनमे भेलै जे जखन नीन टुटि गेल तखन ओछाइन छोड़ि बाहर निकैल जेबा चाही; से नहि निकलने माए बुझि रहली अछि जे बेटा सुतले अछि, तँए उठबए एली। अपनाकेँ निनाएल बना सहजानन्द बाजल- “हँ, हँ।”

बेटाक मुहसँ ‘हँ-हँ’क आवाज सुनिते सावित्री आगू बढ़ि अपन ऐगला काजमे ऐ आशासँ लगि गेली जे जखन बेटाक नीन टुटि गेल तखन पुतोहुओक टुटले हएत। पोता-पोतीक उठबैक भार हमरा किए रहत। ई भार तँ ओकरा (बेटा-पुतोहु) सबहक छिऐ।

संजोग बनल एका-एकी सभ उठि गेल। ओना, जखन सहजानन्द माइक उठैक आवाज आ घड़ीमे समय देखलक तखनेसँ जागल सेहो अछिए। तैसंग तीन बजे भोरेसँ गामक टोलमे ‘बोल-बम, बोल बम’क संग ‘जय शिव जय शिव’क आवाजो उठि रहल छल आ कामौर नेने कमरिया सभ देवघर जाइले आगूओ बढ़ि रहल छला। माता-पिताक कामौर श्रवणकुमार जकाँ उठाबी वा पत्नीक विचार मानि रामकेँ जंगल पठा अपन प्राण गमाबी...। दुनू सोझहेमे अछि। आजुक परिवेशमे माता-पिता परिवारसँ दूर भइये गेल छैथ। आइक परिवार पत्नीसँ बाले-बच्चा धरि समटा गेल अछि। बोल-बम आ जय शिवक आवाजो आ देवघरक बाट पकड़ल कमरियोक जीवन-दर्शन सहजानन्द मने-मन कइये रहल

छल कि बिच्चेमे माए आबि 'बौआ.. बौआ...' कहैत उठौने छेलैन। माएकेँ बिसवासमे सहजानन्द 'हँ-हँ' कहि अकानि चुकल छल।

केबाड़ खोलि सहजानन्द बाहर तँ निकैल गेल मुदा मनमे अपन जिनगी औनाए लगलै। नित्य-कर्म दिस बढ़िते सहजानन्दकेँ अपन क्रियमाण कर्म सेहो मनमे आबि धमकलै। क्रियमान कर्मकेँ धमैकते मन अपन एकावनम बर्खपर नाचि उठलै। आइसँ एकावनम बर्खक आगमन हएत। पिताजी आइसँ दस साल पहिनहि मरि गेला, मुदा माए तँ अखनो जीविते छैथ। आइसँ पचास बर्ख पूर्व, जहिया हमर जन्म भेल छल, माइयक की पीड़ा रहलैन? ओहन पीड़ा तँ हमरे जीवन दान लेल ने सहली। सत्तैर बर्ख टपला पछातियो ओ अखनो ओहने रूपमे छैथ जेहेन पचास बर्ख पूर्व छेली। मने-मन माइक जिनगीक स्मरण करैत सहजानन्द अपनो जिनगी आ बेटा-बेटीक जिनगीक सुमिरन करए लगल।

बाल-बच्चा सभपर सँ सहजानन्दक नजैर छिछलैत अपन बालपनपर पहुँच गेलइ। बालपनपर पहुँचते मिडिल स्कूलक सातम किलास मन पड़लै। होइतो अहिना छै जे तीन साए पैंसैठ दिनक सालमे, वा तीस दिनक मासमे वा आठ पहरक दिन-रातिक कोनो पहरमे ओहनो काज वा घटना घटिते अछि जे जिनगी भरि, से दिनक पहरक हौउ आकि मासक दिन वा सालक कोनो मास हौ, मन पड़िते खुशियो होइए आ दुखो तँ होइते अछि।

सहजानन्दक मनमे दुख नहि खुशी भेल। खुशी होइते अपन संगी उग्रानन्द आ गुरु प्रधानाध्यापक–परमानन्द–क चेहरा आगूमे आबि ठाढ़ भेल। ठाढ़ होइते गुरुजीक विचार- 'सहज आ उग्र, दुनू गोरेकेँ एकटा काजक भार देबह, से... ।' मन पड़लै।

एक तँ मिडिल स्कूलक शिक्षकसँ बाल-बोध बच्चाकेँ भरिमुँह बाजब अपने-आपमे पैघ उपलब्धि भेल तैपर संगे-संग काज करब तँ आरो ने

बेवहारिक बनबैए। जइसँ ज्ञान-विज्ञान दिस बढ़ैए। ज्ञान-विज्ञानमे एतबे ने अन्तर अछि जे ज्ञान भेल वैचारिक वा सैद्धान्तिक आ विज्ञान भेल बेवहारिक वा प्रायोगिक।

गुरुक मुहसँ 'भार' खसिते सहजानन्द तँ मने-मन तारतम करए लगल जे केहेन भार गुरुजी देता, उठत कि नहि उठत। मुदा उग्रानन्द निर्भीक जकाँ बाजल-

"मास्सैव, अपने पीठपर रहबै किने?"

उग्रानन्दकेँ उत्साहित करैत परमानन्द बजला-

"पीठपोहुए नहि, सिरचढ़ सेहो रहबह।"

'सिरचढ़' सुनिते सहजानन्दक मन सेहो उत्फुल भेल। उत्फुल होइते सहजानन्द बाजल-

"केहेन काज, मास्सैव?"

परमानन्द बजला-

"तीस तारीखके गाँधीजीक सहादत दिवस छिऐन, ओही अवसरपर कार्यक्रम आयोजन करैक अछि। जइसँ स्कूलक बच्चो-बच्ची आ गाम-समाजक जनगण सेहो गाँधीजीक जीवन लीलाक संग विचारो सुनता आ ओइ अनुकूल अपनो जीवनक क्रिया करता।"

सहजानन्द-

"तइले की सभ करअ पड़त?"

परमानन्द-

"आइ अठारह तारीख छी। बारह दिन बीचमे समय बँचल अछि। ओना, पाँच गोरेकेँ मास दिन पहिनहि आमंत्रित कए देने छिऐन। ओ सभ गाँधीजीक सम्बन्धमे पैघ जानकार छैथ।"

सहजानन्द- "आगूक काज तँ भेले सन अछि, रहल बीचमे

आयोजनक बेवस्था। गाम-गाममे आब एते सुविधा तँ भइये गेल अछि जे प्रचार करैक यंत्रक संग पण्डाल-कुरसी सेहो भइये गेल अछि।"

उग्रानन्द बाजल-

"एतबे किए, भोजन-जलपान बनौनिहारक संग बरतनो-बासन गामे-गाम भइये गेल अछि। तँए आयोजनकेँ सफल हेबामे कोनो विशेष बाधा नहियेँ देखि रहल छी।"

सहजानन्द आ उग्रानन्दक उत्साह देखि परमानन्द आरो बेसी उत्साहित होइत बजला-

"बौआ, सभ काजपर नजैर अपनो राखब मुदा तूँ दुनू गोरे जा-जा ओकर बेवस्था करिहऽ। विद्यालयमे तँ सरकारी फण्ड कोनो नहियेँ अछि मुदा सातो शिक्षको आ गामो-समाजसँ खर्चक ओरियान हम कऽ देबह।"

तीस जनवरी। जेहेन आयोजनक रूप-रंग तैयार भेल छल तइ हिसाबसँ नीक बेवस्था भेल। अपन समयानुसार बाहरी पाँचो विद्वज्जन सेहो आयोजनक समयसँ पाँच घन्टा पहिनहि पहुँचला। जलपान केलाक पछाइत पाँचो गोरे गामक दर्शन करैक खियालसँ टहलए विदा भेला। अपन-अपन दृष्टि आ अपन-अपन दृष्टिकोण रहने पाँचो अपना-अपना दृष्टिकोणे गाम-समाजक दर्शन करए लगला। कियो खेती-पथारीकेँ अँकलैन, तँ कियो पर्यावरणकेँ, कियो सरकारक आगमन अँकलैन, माने सरकारक माध्यमसँ कएल गेल काजकेँ, तँ कियो समाजक भाषा, साहित्यकेँ अँकलैन। मुदा सभ मिला यएह अँकलैन जे स्वतंत्र देशक विकास गति की अछि। जइले गाँधी बाबा सुखल ठठरीकेँ एते धुनलैन।

अपन समाजक विचारमे अखनो ओ मान-मर्यादा जीवित अछिए जे जँ बाहरसँ कोनो उत्कृष्ट बेकतीक आगमन होइए तँ बिनु बजौनौं समाजक सभ दासो-दास तैयार भऽ सेवा-टहलमे लगिये जाइ छैथ। सएह भेल। पाँचो गोरेकेँ केना चारि घन्टा बीत गेलैन से अपने बुझबे ने केलैन।

बुझलैन तखन जखन सहजानन्द बजबए आयोजन स्थलसँ हुनका सभ लग पहुँच आयोजन स्थलपर चलैले कहलकैन।

अपन निर्धारित समयसँ कार्यक्रम शुरू भेल। गौंआँक बीच एहेन उत्साह बनि गेल जे कार्यक्रम शुरू हेबाक समयसँ पहिने सभ पहुँच गेल छला। एका-एकी वक्ता समाजक मनकेँ मनमोहन कृष्ण जकाँ गाँधीजीक विचारसँ मोहि लेलकैन। ओना, गाँधीजीक विचारो आ काजो गामो-समाजक लोक देखनौं-सुननौं छथिए मुदा स्वतंत्रता प्राप्त केलाक पछाइत जहिना आन्दोलन अपन फल प्राप्त केलक तहिना स्वदेशी शासन-सूत्रक अध्याय सेहो शुरू भेल। मुदा वैचारिक ओ प्रवाह शिथिल भऽ गेल जे प्रवाह समाजकेँ समैयक संग जोड़ि दुनियाँक प्रवाहमे प्रवाहित हेबाक छेलइ। एहनो शासन पद्धति दुनियाँमे अछिए जेकर स्वतंत्रताक समय शिक्षाक जे दर छल ओ छलांग मारि तेजीसँ आगू बढ़ि गेल मुदा अपना समाजमे ओ ओहन छलांग नहि मारि सकल। जहिना शिक्षा तहिना अर्थ बेवस्थाक संग जिनगीक आरो-आरो अनिवार्य आवश्यकता सेहो ठुमकीए चालि पकड़ने अछि।

सहजानन्दक मन उग्रानन्दक संग मिल कएल गेल काज–माने आयोजनक काज–पर अँटैक चारू दिस ताकए लगल। ओही दिन ने, जखन मात्र एगारह बर्खक रही, गाँधी बाबाक विचार सुनि विद्वज्जनक सोझाँमे स्कूलक सभ शिक्षको आ विद्यार्थीक संग समाजोक प्रवुद्धजन संकल्प लेलैन जे गाँधी बाबा शरीरे दुनियासँ चलि गेला मुदा हुनक बेवहारिक काज–माने वैज्ञानिक सोचक संग कएल काज–जे छेलैन ओ आइ केतए अछि? गुरुजी मरि गेला, मुदा हम दुनू गोरे–सहजानन्द आ उग्रानन्द–तँ जीवित छी। केते लग दुनू गोरे रही आ आइ केते दूर भऽ गेल छी। एना किए भेल?

‘एना किए भेल’ सहजानन्दक मनमे उठिते मन दुनू दिस ओहिना विदा भेल जहिना सीता-हरणक पछाइत बानर-भालू विदा भेल।

सहजानन्दक मन समाजक प्रतिबिम्ब–ऐना–दिस बढ़ल। रामायण-महाभारत गीता महाभारतक अंश छी, कथा आइये नहि बहुत दिन पहिनेसँ समाजक जन-जनमे चलैत आबि रहल अछि, मुदा समाजक रूप-रंग बदलैत-बदलैत एते बदैल गेल अछि जे कियो अपन प्रथमो विद्यालयक शिक्षा- 'झूठ नहि बाजी, सत् बाजब मानव धर्म छी', असानीसँ निमाहि पबैत अछि? सत् बाजब एहेन जटिल भेल केना? की रामायणो आ महाभारतोक व्याख्या ने ते बदलैत चलल। जे बदलैत-बदलैत जीवनक विपरीत भऽ गेल..?

ओना, सहजानन्द जेहेन संकल्प नेने छल, माने गाँधी विचारकक सोझामे, से अखनो निमाहिये रहल अछि मुदा उग्रानन्द विचारकेँ निमाहैक कोन बात जे विपरीत दिशा पकैड़ विरोधमे बजबो करैए आ करबो करिते अछि।

एक्के समाजक बीच दुनू गोरे छी। ओना, जाइतिक समाजमे जाति विभाजन अछि, तइ हिसाबसँ दुनू दू जातिक छी, मुदा टोलो आ गामो एक रहने बच्चेसँ सभ दिन एकठाम रहलौं। रहबे नहि केलौं, बेवहारिक जिनगी दुनू गोरेक एहेन बनि गेल जे जाति-पाँजिक कोनो सिरखारक कोन बात जे रेहो तक मनमे नहि रहल। जहिना गाँधी बाबा अछूत विचार, धनक विषमता आ समाजक जे कुरीति; अछि जेकर विरोध केलैन, से अखनो निमाहि रहल छी, मुदा उग्रानन्द पछैड़ गेल।

सहजानन्दक विचार विद्यार्थी जीवनसँ ससैर आगू बढ़ल। आगू बढ़िते मन पढ़ाइ छोड़ला पछातिक जीवनपर आबि अँटकलै। मैट्रिक पास केलाक पछाइत जखन दुनू गोरे–माने सहजानन्दो आ उग्रानन्दो–एकठाम बैस विचार केलक जे ने नोकरीमे जाएब आ ने समाज (गाम) सँ अलग हएब। नीक विद्यार्थी दुनू, नीकसँ मतलब ऐठाम अछि कोनो विषयकेँ जड़िसँ बुझैक जिज्ञासा। अपन बपौती सम्पैत, खेत-पथार ओते जरूर छेलैहिये जे परिवारक जीवन बसर चलि सकै छल। ओना, ऐठाम

खेत-पथारक माने ई जे जइ परिवारक लोक अपन श्रमसँ खेती करै छैथ आ अपन उपार्जित सम्पैतसँ परिवारक भरण-पोषण करै छैथ। ओना, पचासो बीघा खेतबला तंगहालीमे रहै छैथ, किए तँ खेतीक समुचित बेवस्था नहि भेने आ परिवारक खर्च बढ़ने हएबो सोभाविको अछि। तहूमे अपन इलाका ओहन अछिए जे बाढ़ि-रौदीसँ साले-साले आक्रान्त भेने समस्यासँ विकराल भइये जाइए। किछु इलाका एहनो अछिए जे या तँ धारक पेटमे समा गेल अछि वा धारक (बाढ़िक) आनल बालुसँ बलुआ गेल अछि, जे उपजभूमि कमजोर रहने सेहो समस्या बनले अछि। मुदा से नहि, जहिना सहजानन्दक पिता एक हरक जोत–माने पाँच बीघा खेत–बला छला, तहिना उग्रानन्दक पिता सेहो एक हरक जोतबला–माने आठ बीघा जमीन–बला किसान छला। ओना, परिवारमे भैयारीक बीच भिनौजीक समस्या सेहो रहल। परिवारमे भिनौजीक माने बिखण्डनक परम्परा आइये नहि, सभ दिनसँ रहल अछि। जइसँ जँ दू गोरे पाँच-पाँच बीघाबला एक रंग किसान छैथ आ दुनूक बीच जँ किनको एकटा बेटा छैन आ किनको तीन वा चारि छैन, तँ ऐगला पीढ़ीमे जे बीस-पच्चीस बर्खमे आगू बढ़ि बदैल जाइए, दुनू परिवार जनमे दूरी बनियेँ जाइए। कियो माने एक परिवार भैयारीमे असगर रहने पाँच बीघाबला रहिये जाइ छैथ मुदा चारि भाँइबला बीघा-सबा-बीघाबला सीमापर आबि अँटैक जाइ छैथ, जइसँ परिवारक विघटन हएब सोभाविके अछि।

जहिना सहजानन्द भैयारीमे असगरे, तहिना उग्रानन्द सेहो असगरे अछि। ओना, सहजानन्दकेँ सेहो तीन बहिन आ उग्रानन्दकेँ सेहो तीन बहिन। पिताक सम्पैतमे बहिनक हिस्सा अखनो धरि समाजक नजैरमे नहियेँ अछि। बहिनक नामपर एतबे अछि जे बिआह-दान कऽ सासुर पठा दियौ। काज-उद्यम वा ओहुना भाए-बहिनक ऐठाम आबा-जाही रहबो करैए आ नहियोँ रहैए। सहजानन्दक बहिनक बिआह कम खर्च-बर्चमे भेल। जइसँ परिवारपर बेसी दाव नहि पड़ल। मुदा उग्रानन्दक

बहिनक बिआहमे खर्च-बर्च तेते भेल जे तीनू बहिनक बिआह-दान करैमे तीन बीघा खेतो बिकाएल।

खेतीकेँ अपन जीविका आ समाज सेवाकेँ अपन जीवन बना सहजानन्दो आ उग्रानन्दो नोकरी-चाकरी दिस ताकब छोड़ि अपन सम्पैतकेँ समयानुसार क्रियमान बनबैक दिशामे सेहो बढ़ल आ समाजसेवा दिस सेहो बढ़ल। कोनो विचार (नव विचार) वा कोनो बेवहार समाजमे अनैसँ पहिने, ओहन काजक विचारो आ बेवहारो जे समाजमे चलि रहल अछि, तेकरो गुण-अवगुण नीक जकाँ आँकि लेब जरूरी अछि, ओना एहनो विचार वा विचारशील काजो अछिए जे आइ धरि समाजमे नइ उतरल अछि, तेकरा नीक जकाँ आँकि लेब नीक होइते अछि...।

यएह सोचि दुनू गोरे विचारलक जे समाजमे अनेको रंगक बन्धन लागल अछिए तँए मात्राक हिसाबसँ आगू बढ़ब नीक हएत। ओना, गाँधी बाबाक नजैर सभ बन्धनपर छेलैन, मुदा सभ बन्धनकेँ एक बेर बदलब घातक सेहो भइये सकैए, तैसंग ईहो तँ भइये सकैए जे कोनो बन्धन जँ ढील भऽ सकैए तँ कोनो बन्धन आरो कट-कटा कऽ बैसिये (बन्हिये) जाइए, जइसँ समाजमे बिखण्डनक अनुकूल परिस्थिति सेहो बनियेँ जाइए। जेकरा सम्हारब कठिन-सँ-कठिनतर भइये जाइए। जखन समाजे बिखण्डनक बाट धऽ लेत तखन तँ अपने मेटाइत रहत। कोनो विचारकेँ बुझैमे जहिना सहजानन्द तीक्ष्ण छल तहिना उग्रानन्द सेहो छले। दुनू गोरे विचारलक जे पहिने सामाजिक बन्धन सभकेँ सूचीबद्ध करब नीक हएत। दुनू सएह केलक।

हजारो समस्याक बन्धनक बीच पड़ल समाजकेँ तीन सूचीमे विभाजित केलक। पहिल- समाजक कुरीति, दोसर- धनक विषमता आ तेसर- छुआ-छुत।

जइ समाजमे अखनो, माने एकैसमी शताब्दी एला पछातियो,

तेतबे नहि तिहत्तैर बर्ख पूर्व देश स्वतंत्र आ अपन संविधान रहनौं, मनुख-मनुखमे एतेक दूरी बनल अछि जे ने एकठाम बैस गप-सप्प कऽ सकै छी, ने एक-दोसरक छुअल पानि पीब सकै छी। तहिना धनोक एते दूरी बनि गेल अछि जे कियो हजारो नोकर सेवामे रखने अछि, तँ कियो मर्द-औरत बच्चा सभ ओकर सेवा करैमे बान्हल अछि। तहिना केकरो बच्चा लाखोक खर्चपर ज्ञानार्जन कऽ रहल अछि, तँ केकरो बच्चाकेँ पेटमे अन्न, देहपर वस्त्र नहि छै, गाममे पढ़ै-लिखैक समुचित साधन नहि छै...। अहिना हजारो समस्या गाम-समाजकेँ तेना पकड़ने अछि, जे देशक स्वतंत्रता खेलौना बनि बैलून जकाँ अकासमे उड़ि रहल अछि मुदा..? की आत्म-हत्या करैत अपन जीवन लीलाकेँ समाजोक आ अपनो समस्या देखि समाप्त कऽ लेब उचित हएत, सेहो तँ नहियेँ हएत। किए तँ धरतीपर जँ मनुखे नहि रहत तखन धरतीक मोले की रहत...।

एकाएक सहजानन्दक मन ठमकल। ठमैकते मनमे विचार उठलै जे जे किछु मनमे उठि रहल अछि ओ बीतल दिनक, माने अतीतक उठि रहल अछि, मुदा लगले फेर उठलै जे किछु एहेन बेवहारो आ विचारो अछिए जेकर आइक परिवेशमे कोनो मोल नहि अछि, मुदा, तँए कि ओहन विचार आ बेवहार जीवित नहि अछि, सेहो नकारल नहियेँ जा सकैए। सेहो जीविते नहि, झमटगर गाछ जकाँ लतरल-चतरल अछिए।

संजोग बनल, तहीकाल ज्ञानानन्द सेहो सहजानन्द ऐठाम पहुँचला। चिन्तित सहजानन्दकेँ देखि ज्ञानानन्द बजला-

“सहज, एना विचलित किए भेल छह?”

अपन विचारपर झाँपन दैत सहजानन्द बाजल-

“काका, बैसारी लोक जकाँ मन वौआ गेल छल, तँए कनी...।”

ओना, ज्ञानानन्दक मनमे अनेको विचार एकाएक जगलैन मुदा मनुखक जीवन तँ एकाकी होइए, तँए एकाकी विचार सेहो अछिए। नीक

हएत जे किए ने सहजानन्देक विचार सुनि विचार करब। बजला-

“सहज, धुनियाँ जकाँ बजारमे बोरा-बोरे रूइया देखि जे अपन धुनकीक अन्दाज करब से उपयुक्त नहि हएत, तँए रेहे-रेहे अपन मनक बात राखह।”

ज्ञानानन्दक विचार सुनि सहजानन्दक मन थोड़ेक हल्लुक भेल। हल्लुक होइते बाजल-

“काका, बच्चेसँ उग्रानन्द संगी छल जे जीवनक करीब चालीस-बियालीस बर्खक उम्र धरि बिसबासू बनल छल। मुदा...! पुरुख-नारीक बीचक संगपन परिवार रूपमे विकसित होइए मुदा पुरुख-पुरुखक बीचेक संगपन ने समाजसँ देश-दुनियाँ धरि..?”

सहजानन्दक विचार सुनि ज्ञानानन्दक विचार ज्ञेय जकाँ बनि दुनियाँ दिस बढ़ए लगलैन मुदा लगले विचार उठलैन जे बच्चेसँ संग रहनिहार उग्रानन्दक बीच सम्बन्धमे की बाधा भेलै, से पहिने जानब नीक हएत। बजला-

“की बजलह जे पुरुख-पुरुखक बीचक..?”

सहजानन्द बाजल-

“काका, अपने तँ अस्सी बर्ख पार कऽ चुकल छी, तँए अपने अस्सीसँ ऊपरे जाड़ो, गरमियो आ बरसातो देखल-बुझल-भोगल अनुभव केनहि छी, केतेको संगी बनलो हेता आ केतेकोक संग छुटलो हएत।”

ज्ञानानन्द-

“हँ, सभकेँ होइ छै, हमरो भेल। अधला विचारसँ जे सम्बन्ध छल, नीक विचार एने ओ छुटि गेल आ नीक विचारसँ सम्बन्ध बनि गेल। अखन ऐसँ बेसी जँ कहए लगबह तँ तोरा दुनू संगीक बीचक घटल जिनगी देखब छुटि जाएत। तँए पहिने तोहीं बाजह जे चालीस-बियालीस बर्खक पछाइत उग्रानन्दसँ सम्बन्ध केहेन छह?”

सहजानन्द-

“काका, समाजमे जेकरा कुरीति मानि गाँधी बाबाक विचारक संग दुनू गोरे पुरैक आगू बढ़ैक (जिनगी बितबैक) संकल्प नेने छेलौं ओ भग्न हेबापर पहुँच गेल अछि। उग्रानन्द जे संगी बनि लगमे चालीस-बियालीस बर्ख धरि छल ओ अखन केते लग अछि आ केते दूर भऽ गेल अछि..!”

सहजानन्दक विचार सुनि ज्ञानानन्दक मन अपन मनन दिस बढ़लैन। मनन करैत बजला-

“बौआ सहज, जीवने तँ ओहन जीवन छी जे जन्म लेला पछाइत जीवन भरि जीवन-ले प्रयासरत रहैए। तँए मनमे जे मलिनता जीवनक प्रति आबि गेल छह ओकरा सुलीनता दिस बढ़ाबह। सुलीनते दिस बढ़लासँ नीक भविसक निर्माण होइए। उग्रानन्द अतीत दिस बहि, परम्परोक पछोर पकैड़ आ समाजक दाबो-चापसँ दबि रहल अछि, मुदा तों से नहि भेलह। दुनियाँमे तोरो रस्ता खुजले छह किने।”

ज्ञानानन्दक विचार सुनि उग्रानन्दक प्रति जे कुविचार सहजानन्दक मनमे उठि चुकल छल, ओ थोड़ेक ढील भेल। ढीलक दोसर कारण ईहो भेल जे अन्हारसँ भरल दुनियाँ, माने कष्टमय दुनियाँ अछिए; तही बीच ने अपन प्रकाशसँ प्रकाशित होइत मुकाबला करैक अछि। मुदा बाजल एतबे- “काका, सएह?”

ज्ञानानन्द काका- “हँ, सएह।”



शब्द संख्या : 2660, तिथि : 31 जनवरी 2020

अपन कर्तव्य आकि उपकार

आने गाम जकाँ समरपुर गाममे सेहो अनेको दूबट्टी, तीनबट्टी आ चौबट्टी सेहो अछिए। से कोनो गामक रस्ते-सड़कटा मे अछि से बात नहि, मालो-जाल आ गाछियो-बिरछीमे सेहो अछि। एक दृष्टिसँ प्रश्न उठौले जा सकैए जे भौगौलिक बनाबटक हिसाबसँ गामक भूमिमे एकबट्टी, दूबट्टी, तीनबट्टी बनब तँ सोभाविक अछि मुदा माल-जाल तँ माल-जाल भेल आ गाछी-बिरछी तँ सहजे गाछीए-बिरछी भेल, जे एको डेग घुसैक-फुसैक नहि सकैए। ओइमे केना एकबट्टी, दूबट्टी आकि तीनबट्टी-चौबट्टी बनत? गामक (धरतीक) मुख्य सड़क (बाध) मे टोले-टपरा वा गलीए-कुच्चीक बाट मिलि एकबट्टी, दूबट्टी बना सकैए। एक दृष्टिसँ माने तात्त्विक दृष्टिसँ एहेन प्रश्न उठौले जा सकैए जे गाछ-बिरीछ जड़ भेल, जे चलि-फिर नहि सकैए मुदा जीवन तत्त्व तँ छइहे। तहिना मालो-जालकेँ अछि मुदा से अछि जड़-मूढ़सँ अधिक। मनुख तँ सहजे मनुखे छी जे तेरहम विद्यासँ लऽ कऽ चौरासी आसनो आ चौंसैठो कलाक मालिक सेहो छीहे।

सागरे जकाँ समर मनुखक जिनगीमे जन्मसँ लऽ कऽ मरैबेर तक लगले रहैए। तेकरे निरमौल ने समाज छी। जइमे गाछ-बिरीछ, खेत-पथार, पोखैर-झाँखैर, नदी-नाला, बान्ह-सड़क, माल-जालसँ लऽ कऽ मनुख धरिक सामुहिक बास बनल अछि। अही बीच ने गाछी-बिरछीमे देखै छी जे अमृतो फल अछि आ काँटोक फड़ अछिए। जँ एहेन दूरी जे अमृतो फल दिअए आ कँटाएलो फड़ दिअए तँ एकबट्टी-दूबट्टीकेँ के कहए

जे तीनबट्टियो-चरिबट्टियो बनियेँ सकैए। तखन तँ सभ देखि-देखि कऽ अपन सीमा बना रस्ता पकैड़ लइतौं। मुदा अमृतो फलमे, जेना आममे, कोनो मीठोमे जहर मीठ होइए तँ कोनो खटहोमे खटहा आ खट्टोमे कोनो खट्टेटा होइए, कोनो चुके खट्टा होइए... ।

एहेन जे गाछी-बिरछीक बोन अछि तइमे जँ अपना चालिये एकबट्टी, दूबट्टी, तीनबट्टी नइ बनए सेहो उचित थोड़े हएत। तहिना माल-जाल (पशु) मे सेहो देखै छी जे कोनो दुधारू अछि जे पेटेटा नहि भरैए बल्कि जीवनक शक्ति सेहो दइए, तँ कोनो एहनो तँ अछिए जे हाथी जकाँ खाइए नमगर-चौड़गर गाछ-बिरीछ आ दइए अमृत भोजनक बदला झुल-झुलौआ सवारी। झुल्ला झुलैत वृन्दावनक कृष्ण जकाँ जमुनामे असनानो करू आ कदमक गाछमे झुलो झुलू। जहिना अमृत भोजन दइबला पशु एक फुच्ची लऽ कऽ बीस किलो, चालिसो किलो माने मन भरि दूध दइबला अछि। तहिना ने सवारियोमे हाथी सन झुल-झुलौआसँ लऽ कऽ सरपट चालिमे दौड़ैबला घोड़ो तँ अछिए। तेकरे ने कहबै सवारीक एकबट्टी, दूबट्टी, तीनबट्टी..! खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतक बात भेल मुदा अखन अपना सभ समरपुर गाममे छी। सड़कपर ठाढ़ भेल एकनाथकेँ देखि मधुसुदन बजला-

“एकनाथ, गाममे अहींटा आजुक परिवेशमे पूज्य पिताक पूजन करैत निमाहि रहल छी..!”

मधुसुदनक आवाज एते जोर रहैन जे लग्गा अढ़ाइयेक दूरीपर ठाढ़ भेल एकनाथो सुनलक आ कट्ठा-दुइये-अढ़ाइयेक बीच जे रहितैथ सेहो सुनितैथ।

पूबसँ आएल टोलक रस्ता, जैठाम मुख्य सड़कमे मिलैत अछि तेकर उत्तर-पूब कोणपर एकटा मसोमातक घर। ओना, ओ परिवारक हिसाबसँ गामक एक परिवार अछि, मुदा चौघाराक जगह एकघारा घरो छै आ आँगनमे दोसर घर वा अँगनाक टाट नइ रहने वेपर्द अँगनो छइ।

मुदा खोपड़ीनुमा घर रहनौं किछु अढ़ तँ करिते अछि। ओही अढ़मे विश्वनाथ काका पहुँच गेल छला। ओना, मधुसुदन विश्वनाथ काकाकेँ नइ देखि एकनाथकेँ छोट भाइक हिसाबसँ खुशीपूर्वक (आनन्द पूर्वक) बाजल छला। अपन कानक सुनल विश्वनाथ काकाकेँ अपन बात, तँए समयपर चुकबकेँ उचित नहि बुझि, तैबीच चारि डेग आगूओ आबि गेला, जे तीनबट्टीक मोड़ छी, बजला-

"अपन कर्तव्य करैए आकि हमर उपकार करैए?"

एकनाथकेँ जे बात मधुसुदन कहने छेलखिन ओ अपन आक्रोश झाड़ैत कहने छेलखिन। गामो तँ गाम छी, जहिना दुनियाँमे काला सागर अछि तहिना लाल सागर सेहो अछिए, तहिना कोनो बेटा पितृपन निमाहैत कर्तव्यकेँ सेवा बुझैत कऽ रहल अछि तँ कोनो एहेन नहि अछि जे सुति-उठि माए-बापक गारिक माला नेने नइ खटखटबैए; सेहो अछिए।

विश्वनाथ कक्काक बात सुनि मधुसुदन सकदम भऽ गेला। जइसँ चुपा-चुपी पसैर गेल। ने विश्वनाथ काका दोहरा कऽ किछु बजला आ ने मधुसुदने किछु बजला। एकनाथ तँ अपना धुनिमे, जे मसोमातक घर देखि अपन विचारकेँ धुनि रहल छल। ऐगला गपक सुन-गुन नहि देखि विश्वनाथ काका अपना काजे आगू बढ़ि गेला।

एकनाथकेँ देखि मधुसुदनक मनमे विचार जगि चुकल छेलैन जे परिवार सेवैमे एकनाथ परबो-पौरुकीसँ बेसी बेवहारिक अछि। तँए असगरे दुनू भैयारी सड़कक कातमे बैस भरि मन गप करब। एकनाथकेँ अही दुआरे मधुसुदन प्रशंसनीय विचारमे टोकने छला। ओना, मधुसुदनकेँ भलेँ प्रशंसनीय लागल होइन, बेवहारिक सत्य सेहो अछि–जे कहीं एकनाथक मनमे जँ कोनो अप्रशंसनीय–माने अप्रसन्न करैबला विचार–मनमे हेबो करतै तँ ओ समगम भइये जाएत। ओना, मधुसुदनक मनमे ई नहि छेलैन जे पराक्रम पबैले परिकर्मा करए पड़ै छइ।

दुनूक मनकेँ–माने मधुसुदनो आ एकनाथोक मनकेँ–बरसैत मेघकेँ जहिना बिजलोका चमका दइए तहिना चमका देने छेलैन।

ओना, एकनाथक मनमे, जखन तीनबट्टी मोड़पर आएल कि तखने मसोमातक–विधवा मसोमात, हँ, ऐठाम एहेन भूल नइ हुअए जे हम गामक अकर्मण्यकेँ विधवा कहैत होइऐ–घर देखि विधवाक विधि-विधानसँ चौंक गेल। आइ ओहन जिनगी जे असगरुआक रहल अछि..!

गाममे रहने एकनाथ ओइ मसोमातक घर सभदिन देखैत आबि रहल अछि, मुदा आजुक नजैरमे ओ विचार जगि चुकल छल जे अखन तक कहियो नहि जागल छेलइ। तैबीच पिता–माने विश्वनाथ काका–आबि दोसरे विचार दुनूक बीच तेना पटैक देलकैन जे अपन मनक विचार दहला गेलैन। जइसँ दुनू दलमलित भऽ गेला। पिताजीक (विश्वनाथ कक्काक) विचार सुनैसँ पहिने, तैबीच मधुसुदनो नहि आएल छला, एकनाथ मसोमातक घर हिया कऽ देखि रहल छल। मठौठपर नजैर पड़िते देखलक जे मठौठक छार उड़ल छै जइसँ बीच घर तेना वेपर्द भेल अछि जे जँ दसोटा पानिक बून पड़त तँ सभटा घरेमे खसत..!

विश्वनाथ काकाकेँ सोझासँ हटिते मधुसुदन नमहर साँस छोड़लैन। नमहर साँस छोड़ैक कारण अपन पितृपनक दोष छैन आकि दोसर विचार छेलैन से मधुसुदने जानैथ; मुदा जे नमहर साँस छोड़ने छला तइमे भयपन जरूर छेलैन। बजला-

“कहाँ किछु बाजल छेलिऐ। एतबे ने बाजल छेलौं जे ‘एकनाथ, गाममे अहींटा, आजुक परिवेशमे पूज्य पिताक सेवा निमाहि रहल छी।”

मधुसुदनक बात सुनि एकनाथक मनमे उठल, जे एकटा मधुसुदने भाय टा गाममे एहेन नहि छैथ जे पिताक कर्मसँ चुकल छैथ, माने बेटा-बेटीक प्रति पिताक कर्तव्य-कर्मसँ निमाहब, एहेन-एहेन जड़भरतसँ समाज भरले अछि। जड़भरत भेला ओ जे जहिना नीक ‘वक्ता’, तहिना

नीक 'मंच सृजनकर्त्ता', मुदा कर्मक्षेत्रमे ओहने जेहने जड़भरत देखैमे हट्टा-कट्टा मुदा कर्मकेँ अकर्म बनाएब व्याकरणमे पढ़ने छला। तँए ने पालकीमे जोतल जड़भरतक सम्बन्धमे राजा रहूगण मुहसँ कहलकैन-

"अहो कष्ट भ्रातर्व्यक्तयुरू... ।"

मधुसुदनक बात सुनि एकनाथक मनमे अनेको विचार उठि ठाढ़ भेल। जहिना धक्का सन धक्का लगिते साइकिल टुटि कऽ छिड़िया जाइए तेना एकनाथकेँ नहि भेल, मुदा एते तँ भेबे कएल जे साए बर्खक मनुखक–माने पूर्ण जिनगीक–प्रश्न तँ रखिये देलखिन। मनकेँ शान्तिसँ निच्चाँ उतारि एकनाथ बाजल-

"भाय साहैब, अपने जेठ भाय रहने पितो तुल्य छी आ गुरु तुल्य अहाँ तँ छीहे... ।"

एकनाथक पेटमे अपन आगूक बात घुरियाइये रहल छल कि तइ बिच्चेमे मधुसुदन दुनू हाथ डोलबैत बजला-

"बौआ, हम किछु ने छी! अनेरे ऐ दुनियाँमे बापक जगह अजबाड़ने छिऐ।"

ओना, मधुसुदनक मनमे ईहो उठैत रहैन जे बेटा-पुतोहुक सभ बेवहार एकनाथक आगूमे बोकैर दिऐ। मुदा अखनो तँ एहेन शर्म (लज्जा) लोकक बीच बनले अछि किने जे पेट गुड़गुड़ाइते मलतियागक रस्ता पकैड़ कनी बगैल जाइए।

मधुसुदनक औगुताइ देखि एकनाथ कृष्णे जकाँ यशोदाक आगू बाल रूप पकैड़ बाजल-

"भाय, जहिया सी किलासमे पढ़ैत रही, तहिया नेंगड़ा गुरुजी माता-पिताकेँ चिट्ठी लिखब सिखौने रहैथ।"

एकनाथक बात सुनि अपनो बेटाक चिट्ठी मधुसुदनकेँ मन पड़लैन। आब कि पोस्टकार्ड रहल, आब तँ ओ मात्र रेडियो स्टेशनमे छोटकी

रुपैआ जकाँ चलैए। वेचाराकेँ ने ओहन देह छै आ ने ओहन दशा छै जे एको-आध डॉलर दाम हेतइ।

'नेंगड़ा गुरुजी' सुनि मधुसुदनक मन चनकलैन। किए तँ मधुसुदनो हुनकासँ पढ़ने छैथ। केतेक सुन्दर परिवार मास्टर साहैब बना लेलैन। दुनू बेटीकेँ मंचपरक कलाकारक ज्ञान दऽ ठाढ़ होइ-जोकर बना लेलैन। दोसर हम छी जे कौआ-कुकुड़...। तिलमिलाइत मधुसुदन बजला-

"से की?"

एकनाथ एकाग्रकेँ धियानमे रखैत बाजल-

"पूज्यनीय माताजी वा पूज्य पिताजी सादर प्रणाम'सँ चिट्ठी लिखब शुरू करै छी किने?"

अपन बड़प्पन देखबैत मधुसुदन बजला-

"बौआ, तोरा लग बजैत कोनो संकोच नइ होइए। तूँ छोट भाए भेलह, भगवान करथुन जे हमरा जकाँ...।"

मधुसुदनक विचार सुनि मिसियो भरि एकनाथक मन नहि हलचलाएल, किए तँ अपन जिनगीक दिशामे अपन कर्म आ अपन आगू डेग बढ़ाएब एकनाथ अङ्गेज चुकल अछि। होइतो अहिना छै जे जाधैर मनुख जिनगीक अपन उदेस निर्धारित करैत अपन दिशा निर्धारित नहि करैत ताधैर बिना आड़ि-मेड़क खेत-पथारक जर-जजात जकाँ दहाइते रहैए। तहिना दहाइत-भँसियाइत मधुसुदन बजला-

"बौआ, नेंगड़ा गुरुजीसँ तँ अपनो पढ़ने छी आ अखनो मन अछि जे चिट्ठीक ऊपरमे लिखबै छेला जे पूज्यनीय माताजी वा पूज्य पिताजी सादर प्रणाम। अपने तँ कहियो पिताजीकेँ चिट्ठी लिखैक अवसरे ने भेटल, किए तँ सभ दिन एकठाम रहलौं, मुदा बेटा-पुतोहु जे परदेशसँ चिट्ठी लिखैए, तेकरा पढ़ि मन मधुर-मधुर भऽ जाइए। मुदा चिट्ठी अन्त होइत-होइत आँखिसँ नोरो झहरए लगैए।"

तीन बेटा मधुसुदनकेँ छैन। जेठका बेटा पुतोहुक संग बंगलोरमे रहै छैन। जखने बंगलोर तखने भंगलोर भेल। से जँ भेल तँ अधले की भेल। जइ नेंगड़ा गुरुजीक चर्च भेल ओ लोअरो प्राइमरीमे आ हाइयो स्कूलक नीक शिक्षक छला। जेहने योग्यता तेहने इमनदारी। बी.ए. ऑनर्स केलाक पछाइत, नोकरीसँ पूर्व लकबाक शिकार भेला, जइमे पएरोसँ नाँगर भऽ गेला आ बोलीक आवाज सेहो अधासँ बेसी सुखि गेलैन, तँए बोली तँ फुटै छेलैन मुदा से सुपुट नइ होइ छेलैन। अधिकांश हाइ स्कूल प्राइवेट छल, माने व्यक्तिविशेषक अधिकारमे। संजोग बनल एकटा हाइ स्कूल बनौनिहार हुनका नाँगर देख, दयासँ द्रवित भऽ गेला। द्रवित होइक कारण भेलैन जे अपनो पारिवारिक लोक छला परिवार केना नीक बनि चलत, से नीक जकाँ बुझैत रहैथ। ओना, खेत-पथार जकाँ परिवारक बीच बटवारा भेने भैयारीमे आड़ि-धूर पड़िते अछि, मुदा परिवारजनमे बुझैक एते अभाव तँ रहिते छैन जे मनुख खेत-पथार नहि छी, चेतनशील मानव छी, तँए मनुख-मनुखक बीच जे सम्बन्ध चेतनशीलतासँ बनैए ओहन एक माइयक ओद्रक सन्तानसँ सेहो कमोबेश बनिते अछि।

अपने–हाइ स्कूल बनौनिहार–घन्टा भरि लगमे बैसा बात-विचार करैत नेंगड़ा गुरुजीकेँ हाइ स्कूलक शिक्षणक भार दऽ देलखिन। आने शिक्षक जकाँ वेतन सेहो तय कऽ देलखिन। संजोग एहेन छेलैन जे बी.ए. पास केलाक पछाइत नीक परिवारमे बिआहो भऽ गेल छेलैन। ओना, समाजमे अखनो गुणशील सुकन्या जरूर छैथ जे इंजीनियरिंग शिक्षा प्राप्त केलाक पछातियो, रूप-सौन्दर्यसँ सजल चेहरा रहितो नाँगर (पएरसँ) लूल्ह (हाथसँ) वर सहर्ष स्वीकार कइये रहल छैथ।

ततमत करैत मधुसुदनकेँ देखि एकनाथ अनुमानि लेलक जे मधुसुदन भाइक कपारपर पुतोहु जरूर खापैड़ फोड़लकैन अछि, तँए अधमरू साँप जकाँ फुफकारितो छैथ आ धड़ खसा पाछुओ घुसकै छैथ। नीक हएत जे अपन माथक मेघडम्बरकेँ कातमे रखि दोसराक मेघडम्बर

ओढ़ि कऽ देखी...। एकनाथ बाजल-

"भाय साहैब, अपने सभ ने गामक कर्ता-धर्ता भेलिऐ, तहूमे भगवान मिथिलावासी बना मिथिलाभूमिमे जन्म देलैन। ओही मिथिलाक गामक सुन्दरता रहल अछि किने जे एकाकी महिलाकेँ ने केतौ डाइन, केतौ वेश्या, केतौ चुड़ैल, केतौ कुल कलंकनी कहि मरल जीवनकेँ आरो लतिया-लतिया मारैए। तइ संग बाल-बच्चाकेँ हिजरा कहि माइयो-बाप सहर्ष मनुखक दाता बनैए। हजारो रंगक रोग शरीरमे होइए जइसँ सन्तान नइ होइए। कहाँ कोनो माता-पिता अपन बेटा-बेटीकेँ गोबरखत्तामे फेक दइए। मुदा...।"

आगूमे जे मसोमातक घर अछि तइ देखि एकनाथ इशारामे बाजल छल मुदा मधुसुदनो तँ जड़भरत छथिए। समुद्रक शिकारी, घरक आँचर-कोनचर सभ बुझनिहार लोक। आगुएसँ लपैक मधुसुदन बजला-

"बौआ एकनाथ! अपनो उमेर साठिसँ ऊपर भऽ गेल, करीब तीस बर्खसँ ऐ वेचारीकेँ देखैत आबि रहल छी। जखन जुआनीक रूपमे छल तखन पतिक मृत्यु भऽ गेलइ। तीनटा सन्तान भेलो पछाइत वेचारीकेँ एकोटा ने बँचल। एहेन उम्रमे लोक दोसरो-तेसरो बिआह करैए, मुदा सावित्री जकाँ वेचारी अड़ि कऽ ठाढ़ भेली जे भगवान जखन मनोरथ उठा लेलैन तखन दोहरा कऽ दोसर बिआह–चुमौन, सम्बन्ध, दोती–नहि करब। आ अखनो धरि समाजमे गृहवासु बनि ठाढ़ छैथ। मुदा...।"

अनायास मधुसुदनक मुहसँ 'मुदा' खसल छेलैन। अनायासक माने ई जे मनसँ जे बात कियो नहि बाजए चाहैए आ जँ कष्टक उदवेगमे बजा जाइए वएह भेल अनायास।

एकनाथ बाजल-

"मधुसुदन भाय, जखन भैयारियोक बीच पारिवारिक कोनो बात छिपा कऽ राखब, तखन भैयारी चलत केतेक दिन। जहिना शरीरसँ

समांग अपन तहिना ने परसँ परिवारो आ सरसँ समाजो अछि। आ जँ से नइ रहत तखन भयक आगमन हेबे करत किने। आ जखने भयक आगमन परिवारमे जन्म लेत तखने दुनियाँ भयभीत बनए लगैए। जखन दुनियेँ भयभीत तखन लोक निर्भिक भऽ जीब केना सकैए..!"

एकनाथक विचार सुनि मधुसुदनक मनमे अपन परिवार जेना समाजमे विलीन हुअ लगलैन तहिना सामाजिक विचार संक्रमित हुअ लगलैन जे निरविचारकेँ रोपि निरविचारी बनबए लगलैन। बजला-

"बौआ! तूँ छोट भाए भेलह, तेहेन झोंटहा घरमे आबि गेल अछि माने पुतोहु, जे टीकेटा नइ उपारलक, मुदा कोनो करम बाँकी नहि रखलक।"

एकनाथ-

"से की, भाय साहैब?"

ओना, एकनाथक मनमे ईहो छेलै जे मधुसुदन भायकेँ बेटासँ ने पुतोहु भेलैन। बीचमे तँ बेटा भेबे केलैन। तैबीच पुतोहु कुदि कऽ टीकासनपर बैस गेलैन; एकनाथक मनमे ईहो विचार घिड़नी जकाँ घड़घड़ा रहल छेलै जे गतिशील जीवनमे समन्वय बहुत महत रखैए। जँ से नहि होइत चलत तँ ओ एक-दोसरमे परिणत केना हएत। जँ परिणते नइ हएत तखन गतिक गतिशीलता की भेल? मुदा ऐठाम–माने मधुसुदन भाय लग–तँ एहेन प्रश्न नहि रहल हेतैन। एक परिवार छिऐन, सबहक एक्के उद्देस हेतैन जे नीक-सँ-नीक परिवार बनए; जइसँ नीक जकाँ जिनगी चलैत चलत। तैबीच एहेन विचार मधुसुदन भायकेँ दाबि रहल छैन..!

मधुसुदन भाय बजला-

"बौआ एकनाथ, छोट-मोट कहा-कही बेटोक सोझामे पुतोहुसँ होइत आबि रहल अछि। कहो-कही केना ने हएत, दू माटि-पानि परहक आदमीक ने मिलान छी। दू माटि-पानि भेल दू गामोक आ दू इलाकोक।

लोकक जिनगी एक माटि-पानिपर अकसरहाँ एकरंगाह होइए। मुदा माटियो-पानिक तँ अपन गुण-धर्म सेहो छइहे। ओना, कहबी छै जे चारि कोसपर पाइन बदलै आठ कोसपर बाइन। मुदा तइसँ भिन्नो अछि, एके गाममे रंग-रंगक बोलियो-चाली, छिच्छो-बिच्छा आ परो-पाबैन अछिए, तैठाम इलाका तँ इलाका भेल।"

ओना, मधुसुदन भाइक बजबाक जे आवेग छेलैन तइसँ एकनाथकेँ बुझि पड़ल जे जँ हूहकारी भरनिहार भेट जाइन तँ एकताले चारि घन्टा धेनहि रहि जेता। मुदा अनेरे लपौड़ीमे समयकेँ पकौड़ी-फुलौड़ी बनाएब नीक नहि। एकनाथ बाजल-

"भाय साहैब, दोख केकर बुझै छिऐ?"

ओना, दोख मानैमे मधुसुदन भाय चुकला। चुकला ई जे मनमे घुरिया गेल छेलैन जे हाथक आँगुर जकाँ ने परिवारो अछि। जहिना पाँचो आँगुर तरहत्थीसँ सटि हाथ बनौने अछि तहिना ने परिवारो छी। तैबीच अहिना ने हएत जे कोनो आँगुर कटने अपने घा..! मधुसुदन भाय परिवारक सभ टुटली मरैया ओढ़ि बजला-

"बौआ, सोल्होअना दोख अपने अछि।"

मधुसुदन भाइक विचार सुनि एकनाथक मनमे उठल जे निष्पक्षतासँ मधुसुदन भाय बजला अछि आकि परिवारक मोहसँ? मुदा लगले एकनाथक मन बदैल आगूक मसोमातक घरक मठौठपर चलि गेल। जे शुरूहेमे उठल छेलइ। एकनाथ बाजल-

"भाय साहैब, ज्ञानक संग विज्ञान जाबे नीक जकाँ परिवारमे नइ औत ताबे कनी-मनी जत्ताक झीक जकाँ झीकम-झीक होइते रहत किने। कोन मोह-मायामे अरवनो पड़ल छी। जिनगीक अपन पूर्ण समर्पण अपना जिनगी-ले अर्पित कऽ लिअ।"

समुद्री जननिहार मधुसुदन भाय छथिए, एकनाथक सभ बात

आगूए-आगू बुझि गेला। हूँहकारी भरैत बजला-

“बेस कहलह। बेस कहलह एकनाथ।”

एकनाथ बाजल-

“भाय साहैब, जहिना ने कियो केकरो पुछि कऽ जन्म लइए आ ने मरै-बेर पुछि कऽ मरैए, तहिना तइ बीचक जे जीवन अछि तहीमे किए केकरो पुछैक कोनो खगता रहत।”

एकनाथक विचार नीक जकाँ मधुसुदन भाय नहि बुझि वौआए गेला। वौआइक कारण भेलैन जे मनमे दुनू दुनियाँ नाचि उठलैन। दुनू दुनियाँ भेल जीवित दुनियाँ, जइमे छी आ जखन ऐठामसँ मरि कऽ चलि जाएब तखन स्वर्ग-नरकक दुनियाँमे बास हएत। तैबीच तँ लोके-लोकक बीच रहबे करब। अपनाकेँ जोड़ैत-तोड़ैत मधुसुदन भाय बजला-

“बौआ एक, जेना पिताक मर्म विश्वनाथ काका बुझि रहला अछि, तेना नइ बुझि पेलौं। तेकरे फलाफल..!” ‘फलाफल’ कहि मधुसुदन भाय रूकि गेला।

मधुसुदन भायकेँ रूकैत देखि एकनाथ बाजल-

“भाय साहैब, बुड़हा–पिता, विश्वनाथ–केँ घुमैक समय भऽ गेलैन। तँए अखन दोसर काज दिस जाए दिअ। गप-सप्प केतौ पड़ाएल जाइए। निचेनमे निचेनसँ सभ गप करब।”



शब्द संख्या : 2410, तिथि : 05 फरवरी 2020

जिनगी भौर भेलह हेन

ऐबेर शीतलहरी अदहे अगहनसँ आबि गेल। ओना जाड़क समयमे अबैए तँए अन्होनी नहियेँ भेल, मुदा एते तँ अन्होनी भेबे कएल जे कातिक-अगहन–नवम्बर-दिसम्बर–मे जाड़ शीतपनक अवस्थामे रहैए आ पूस-माघमे शीतपनसँ ओसपन होइत पालपन अवस्थामे पहुँच जाइए। अदहा अगहनसँ अदहा पूस धरि घरमे (परिवारमे) जे सुखल गोरहा-गोइठा आ आन-आन जे जारैन-काठी छल, खर्च बढ़ने (जारैनिक खर्च) सठि गेल। कोढ़ियो-कबारकेँ जाबे पेटमे बुतात (भोजन) भेटैत रहैए ताबैये तक ने ओकरो कोढ़िपन सिरचढ़ रहै छै, मुदा जखन से भेटब बन्न भऽ जाइ छै तखन पेटक बिलाइ अनेरे ने सिरचढ़ भऽ किछु–उपार्जन–करैले दुआरि-धुरखुड़ चोंगरबैए। तहिना अपनो भेल, एक-आध बेर तँ चुल्हियोक पाछू–माने भानस होइकाल–आगि तापि पार लगा लेब मुदा अपनो मन तँ दुतकारबे करत किने जे जँ कियो टोलेक, गामेक वा आने गामक एहेन समयमे घूरक ओरियान नइ देखता तँ कहबे करता ने रड़हा-मसोमात परिवार छी। भाय, जेकरा छै ओ ने हाथी-घोड़ा लुटबैए मुदा जेकरा से नइ छै ओ तँ जाड़क मासमे घूर, गरमी मासमे पनिसल्ला आ बरसातमे मेघडम्बरेसँ ने अपन कर्मकेँ धर्मक रूपमे लुटबैए...।

यएह सभ विचार मनमे रमरमाउ कइये रहल छल कि विचार फुटल। विचार ई फुटल जे अखन तक सुखल जारैन छल तँ घर सम्हारि लेलौं, मुदा ओ तँ सठि गेल; आब की करब..!

जहिना दस-पाँच गोरेक बीच कोनो काज वा कोनो विचारक

घघौंज होइए तहिना अपनो मनमे हुअ लगल। थोड़ेकाल घघौंज भेला पछाइत अपनेमे सभ एकमत होइत निर्णय केलक जे घूर तँ साधारण घूर भेल, जे मुइल मुरदाकेँ सेहो भरि छाती ऊँच काँचे जारैनसँ जरौल जाइए। तखन काँच जारैनसँ घूर किए ने पार लागत। कनी-मनी दहीक जोरन जकाँ सुखल जारैनसँ अछियामे जहिना पजार पड़ै छै तहिना कनी-मनी सुखलसँ काज चलि सकैए। आमक गाछ अपना अछिए, ओइमे सँ एकटा डारि काटि नेने शीतलहरी पार भइये जाएब। पजार दइले सेहो ओइमे सुखल-ठौहरी सभ हेबे करत, ओहीसँ पजारक काज सेहो भइये जाएत। काजक सूत्र भेटने जहिना कर्ताक मन खुशी होइए तहिना अपनो भेल। एकाएक अन्हराएल समैयक इजोत भेटल। इजोत भेटते मन फुटि पड़ल-

"चलू संगी ओइठाँ, जेतए भेटत ब्रजराज

दूध बेचैत कृष्ण भेँट, एक संग दू काज।"

शीतलहरी रहितो मन फुरफुराएल। अधलौठा कुरहैर लेलौं आ जारैनिक भाँजमे विदा भेलौं। अहाँ कहब जे एहेन समयमे लोक एहेन काज केना कऽ पौत! किए तँ एक दिस जाड़सँ ठिठुरल देह, तैपर ओससँ नहाएल गाछ जैपर चढ़ि डारि केना काटब..?

ठीके बात अछि, मुदा पेटक कुलकुली जखन कुत्तोकेँ कुलकुला दइए तखन मनुख तँ सहजे कर्त्ताक संग कर्मकारो छीहे। भाय, कहलो गेल छै ने जे 'मरता की नइ करता।' ओहुना शीतलहरीक ठिठुरनसँ मरबेक अछि तखन किए ने अपन रछपनक जोगार करी।

गाछी पहुँच सोझे गाछपर चढ़ि एकटा डारि काटए लगलौं। करीब दस छअ कुरहैर चलौने हएब कि राधारमण काकाकेँ देखलयैन जे चद्दैर ओढ़ि कन्हामे झोरा टँगने दच्छिनसँ आबि रहला अछि।

राधारमण काकाकेँ अबैत देखि मनमे उठल जे निच्चाँ उतैर तमाकुलक बहन्ने काकाकेँ रोकि, हुनको कुशल-छेम बुझि लेब आ अपनो

विचार पुछि लेबैन। केतए-सँ आबि रहल छैथ केतए-सँ नहि; सेहो गप-सप्पक क्रममे बुझि लेब।

जाबे गर अँटा गाछपर सँ उतैरक विचार कइये रहल छेलौं कि ताबे राधारमण काका गाछ लग पहुँच बजला-

“जिनगी भौर भेलह हेन..!”

हमहूँ किछु नहि बाजि चुपे-चाप गाछपर सँ उतैर कहलयैन-

“काका, पहिने अ-न-न-न.., तखन ने त-न-न-न..! दुनू बापूत पहिने तमाकू खा लिअ पछाइत दुनियाँकेँ देखल जेतइ। ने दुनियाँ केतौ पड़ाएल जाइए आ ने अपने सभ केतौ पड़ाएल जाइ छी जे कोनो औगुताइ रहत।”

हमर बात राधारमण काकाकेँ नीक लगलैन आकि अधला से तँ ओ जानैथ, मुदा उतारा किछु ने देलैन। तरहत्थीक तमाकुलमे पहिल झाड़ ओहिना देलौं जेना धान दौन करैकाल खोहमे पहिल झाड़ पड़ैए; दौनाएल धान निच्चाँमे (जमीनपर) पहुँच जहिना अपन गर पकैड़ लइए, तहिना तमाकुलक झाड़सँ जे तमाकुलक नशाएल रस उड़ल ओ दुनू गोरेक नाकमे सुरसुरा कऽ पैस गेल जइसँ जड़ाएल-जबदाएल मन कनी हल्लुक भेल। मन हल्लुक होइते बजलौं-

“काका, हम तँ जाड़क मारल छी तँए जी-जान अरोपि जारैनिक ओरियानमे एलौं हेन आ अहाँ केतए-सँ कनहामे झोरा-झपटा टँगने आबि रहल छी?”

जेना सोगाएल पीड़ाएल लोक अपन मनक बात केकरो कहि अपन सोग-पीड़ाकेँ बाजि-बाजि जेतेक कम करैए तेतेक ओ कम होइत-होइत विलीन भऽ जाइए आ विलीनक पछाइत जे नव सिरासँ वएह वृत्ति जँ आगू अबैए तखन नव सिरासँ सिर्जमान होइते अछि, तहिना राधारमण काकाकेँ भेलैन। बजला- “बौआ हरदेव, पहिले-पहिल गामक तोहीं भेँट

भेलह; तँए सभसँ पहिने तोरे कहै छिअ। झूठ बाजब पापे नहि महापाप छी, तँए जे कहै छिअ ओ सत-सत कहै छिअ। एकटा लपोड़ीमे पड़ि वौआइ छी।”

राधारमण काकासँ जे बात करैक विचार मनमे छल ओ तर पड़ि गेल आ कक्काक लपौड़ी ऊपर चलि आएल.! ऊपर अबिते मुहसँ निकैल गेल- “की लपौड़ीमे पड़ि गेल छी काका?”

हमरा बातसँ जेना राधारमण काकाकेँ सतरंजक गोटी जकाँ सह भेटल होनि तहिना बजला-

“बौआ, के कहाँ अनेरे किछु बाजि देलक अछि आ नाओं हमर लगा देलक, सएह पुर्वाशय करए गेल छेलौं। जँ सेहो भऽ जाइत तँ बुझितिऐ जे जिनगीक एक घाटसँ छुटकारा भेटल मुदा सेहो ने भेल आ कठुआएल गामपर जाइ छी।”

ओना, राधारमण काका गाम-समाजक बेपछ लोक छैथ, सदिकाल बजैत रहै छैथ जे साँझ-सँ-भोर आ भोर-सँ-साँझ धरि अपना मने चलनिहारे ने ऐ दुनियाँमे स्वतंत्र रूपेँ चलैत-चलैत टपैए। सएह छैथ राधारमण काका। करवन ‘बाबा’ बनि बबाजी रूप धारण करै छैथ, करवन ‘काका’ बनि कँखिया लइ छैथ आ करवन ‘संगी’ बनि बिआहक लोकनियाँ पूरि लइ छैथ से पकड़ब कठिन अछिए। स्पष्ट विचार छैन जे स्कूलक जे शिक्षक छैथ, ओ पढ़बै समय शिक्षक छैथ, पछाइत की छैथ से समय आ परिस्थितिपर निर्भर करैए, मुदा एते तँ निर्विवाद अछिए जे मूल रूपमे शिक्षार्थीक अभिभावक छैथ। खाएर जे छैथ, मुदा राधारमण कक्काक संग अपनो सम्बन्ध तेहने अछि जे बिआहक कोहवरसँ लऽ कऽ देशभक्ति धरिक गपो-सप्प आ जीवनो बना चलिये रहल छी। जखने भक्ति तखने ने भक्त, आ जखने भक्त तखने ने अभक्त। यएह तँ भेल देशभक्त जेकर वृत्ति दसमुहाँ होइते अछि...।

बजलौं- “फेर दोहरा कऽ अहिना ने ते शीतलहरीक फेड़मे पड़ब?”

राधारमण काका निरविचार लोक रहने निरविकार सेहो छैथ जइसँ निर्भीक होइत बजला-

“घरसँ जखन विदा भेलौं तखनसँ लऽ कऽ आ अखैन तक जेतेक लोक भेटला सभकेँ अपन बात कहि सुनौलयैन जे आनक झूठ हमरा सिर चढ़ल अछि। आब जिनका पुर्वाशय करैक होनि ओ हमरा समाजमे आबि कऽ करैथ।”

राधारमण कक्काक यात्राक प्रसंग समाप्ते जकाँ बुझि पड़ल, ताबे तमाकुल सेहो रंगर बनि गेल। श्रेष्ठजनक पनचैती जकाँ तरहत्थी आगूमे बढ़ेलौं, माने तमाकुल सहित, कि हिया कऽ देखि राधारमण काका बजला-

“बौआ, केते दिनसँ तमाकुल खाइ छह?”

राधारमण कक्काक बात सुनि मन औना गेल। औना ई गेल जे कहीं ‘तम’ सँ ने तँ ‘तमाकुल’ बुझि बजला अछि..! मुदा फेर लगले भेल जे एहनो तँ सम्भव अछिए जे नव खेनिहारक जूम छोट होइए आ पुरान खेनिहारक नमहर तइ खियालसँ ने बजला हेन? ओना, ईहो बुझिये पड़ल जे राधारमण काका रसभर लोक छथिए। सभ वस्तु आ विचारमे अपन रस भरिये दइ छैथ। कहलयैन-

“काका, एते दिन तँ चोराइये-नुका कऽ तमाकू खाइ छेलौं मुदा साल भरिसँ अहूँ सोझहामे खाइये रहल छी।”

राधारमण काका बजला-

“एना जे रसभरी जकाँ रस चोरा कऽ पेटेमे रखि बजबह तखन तोहर थाह भगवानो बुझि पौथुन। कहलो गेल छै ने ‘डुमि कऽ पानि पीबी तँ एकादशीक बापो ने बुझत।”

राधारमण कक्काक चटियाएल बात सुनि अपने पटियाएल मने

बजलौं- “काका, जहिये बिआह भेल तहियेसँ तमाकू खाइ छी। तमाकुलक तेहेन चहैट सासुरमे धेलक जे जनम भरिले सिखा देलक।”

राधारमण कक्काक मधुआएल विचारमे अपने तेना मधुवन भऽ गेलौं जे सासुर दिस मोहिया गेलौं। मुदा लगले मन सुतीक्ष्ण ऋषि दिस दौड़ गेल। सुतीक्ष्ण ऋषि दिस नजैर दौड़ते मन पड़ल जे राधारमण काका अबिते-अबिते की कहलैन आ अपने कोन मौगियाही मर्दनमे लगि गेल छी..! ओना, भीतरे-भीतर मन दुतकारबो करए जे राधारमण काका सन लोकक समय हम पानिमे फेक रहल छी।

जहिना महाभारतक कृष्ण अपन सातो घोड़ाक लगामकेँ एक्केबेर तनलैन तहिना अपनो अपन मनक घोड़ाक लगाम तनैत बजैक विचार केलौं। समय आगू बढ़ने शान्त भइये गेल अछि। किए तँ जेना राधारमण काका अबिते-अबिते बजला जे ‘जिनगी भौर भेलह हेन’, तेना जँ जानक नाओं नेने रहितैथ जे ‘जान भौर भेलह हेन’, तखन तँ बेकतीगत अपन होइत; किए तँ जान अपन-अपन सभकेँ होइए मुदा जीवन तँ से नहि छी। ओ गाछ नहि गाछी छी। ओना, गाछेक समूह गाछी सेहो होइए मुदा एकटा गाछ तँ गाछी नहियेँ होइए। तइले तँ समूहक बेगरता होइते छइ। तँए जान आ जीवनमे एतेक तँ दूरी अछिए जइसँ एक जीवन अनेकोक जीवन भऽ सकैए आ अनेको जीवन एकक भऽ सकैए।

शान्त वातावरणक लाभ उठबए चाहलौं। अशान्त वातावरण नहि सिरैज, ओ तखन सिरजाइत, जखन जहिना राधारमण काका अबिते-अबिते बजला जे ‘जीवन भौर भेलह हेन’, आ लगले सूरे किछु प्रत्युत्तर दऽ दैतिऐन तखन एहनो तँ सम्भव भइये सकै छल जे हुनका अधलो लगि सकै छेलैन जइसँ अशान्तक वातावरण तैयार हुअ लगैत... ।

अपने अही गुन-धुनमे पड़ल रही। तैबीच तमाकुल जहिना अपन रंग चढ़ौलक तहिना राधारमण काकाकेँ सेहो चढ़ा देलकैन जइसँ जहिना अपने बजैले मन लुसफुसाए लगल, तहिना राधरमण काकाकेँ सेहो

भेलैन। ओना, अपना मनमे अपन विचार खुलासा करैपर छल आ राधारमण कक्काक मन शीतलहरीमे गाछपर चढ़ल डारि काटैपर लटकल छेलैन...।

बजला- "एना जे कालिदास जकाँ अपसियाँत होइ-ले एलह हेन, से किए?"

महाकवि कालिदासक विषयमे बेसी काल राधारमण काका चर्च करै छैथ मुदा कालिदाससँ अपना कोन मतलब अछि; अनेरे किनको देश-दुनियाँमे नै वौआइ। अपने देश-दुनियाँ तेतेटा अछि जे एक जिनगीकेँ के कहए जे सातो जिनगी भागिरथ जकाँ धरतीपर गंगा उतारए चाहब तैयो ने उतरत। किसान छी, किसानी देश आ किसानी दुनियाँ अछि। ऐठामक किसानी-दुनियाँक दृश्य देखबैत तुलसी बाबा कहनहि छथिन किने जे 'खेत ने किसानकेँ, बेपारीकेँ ने बेपार, चाकरकेँ ने चाकरी, भिखारीकेँ ने भीख, जीविका विहीन सभ, पूछे एक-दोसरकेँ, केतए जा की करी।' सएह अछि अपन देश आ अपन दुनियाँ; मुदा अखन जहिना अपन जीवन-ले जारैनिक ओरियान करैले एलौं हेन तहिना राधारमण काका सेहो अपना पुर्वाशयेक काजे–माने अपन देश-दुनियाँक काजे–घुमल आबि रहला अछि, तँए बाट चढ़ल बटोहिये जकाँ ने दुनू गोरे भेलौं। बटोहीकेँ कि कोनो आड़ि-मेड़ होइए; जेमहर मन भेल तेमहर गेलौं आ जे मनमे आएल से बजलौं..!

मन मानि गेल जे अखन अपन विचार रखैक अनुकूल समय आबि गेल अछि। कहलयैन-

"काका, हम तँ शीतलहरीक चोटसँ चोटाए डारि काटए एलौं हेन, कालिदासकेँ कोन बिपैत पड़ि गेलैन जे डारि काटए गेला?"

अपने ई सोचि बाजल रही जँ एक्के बिपैतमे जँ दुनू गोरे पड़ल होइ तँ एते लाभ हेबे करत किने जे ओ–कालिदास–पहिने भेला तँए हुनकर जे अनुभव छैन तेकरे देखौंस करैत अपन चोट शान्त कऽ लेब। मुदा

राधारमण काका ठहाका तँ नहि, मुदा मुस्की दैत जरूर बिहुसए लगला। बिहुसैत विचारकेँ छिड़ियबैत बजला- “हरदेव, बिआहक पछातिये ने केकरो माया-जालक उत्तरी पड़ैए, तँए पहिने कालिदासक बिआह केना भेलैन से बुझल छह?”

अपन विचार मनसँ ससैर राधारमण कक्काक विचारमे बहैत बजा गेल- “नइ।”

हँसैत राधारमण काका बजला-

“ओंगरी देखौवैलसँ भेलैन।”

राधारमण कक्काक विचार बुझबे ने केलौं। पुछलयैन-

“की ओंगरी देखौवैल भेल?”

राधारमण काका बजला-

“एक तँ दू।”

ओना, राधारमण कक्काक सभ बात नइ बुझि पेब रहल छेलौं, मुदा गोटे-गोटे जे बात बुझैमे आबि जाए तँ तेते मन खुशी भऽ जाए जे हुअए जे सातो दिन तक जँ एहेन चोटगर विचार भेटैत रहत तँ भूख-पियास सभ हेरा जाएत। ओना, शीतलहरीक कनकनी देहकेँ कनैबते अछि, मुदा मनकेँ तेकर मिसियो भरि धैन कहाँ बुझि पड़ि रहल अछि..! खुशीसँ बजा गेल- “काका, समयकेँ देखैत ने लोक किछु बजबो करैए आ करबो करैए, मुदा कुसमय भेने तँ सभ किछु मरियाइये लगैए। जँ दरबज्जापर आगिक ताव–माने घूर–लग बैस गप-सप्प होइत तखन जेते मनगर होइत तेते ऐठाम-गाछीमे थोड़े हएत, तँए...।”

‘तँए’ सुनि आकि अपन विचारमे दोसर मोड़ राधारमण काकाकेँ एलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा विचारकेँ आगू बढ़बैत बजला- “बौआ हरदेव, तुलसीदास कहने छैथ ‘हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता।”

‘हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता’क माने तँ नहि बुझलौं, मुदा एते तँ

बुझबे केलौं जे कालिदासक डारिसँ कुदि काका तुलसी दासक डारि पकैड़ लेलैन। बजलौं- "काका, कालिदासक बिसरजन कऽ देलिऐन?"

राधारमण काकाकेँ जेना कालिदास रग-रगमे समाएल रहैन, भलेँ आइक परिवेशमे लोक कालिदासक नामे टा किए ने बुझैत होइथ, तहिना मुस्कुरेला। राधारमण कक्काक मुस्की देखि बुझि पड़ल जे अकास बरिसैले तरतराइए तँए अपनाकेँ एकाग्र भऽ चित्तकेँ शान्त केलौं। बजला-

"बौआ हर, कालिदास संस्कृत भाषाक अन्तिम सीमा छुबि सीमापर ठाढ़ भऽ गेल छैथ।"

राधारमण कक्काक विचार सोलहन्नी नइ बुझलौं। जँ एको-आधो पाइ बुझितौं तखन ने ओकरा पूरक बना प्रश्न उठैबतौं, से तँ बुझबे ने केलौं। मुदा मनमे एते तँ जिज्ञासा जगिये गेल जे जइ सीमापर सँ विद्यापति जहिना रस्ता काटि जनभाषा–मैथिली–मे कुदलैथ तहिना कालिदास वैदिक भाषाकेँ मासक बीच–आम जनगणक बीच–समास शैलीमे अलंकारक झड़ी लगा चोटीपर पहुँचा देलखिन, जइसँ भाषा ह्रासोन्मुख भेल। बजलौं-

"काका, अहूँ भौर परगनियाँक जन-जाति जकाँ तेहेन अलंकार झाड़ै छी जे फूल तर पइड़ जाइए आ फुलडाली ऊपर चढ़ि अबैए।"

हम कोन मने कहलयैन आ राधारमण काका कोन काने सुनलैन से तँ अखनो धरि नइ बुझि पेलौं अछि मुदा गम्भीर मुस्कान भरैत काका आगू बजला-

"बौआ! जइ समय कालिदास भेला ओइ समयमे जनभाषा, जन-गणक भाषा साहित्यिक भाषासँ कोसो दूर छल। समाजक बीच किछु गनल-चुनल जननिहारो आ अपन समाजक (ऐठाम समाजक माने पढ़ल-लिखल समाजक अछि) बीच बजनिहारो छेला। जनगणक भाषाकेँ अपनाए बुद्धदेवो आ महावीरो जैन समूहक बीच आबि चुकल छला, माने

जनगणक भाषा पाली बोलीक रूपमे छल। पाली बोली भेल संस्कृत भाषाक टुटल रूप।”

कहि राधारमण काका चुप भऽ गेला। अपना बुझि पड़ल जे भरिसक काका किछु बिसैर गेल छैथ, सएह मन पाड़ि रहला अछि। मुदा सोल्होअना चुप भऽ गेला। थोड़ेकाल माने विषयानुसार जेते प्रतीक्षाक घड़ी होइए तेते समय जखन राधारमण कक्काक बीत गेलैन तखन अनठेकानीए बजलौं-

“काका, जे बात बिसैर गेलौं तेकरा अखन छोड़ि दियौ। जएह मोन पड़ैए सएह कहियौ।”

राधारमण काका बजला-

“बौआ! बिसरब कथी, सभटा मोने अछि। तोहीं कहऽ जे अपार जनसमूह जे गुलामीक सिक्कड़मे बन्हाएलो छल आ नव-नव ढंगसँ बन्हाइतो छल तेकरा कालिदास सन दूर दृष्टि रखनिहार केतेक देखि पौलैन?”

शीतलहरीक प्रभावसँ देह सिरसिराइये रहल छल मुदा राधारमण कक्काक विचारसँ मनमे थोड़ेक गरमी आबए लगल। अपने किछु छी तँ राधारमण काकासँ जुआन छीहे, जखन ओ शीतलहरीकेँ मिसियो भरि नहि गुदाइन रहला अछि तखन अपने किए गुदानब। भेल तँ जाड़क मास, जेकर भयंकर आक्रमण सभ किछुपर पड़बे करैए, तेकर निराकरण तँ अपने ने करए पड़त। जेतेक जीव-जन्तु, गाछ-बिरीछ अछि ओ शीतलहरीसँ प्रभावित होइतो अपन रक्षार्थ किछु-ने-किछु तँ करिते अछि। ई दीगर जे कोनो जीव माटिक सोन्हि बना तँ कोनो गाछमे भूर बना अपन जीवन-यापन करैए। मुदा मनुख तँ से नहि छी, ओ तँ चौंसैठो कला आ चौरासियो आसन जननिहार तँ छीहे।

ओना ‘दूरदृष्टि’, ‘अन्तरदृष्टि’ इत्यादि शब्द सभ कहियो काल कोनो-कोनो किताबमे जरूर पढ़ै छी मुदा विषयपर (कथापर) नजैर रहने शब्द

सभ ओहिना रहि जाइए जइसँ ओकर (शब्दक) आत्म तत्त्व बुझिये ने पेब रहल छी। बजलौं-

"काका, केहेन दूरदृष्टि छेलैन कालिदासकेँ जे नहि देखि पौलैन?"

कालिदासपर सँ राधारमण कक्काक मन जेना उचैट गेलैन तहिना बजला-

"बौआ, एहेन शीतलहरीक समयमे, 'मेघदूत'क चर्च अनेरे किए करब। अखन तँ शीतदूतक ने खगता अछि तँए..?"

अपनो देह ठंढसँ कठुआइये रहल छल तेकरे बँचाव-ले ने, माने आगिक ओरियान-ले जइ आशासँ जारैन काटए आएल छेलौं सेहो ने भऽ रहल अछि। बजलौं-

"काका! एहने दिन एलापर, माने सघन शीतलहरी भेलापर ने दीनक कोन बात जे दीनानाथो हारिये मानि लेता?"

अपन पेटक सभ बात ऊपरो ने आएल छल कि बिच्चेमे राधारमण काका बजला-

"बौआ, जहिना जिनगी बर्खमे बन्हाएल अछि, बर्ख मासमे बँटाएल अछि, मास मौसमसँ बँटा तीन टुकड़ी भऽ एक-दोसरसँ उठा-पटक करैत हारैत-जीतैत अपन अस्तित्व तँ बँचैबते अछि। तही बीच ने सभ जीवो-जन्तु आ मनुखो अपन अस्तित्व बँचबैत जिनगीक धार पार करैए।"

ओना, राधारमण काका जइ हिसाबे कहि कऽ बुझबए चाहै छला तइ हिसाबे नीक जकाँ अपने नहि बुझि पेलौं, मुदा जे कहलैन आ जे भोगि रहल छी से तँ बुझिये रहल छेलौं। तैबीच गप-सप्पसँ मनो अक्कछाए लगल। अकछाइक कारण पेटक जे बात छल ओ निकलैले औगुताए लगल आकि शीतलहरीक जे आक्रमण अछि ओ औगुतेलक से नहि बुझि पेब रहल छेलौं, मुदा अबिते-अबिते जे राधारमण काका बाजल छला-

'जिनगी भौर भेलह हेन' से जँ बुझि नहि लेब आ धपचोटेमे केतौ मोनिमे डुमि जाएब सेहो नीक थोड़े हएत। बजलौं- "काका, अहूँक मन खटाएल अछि माने पुर्वाशय नहि भेने, आ अपनो मनकेँ जाड़ खटरस बनाइये रहल अछि, तँए जिनगी भौर भेलह हेन' से कनी बुझा दिअ।"

वक्ताक मनमे जहिना कोनो विचार रखैक जिज्ञासा रहैए आ ओहने विचार बुझैक आग्रह जँ सुननिहार दिससँ होइए, तखन वक्ताक मनमे जेहेन खुशीक लहैर दौड़ जाइए तहिना राधारमण काकाकेँ सेहो भेलैन। मुस्कुराइत बजला-

"बौआ हर, जिनगीक भौर हेबाक दू जगह अछि। माने दू स्थानपर 'भौर' शब्दक प्रयोग होइए। ओना, चिड़ै-चुनमुनीक बीच 'चकभौर' सेहो होइए मुदा से अखन नहि।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"हँ-हँ, चिड़ै-चुनमुनीकेँ तँ एहेन शीतलहरीमे मरैक अपने ढबाहि लगल अछि तैठाम जँ ओकरा गनए लगब से पार लगत। ओकरा छोड़ि दियौ।"

राधारमण काका गम्भीर होइत बजला- "बौआ, 'भौर' शब्दक प्रयोग जिनगीक दू छोरपर होइए, एक होइए जन्मभूमिपर आ दोसर होइए मृत्युभूमिपर।"

ओना, जइ हिसाबे राधारमण काका बाजि रहल छला तइ हिसाबे अपने नहि बुझि पेब रहल छेलौं, मुदा बीचमे वक्ताकेँ टोकलोसँ विषय हेरेबाक सम्भावना सेहो रहिते अछि मुदा तैयो मुँह दाबि बजलौं-

"से केना काका?"

राधारमण काका बजला-

"पहिने ई बुझि लाए जे 'भौर' शब्दक प्रयोग जान-ले सेहो होइए, जीवन-ले सेहो, आ जहान-ले सेहो होइए। मुदा से सभ अखन नहि।

अखन एतबे जे बाँसक बीटमे, जइ बाँसक जन्म हाल-सालमे भेल रहल ओकरा भौर परक बाँस कहल जाइए, जे वंशक नव पीढ़ी भेल। वंशमे, माने बाँसक बीटमे पुरान बाँस–पहिलुका बाँस–सुखबो कएल आ पाकियो गेले अछि। दोसर भेल, जखन कोनो मारूख जगहपर पहुँच ओहन कृत्ति करैए जइसँ ओकर मृत्युक सम्भावना बनैए, ओहूठाम 'भौर' शब्दक प्रयोग होइए।"

एकाएक जेना भक्क टुटि गेल तहिना भेल।



शब्द संख्या : 2789, तिथि : 10 फरवरी 2020

वसन्त पंचमी

आइ वसन्त पंचमी छी से कियो कोनो काने-कान बुझि रहला अछि एहेन बात नहि, चारि बजे भोरेसँ बाजा-गाजाक धुम-धड़क्का गाममे अनधोल केने अछि। जे ओछाइनपर पड़ल झरक सपना देखि रहल छैथ ओ सपनौती नीनमे देखि-सुनि रहला अछि तँ जोगी-जती अपन जोग-क्रियामे देखि-सुनि बुझि रहला अछि। ओना आइ वसन्त पंचमीए-टा नहि छी, सरस्वती पूजाक संग कृषि कार्यक आराध्य पूजा सेहो छी। ओना, कृषिक जे पहिलुका रूप छल तइमे थोड़-थाड़ परिवर्त्तन सेहो भेबे कएल अछि। पहिने जेना जनकजी अढ़ाइ मोड़ परती जमीनपर हर जोतलैन तेना आब नहियेँ अछि। आब ओहन किसान थोड़े रहला जे कहबो करैथ आ करबो करैथ। गहुमक बीआ बाउग करैबला खेतकेँ ओतेक जोतै छला, माने तैयार करै छला जे माटि बाउल बनि जाइत छल। पछाइत बीज दान करै छला। तैसंग कहबो करैथ जे छाती भरि ऊँचसँ जँ माटिक तौला खसने नहि फुटए तखन बुझू जे जौ-गहुमक बीआ दइ-जोकर खेत भेल। ओना दस दुआरिक दुर्गापूजा जे सालमे मौसमक हिसाबे चारि खेप होइए, चारू मौसममे शुद्ध माटिक बदला दोरस-बहुआह माटिमे बीज दान कए जयन्तीसँ भगवतीक आराधना करैत लोक अपनो माथक टीकमे बान्हि आराधना करिते छैथ, मुदा आब तँ टीके नहि रहल तखन कियो बन्हता केतए। ट्रैक्टरक जुग एने एते तँ जौ-गहुमक खेतक जोत असान भइये गेल अछि जे खेत जोतैक खगते नहि रहल, फाढ़सँ सिरौर खींच

बीआ छीटने सेहो उपज हुअ लगल अछि।

आइ वसन्त पंचमी छी से मनौआ तिथि छी कि बनौआ से बुझिये ने पेब रहलौ हेन मुदा एते तँ बुझिये रहल छी जे माघ मासक बीसम आ इजोरिया परवक पाँचम दिन छी, माने शुक्ल पक्षक पंचमी। आइसँ दस दिनक पछाइत पूर्णिमा हएत जइ दिन मास पूरि अन्त हएत। खाएर जे छी, जे हएत ओ तँ मनुख निर्धारित नियम छी, प्रकृति निर्धारित नहियेँ छी। प्रकृति निर्धारित एतबे छी जे कृष्ण पक्षक घटन आ शुक्ल पक्षक बढ़न दिनो-दिन हेबे करत। हँ, नियति आ मनुख निर्धारितकेँ नियमक रूपमे देखि सकै छी। नियति प्रवल अछि, ओइमे अपवाद आ तर्क नहि अछि, मुदा नियम जे मनुख निर्धारित अछि तइमे दुनू अछि। ओना, आइ वसन्तक आगमनक अमूल्य दिन छीहे। आइये खेतक पूजा सेहो हएत आ सरस्वती पूजा–माने ज्ञानक पूजा सेहो हएत। तही बीच मनुख अपन जीवन पथक पूजा सेहो करबे करता। खेत पूजा तँ खेतमे होएत, मुदा सरस्वती पूजा भवनक भीतर।

गाममे नहि रही, काल्हि साँझमे जखन गाम पहुँचलौं कि मैझला भातीज कहलक-

“काका, सुनीति बाबा बाइत गेला हेन..!”

ओना, भातीज ने सोल्होअना बच्चे अछि आ ने सियाने, मुदा मुँह ने ओकर छी आ जँ विचार आनक रहल होइ तखन सियान-बच्चाक कोन प्रश्न अछि। मुदा एते तँ मनमे ठहैकिये गेल जे सुनीति काका सन शान्त-प्रशान्त-गहींर लोक केना बाइत गेला..! मन नहि मानलक पुछलिऐ-

“बौआ, तूँ केना बुझै छहक जे सुनीति काका बाइत गेला अछि?”

अपन बातकेँ प्रमाणित करैत भातीज बाजल- “अहाँ सात दिनसँ गाममे नइ ने छेलिऐ। पाँच दिनसँ सौंसे गाम हल्ला भेल अछि जे सुनीति बाबा बाइत गेल छैथ। से कि कोनो एहेन सुननिहारो आ बजनिहारो

गाममे हमहींटा छी, जेकरा पुछबै सभ कहत।"

भातीजक मुँहक जोर आ गामक गवाहीक नाम सुनि मन धकमकाए लगल। धकमकाइते विचार उठल जे आनो-आनसँ पुछि मनकेँ शान्त करी। मुदा, एहेन बात केकरोसँ पुछैक माने ईहो ने हएत जे एते पैघ विचारक–माने निन्दनीय रूपमे, विपरीत रूपमे–प्रचार करए चाहि रहलौं अछि..! चित्रकूट पहाड़ जकाँ मन आगू-पाछू हुअ लगल।

सात दिनक पछाइत गाम एलौं अछि, जहिना सोहरी लागल गामक समाचार हएत तहिना परिवारोक सोहरी लागल विचारो आ काजो हेबे करत। तैपर भरि दिन गाड़ीक साँकर सीटपर बैसल एलौं हेन, देह-हाथ अकैड़ गेल अछि। तहूमे आइ नहेबो ने केलौं तइसँ देह आरो भरियाएल बुझि पड़ैए। संजोग बनल, पत्नी आगूमे पड़ली। हुनका बजैसँ पहिने बजलौं-

"गामक की हाल-चाल अछि?"

ले बलैया! गामक हाल-चाल पुछैक अपन अभ्यंतरक कारण छल सुनीति कक्काक समाचार बुझब मुदा भेल उन्टा। कहबियो छै 'राजाकेँ राजक फिकिर आ रानीकेँ किदैनिक...।' पत्नी अपने परिवारक सोंखैर तेहेन उठौलैन जे अपन मनक पानियेँ उतैर गेल। घरक झंझट रोकैत बजलौं-

"पहिने एक गिलास पानि आ चाह पियाउ, पछाइत रमझौआमे लागब।"

हमर ठेहियाएल मन देखि कि सात दिनक आग्रह बुझि आकि अपन परिवारक सोंखैर सुनबैक गरजसँ, एक्के बोले बुझि पत्नी चाह बनबए विदा भऽ गेली। कहब जे पत्नियोँ एक बोल, दू बोल, तीन बोल सुनि किछु करै छैथ? भाय! हम अनकर बात नहि अपन बात कहै छी, अहाँक पत्नी लक्ष्मी छैथ कि सरस्वती छैथ से तँ काल्हि वसन्त पंचमी छीहे दुनूक पूजा

हेबे करत, पछाइत बुझब। आन दिन जखन पत्नी लग चाहक चर्च करै छेलौं तखन कहियो चाह-पत्तीक दोख लगा तँ कहियो चीनी-दूधक दोख लगा आग्रहकेँ टिरकबैत झीलिया दइ छेली, तँए कहलौं।

पानि तँ पत्नी पहिने पहुँचा गेली मुदा अपन सभ जोगार बैसबैत गैसबला चुल्हि पजारि चाह बनौलैन। मने-मन मन मँहैकिये रहल छल जे एक तँ चाह अपने कबजियाह होइए तैपर गैसक आगि तँ आरो मसल्ला मिलाइये रहल अछि मुदा दोसर उपाइयो तँ नहियेँ अछि।

चाह नेने पत्नी आबि हाथमे गिलास धड़ा अपने भनसा घर दिस विदा भेली तैबीच मोन पड़ि गेल एकटा पैछला बात। जइसँ अतीत दिस मन दौड़ गेल। एकटा गामकेँ हराहि गाए जकाँ, हराहि गाए ओकरा कहल जाइ छै जे बाधमे चरैत गाइयक जेरकेँ ढाहीसँ मारि-मारि ने अपने चरैए आ ने दोसरकेँ चरए दइ छै, जेकरा मलकार गरदैनमे खटक वा चौकीक पौआ जकाँ छेद कऽ डोरीमे पहिरा गरदैनमे बान्हि दइए तहिना ओइ गामकेँ इलाकाक चारू बगलीक गाम गरदैनमे तेहेन ढेंग बान्हि बदनाम कऽ देने अछि जे एक तँ भोरे-भोर–बिना किछु अंजल केने–नामो नहि लैत अछि आ जँ केकरो धोखा-धोखी मुहसँ जँ निकैलियो गेल तँ सात बेर राम-राम करैत अपन बोलकेँ शुद्ध करै छैथ...।

मन अतीतेमे औनाए लगल। जेना-जेना मन अतीतमे औनाइत गेल तेना-तेना रंग-बिरंगक विचार सेहो उपकए लगल। अतीतेसँ ने बान्हल वर्त्तमानो अछि। वर्त्तमान आइ भेल मुदा अतीतक तँ हजारो-लाखो बर्खक इतिहास अछि। जेकरा टपैत आजुक वर्त्तमान अछि। जइमे दुनियाँक सभ जीवो-जन्तु आ आनो-आन वस्तु-जातक इतिहास समाएल अछि। मनुखक सेहो तहिना अछि जइमे जंगली रूपसँ लऽ कऽ आजुक सभ्य समाज धरिक मनुख अछि। ओहुना सभ बुझितो छी आ मानितो छीहे जे पैछला जिनगीक अंश किछु-ने-किछु वर्त्तमानपर सेहो पड़िते अछि। अखन धरिक जे मनुख आ समाज अछि; ओहो तँ जंगलक

एकाकी मनुखसँ–माने पशुवत समाजसँ–केना-केना बनैत-बढ़ैत आइ सभ्य समाजक रूपमे आएल अछि। तैबीच हजारो रंगक परिस्थिति सेहो बनबे कएल। सामाजिक जीवनमे केना भाषा-साहित्य-संस्कृति–आचार-विचार-बेवहार–इत्यादि जे आएल ओ एकेबेर थोड़े परिनिष्ठित रूपमे आबि गेल, एकाएकी परिमार्जित होइत ने आएल। जखन कोनो विचार वा काजक जन्म बेकती आकि समाजेमे भेल तखन ओकरा लोक आश्चर्यजनक चमत्कार बुझलक। उदाहरणमे देखिते छी जे आगिक जखन अविष्कार भेल तखन आगियोकेँ लोक चमत्कारे बुझलक, मुदा आइ ओकरा चमत्कार के बुझैए? आइ तँ लोक एतए पहुँच गेल अछि जे प्रकाशक गतिकेँ सेहो नापि लेलक अछि। एक लाख छियासी हजार मील प्रति सेकेण्ड प्रकाशक गति अछि। खाएर जे अछि से अछि, मोटा-मोटी एतबे अछि जे चमत्कार भ्रम पसारैक ओहन हथियार छी जे अखनो रंग-बिरंगक करिंदा लोक एहने-एहने भ्रम पसाइर अबूझ-अनाड़ी लोककेँ दिन-राति शिकार बनाइये रहल अछि। तैसंग कालक सोभाव, नियति आ कर्म सेहो अपन रूप बदैल-बदैल भ्रमित करबे करैत आबि रहल अछि जइसँ मनुख परतंत्रता दिस दिन-राति धकेललो जाइते अछि। मुदा केतबो किछु अछि, मनुख चेतनशीलो तँ होइते अछि तँए किछु-ने-किछु स्वतंत्र तंत्र ओकरा मनमे छइहे। जँ से नइ छै तखन ओ चेतनशील मनुख भेल केना आ ओकरामे पुरुषार्थ एलै केना? पुरुषार्थोक तँ अपन नमहर इतिहासो आ वर्त्तमानो अछिए आ भविसोमे रहबे करत...। तही बीच भनसा घरसँ चाह पीब पत्नी लगमे आबि आगूमे बैसैत बजली-

“जहिया अहाँ गामसँ गेलौं तहियेसँ धिया-पुता नाको-दम केने अछि..!”

ओना पत्नीक विचार मनक ऊपरे-ऊपर रहि गेल, मिसियो भरि मनक भीतर प्रवेश नहियेँ कऽ सकल। मनक ऊपरे-ऊपर रहैक कारण भेल जे जहिना कोनो परिवारमे शत्रुक आगमन भेने परिवारजन अपन

पूर्ण शक्तिसँ ओकरा रोकैए तहिना पत्नीक विचारकेँ अपन मनक ओ विचार जे सभ काल संगीक दुहाइ दइवाली पत्नी अपन बालो-बच्चाकेँ नीक जकाँ नहि सम्हारि सकली तखन ओ पत्नी भेली आकि पत्-नुमा खेलौना! तँए मन नहि भरियाएल। कनी-मनी फुलहैर कऽ हलुकाइये गेल। हल्लुक मन होइत फूरल जे किए ने पत्नियेँसँ पुछिऐन जे सुनीति कक्काक की समाचार छैन...। मनमे सुनीति कक्काक विचार उठि तँ गेल मुदा लगले दोसर मन रोकलक। किएक तँ सुनीति काका जखन अबै छैथ माने अपना ऐठाम, तखन जेना ओ परिवारक बच्चासँ लऽ कऽ सियान धरिकेँ एक्के नजरिये देखै छैथ। बच्चा सभ तँ बच्चा भेल; बाबा बुझि किछु बजैत तँ नहि अछि मुदा मने-मन एते विचारबे करैए जे बाबाक विचार छिऐन, साठि बर्खक अनुभवक पछातिक परिमार्जन कएल विचार हेबे करतैन मुदा से घरवाली थोड़े बुझै छैथ ओ तँ उलांकोमे उलांक छथिए। सुनीति काका इशारामे जँ नीको काजक विचार कहै छथिन तेकरा ई अपन तौहीन बुझि अपन मान-महतसँ आँकि हीनसँ हिनहिनाइते छैथ। जइसँ मने-मन पकपकाएल रहबे करै छथिन। तँए, सुनीति कक्काक हाल-चाल जँ हिनकासँ पुछबैन आ तेकरा उन्टा बान्ह बान्हि लऽ उड़ती तखन तँ आरो मन तहस-नहस हेबे करत। तइसँ नीक जे हुनका-दे किछु पुछबे ने करिऐन। बजलौं-

“की धिया-पुता नाको-दम कऽ देलक?”

पत्नी बजली-

“बीत-बीत धरिक अछि मुदा शिखर-पराग-ले पचास-पचास रुपैआ सभकेँ चाहबे करी। हमरा बापक दिन छी जे पुरौल हएत।”

की बजितौं, मनकेँ मारि बजलौं- “बापक दिन जहिया छल तहिया मौज केलौं, आब तँ अपन दिन भेल, मौज करि कऽ देखि लियौ।”

गहुमन साँप जकाँ पत्नी डँसली तँ नहि मुदा हनहनाइत भनसा घर दिस विदा भऽ गेली।

जखनसँ सुनीति कक्काक समाचार भातीजक मुहेँ सुनलौं तखनसँ मनकेँ केतबो थीर करी मुदा थीरे ने हुअए। एक दिस थकानसँ अपन देह किछु करैसँ हारि मानि रहल छल तँ दोसर दिस सुनीति कक्काक समाचार मनकेँ खोरिया-खोरिया मुहोँ आ मुँहक बोलियो सुनैले उत्कण्ठित कइये रहल छल जइसँ अक्-बक् दुनू बन्न भऽ गेल। की करब से किछु फुरिये ने रहल छल। ओना, खाइ-पीबैक राति सेहो भइये गेल अछि। खेबो-पीबोक अपन-अपन परिवारक अपन-अपन समय होइते अछि। कियो सूर्यास्तक पूर्वेमे रौतुका खेनाइ खाइ छैथ, कियो पहिल साँझमे खाइ छैथ तहिना कियो दोसर साँझमे तँ कियो तेसर साँझक पछातिक खेनाइकेँ रौतुका खाएब बुझै छैथ। मुदा से नहि, अपने जखन गामक देवस्थान–ठकुरवाड़ी–मे घड़ी घण्ट बाजि पूजा-अर्चना भेला पछाइत जे आरती-स्तुति होइए तेकर पछाइत रौतुका खेनाइ खाइ छी, से समय भऽ गेल।

खेनाइ खेला पछाइत जखन ओछाइपर गेलौं तँ नीने ने आबए। सुनीति काकापर मन ओहिना लटैक गेल जेना केकरो सोझामे अपन जीवन भरिक मान्य विचारक हनन भेला पछाइत लटैक जाइए। अन्तो-अन्त मनकेँ यएह बुझा कऽ थतमारलौं जे सुनीति काकाकेँ जे ओछाइन छोड़ैक बेर–माने नीन तोड़ि उठैक बेर–तीन बजे छैन तही काल हुनका लग पहुँच जाएब। अखन जाएब नीक नहि हएत।

एक तँ माघ मासक शीतलहरी, दोसर शुक्ल पक्षक चतुर्थीक चान। चानो ललिया कऽ कलिया कालक गालमे सोन्हिया रहले अछि। नीन अबैसँ पूर्व अपन मनकेँ गसिया कऽ गाइत्री मंत्रसँ–माने संकल्पक विचारसँ–बान्हि लेलौं जे तीन बजे भोरसँ पहिने नीन तोड़ि उठैक अछि।

जहिना मनकेँ गाइत्री मंत्रसँ बान्हि तीन बजे भोरसँ पहिने उठैक विचार केने छेलौं तहिना तीन बजैसँ पाँच मिनट पहिनहि नीन टुटि गेल। अपने टुटल आकि गाममे जे सरस्वती पूजाक लॉडस्पीकर बाजल तइसँ टुटल से अखनो धरि ठेकानपर नहियेँ अछि। ओ तँ तखन ठेकनौल जाएत

जखन नियमबद्ध नीन टुटब शुरू हएत। जखने से हएत तखनेसँ ने अपन पुरुखपना बुझब जे अपनो बुते किछु भऽ सकैए।

अधरतियेसँ गामक चहल-पहल शुरू भेल। पैछलो सालक देखल अछि आ अहू बेरक देखब। गामो तँ गाम छी, अनेको समाजक बास भूमि। ओना, मोटा-मोटी गामेकेँ समाज बुझल जाइए जे छीहो आ नहियोँ छी। छी ओइठाम जे केकरो घरमे आगि लगने सभ मिझबए जाइ छैथ तखन गाम समाज छी आ जखन मने आकि पेटेमे आगि लगैए तखन कियो केकरो देखैबला नइ रहने नइ छी। ओहुना गामक बीच पढ़ल-लिखल लोकक समाज, अखड़ाहापर कुश्ती लड़ैबलाक समाज, पढ़लो-लिखलमे डॉक्टरक समाज, वकीलक समाज, शिक्षकक समाज, गजेरी-भँगेरीक समाज, ठक-फुसियाहक समाज, चोर-उचक्काक समाज इत्यादि अनेको समाज बनले अछि।

मन भेल जे पहिने गामे टहैल ली मुदा संकल्पित मन नहि मानलक। जखन सुनीति काकासँ भेँट करए विदा भेल छी तँ पहिने हुनकर भेँट करबैन पछाइत जे करब से करब।

हमरा पहुँचैसँ पहिनहि सुनीति काका अपन जीवनक रणभूमिक आँगनमे डेगे-डेग घुमि रहल छला। कनी फरिक्के रही कि सुनीति काकाकेँ टहलैत देखलयैन। कनी आरो आगू बढ़लौं कि चेहराक रंग साफ-साफ देखि पड़ल। मुँहपर नजैर पड़िते सोल्होअना विश्वस्त भइये गेलौं जे सुनीते काका छैथ। डेगे-डेग आरो आगू बढ़लौं। दरबज्जाक सीमामे डेग पड़िते सुनीति काका हँसैत बजला-

“भोरमे तँ नढ़ियाक जुटान ढोलहो दइए जे रणभूमिमे चलि कऽ देखहक। दोसर, गाछपर खोंतामे मेना-पौरुकी अपन प्रियतमकेँ जगबैत डुबकी ढोलकी बजबैए मुदा तूँ कोन ढोलकी लऽ कऽ टहैल रहल छह?”

-कहि भभा कऽ हँसला।

सुनीति कक्काक हँसी देखि अधा-छिधा मनमे बिसवास उठए लागल जे ठीके भातीज कहने छल जे सुनीति बाबा बाइत गेला हेन। पाछू उनैट कऽ तकलौं तँ बुझि पड़ल जे या तँ मैयाक (चेचक) प्रकोप सँ बतला हेन चाहे देहक धाह-बोखारसँ। मुदा से तँ निठाही भाँजपर तरखन चढ़त जखन गप-सप्पक क्रममे थर्मामीटर लगाएब...।

बिना किछु हँ-हुँ बजने दुनू हाथ जोड़ि गोड़ लगलयैन। जहिना इशारामे गोड़ लगलयैन तहिना हँसेत मुहेँ आँखिक इशारासँ असीरवाद दैत सुनीति काका बजला-

“बौआ चलन्तदेव, अखने अपनो चाह पीलौं हेन, थर्मशमे दू कप चाह रखनौं छी, तोहूँ पहिने चाह पीब लाए पछाइत दुनू-बापूत गप-सप्प करब।”

अखन तक जे मनमे छल जे सुनीति काका बाइत गेल छैथ से भरिसक झुठे जानकारी छल। ओना, सुनीति कक्काक भोरुका विचार छेलैन तँए चाह पीबैसँ नाकर-नूकर करब नीक नहि बुझि चुपचाप दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैसैत बजलौं-

“काका, सात दिनसँ गाममे नहि छेलौं! तेहेन काजक ओझरीमे फँसि गेल रही जे मने-मन होइ छल जे सरस्वती पूजामे गाम आएल हएत की नइ...।”

तैबीच एकटा कप, थर्मश आ पानि भरल लोटा नेने सुनीति काका लगमे आबि चौकीपर बैसैत पुछि देलैन-

“पानियोँ पीबह?”

भोरुका अहार छी तँए किछु छोड़ब उचित नहि बुझि मुड़ी डोलबैत कहलयैन-

“हँ।”

लोटा आगू दिस बढ़ा देलैन आ अपने थर्मशसँ चाह कपमे ढारलैन।

छुच्छे आग्रहक परिपाटी अपना समाजमे अछिए। ओही परिपाटीकेँ निमरजना करैत बजलौं- “काका, हमहींटा पीब आ अपने?”

सुनीति काका बजला- “कोनो कि पुष्टाइक वौस छी जे अनेरे दोहरा-दोहरा पीबी।”

ओना, अपन भीतुरका मन छल जे जेते गप-सप्प हएत तेते बाइत जाएबक खुलासा सेहो हएत। मुदा पहिलुके जकाँ सुनीति काका अपन विचारकेँ समयानुसार झुकबैत समीचीन उत्तर दैत रहला। सोल्होअना मन मानि गेल जे सुनीति काकाकेँ कियो अफवाह केलकैन अछि। जाबे चाह सठए-सठए ताबे कोठरीसँ पनबट्टी आनि अपने दोहरा कऽ जरदा खेलैन आ हमरा-ले पान लगौलैन। भोरुका चाह-पान देखि मन हरैख गेल जे जखन चाह-पान आगूमे आबि गेल तखन जे अनेरे मुँह लटकौने रही से नीक नहि। बजलौं-

“काका, गामक तँ रूखिये बदैल गेल अछि!”

हमर बात सुनि आकि पैछला सालक सरस्वती पूजा मन पड़लैन तँए हँसला आकि की से तँ सुनीति काका जनता मुदा एतबे बजला-

“नीक बात!”

सुनीति कक्काक मुँहक ‘नीक बात’ सुनि मन औनाए लगल। औनाए ई लगल जे की नीक! नीक मे नीक कि अधलामे नीक आकि नीक-अधलाक बीचक नीक? किछु भाँजेपर ने चढ़ल। ठिकिया कऽ पुछलयैन-

“से की काका?”

सुनीति काका भौककेँ भौकियबैत बजला-

“बौआ चलन्त, माघक शुक्ल पक्षक पंचमी दिन ज्ञान रूपी सरस्वतीक पूजा छीहे जे तैसंग धन स्वरूप लक्ष्मीक पूजा दिन सेहो छी। आइये कालक आराधना सेहो हेबे करत, यएह तीनूक जोग ने जिनगीमे

वसन्त अनैए। मुदा एकर रूपेँ विकृत भऽ गेल अछि।"

एक संग सुनीति काका सभ बात कहलैन मुदा अपने नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। पुछलयैन-

"की विकृत, काका?"

हमर बात सुनि सुनीति काका जेना विचारक बोनमे फँसि गेला तहिना बुझि पड़ल। ओना, मने-मन सुनीति काका विचारक गुत्थीकेँ सेहो सोझरा रहल छला मुदा जहिना ज्ञानकेँ विज्ञान बनैक बीचमे किछु व्यवधान होइत अछि तहिना मनमे भऽ रहल छेलैन। ओना, ज्ञानकेँ विज्ञान रूप बनैमे सभठाम व्यवधान होइते अछि सेहो बात नहियेँ कहल जाएत। मुदा नहि होइए सेहो तँ नहियेँ कहल जाएत। सेहो होइते अछि। जइ धरतीपर अखन ठाढ़ भऽ विचार कऽ रहल छी तैठाम हएब सोभाविके अछि। किए तँ जहिना सरस्वतीक अराध तहिना लक्ष्मीक अराध कठिन साध्यक साधना छीहे, जेकरा लोक बैलूनक खेलौना जकाँ खेलौना बुझि खेल रहल अछि मुदा तइसँ थोड़े अराधक फल भेटत। तरखन तँ भेल मनकेँ बुझाएब। खाली मनकेँ बुझौनेसँ जीवन थोड़े चलि सकैए। ओइले जेतेक जइ तरहक साधनाक खगता अछि ओ पुरौला पछातिये ने कियो पेब सकैए।

सुनीति काका बजला-

"बौआ चलन्त, जँ एक्केटा काजक बात रहैत तँ उत्तर देब असान छल मुदा ऐठाम तीन तरहक विचारक जोग भेला पछातिये ने विकृत्ति सुकृत्ति बनि सकैए। मुदा..?"

बजलौं-

"मुदा की?"

सुनीति काका बजला-

"बौआ चलन्त, जहिना सरस्वती पूजनक कृत्तिक वृत्तिमे कुवृत्ति

पकड़ने जाइए जेकरा सुवृत्ति बना सुकृति करब असान नहि, तहिना लक्ष्मियोक पूजन आ कालोक गतिमे भऽ रहल अछि, तैठाम धाँइ-दे किछु बाजब जल्दबाजीए ने हएत।”

ओना, सुनीति कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छेलौं, मुदा बजैक क्रममे बाजब उचित नहि बुझि चुपे रहलौं। तहूमे सुनीति काका अपने मुहेँ कबुलियो रहला अछि जे ‘तीनू जोगक क्रममे धाँइ-दे किछु बाजब जल्दबाजीए हएत।’ ओना पेटमे तेतेक रास विचार जागि गेल जे बिना बजने नइ रहल गेल। बजलौं- “केना भऽ रहल अछि?”

सुनीति काका सरस्वतीक रूप वर्णन करैत धाराप्रवाहमे तेना बाजए लगला जे मनमे हुअ लगल ठीके भातीज कहने छल जे ‘सुनीति बाबा बाइत गेला..!’ सुनीति काका बजबो करैथ आ हमरा आँखियो दिस तकैथ। बिच्चेमे बजा गेल- “काका, निचेनमे सभ बुझब। आइ सरस्वती पूजाक संग लक्ष्मी पूजा सेहो छी आ तैसंग वसन्तक जन्म दिन सेहो; आइयेसँ ने लोक अपनो वसन्ती जिनगीक वसन्तक रंग चढ़ौत। तँए समैयक अभाव अछि। झटपटमे किछु कहि दियौ।”

सुनीति काका बजला- “ज्ञान कर्मक बीच उपासना सेहो अछि। हम तूँ उपासक बनि दुनूकेँ जोड़िये ने उपासना कऽ सकै छह। जेकरा कियो भक्ति, कियो शक्ति, कियो जीवन लीला, कियो कर्मकारी जीवन इत्यादि अनेको शब्दसँ अनुगृहीत करैए।”

की बजितौं, चुपे रहलौं।

❑

शब्द संख्या : 2767, तिथि : 16 फरवरी 2020

चुटका सुतरल

झंझारपुर बजारसँ सवुरलाल वापसी घर आबिये रहल छल कि धीरजलाल बाबापर नजैर पड़लै। ओना, राजापुर एक्के पंचायत छी जइमे सवुरोलालक घर आ धीरजलालक घर सेहो पड़ैए। छोट-छोट तीनटा गाम राजापुर पंचायतमे अछि। धीरजलाल बाबाक घर कर्मपुरा आ राजापुर गामक जे सीमा अछि ओही सीमा-कातमे छैन। जमीनक सीमा-सरहदक हिसाबसँ धीरजलाल बाबाक घर राजापुरमे पड़ै छैन, मुदा पाँचे घर सीमाकातमे एक्के वंशक परिवार। नमहर पंचायत राजापुर अछि जइमे अनेको जातियो, अनेको सम्प्रदायो, अनेको रंगक आचारो-विचार आ बेवहारो आ तैसंग अनेको रंगक बोली-वाणी सेहो अछिए। पुबे-पछिमे गाम अछि तँए चौबगली गामबला सभ बजितो छैथ आ कहबो करिते छैथ जे राजापुर सूर्यमण्डल गाम अछि तँए करवन अछि आ करवन उजड़त तेकर ठीक नहि। अनगौंआँक कहब कोनो क्रोधवश छैन से बात नहि अछि। बात ई अछि जे जइ गामक बास पुबे-पछिमे रहैए; माने नमतीमे बेसी आ चौड़ाइमे कम, ओइ गाममे प्राकृतिक आफत-असमानीक सम्भावना बेसी रहैए। जेना चैत-बैशाखक कड़कड़ौआ गरमीमे जे अन्हर-बिहाड़ि वा विर्ड़ो उठैए ओ या तँ पुबसँ पच्छिम दिस बढ़ैए वा पच्छिमसँ पुब दिस; तहिना बरसातक समयमे जे झाँट-बिहाड़ि अबैए ओहू हवाक रूखि पुब-सँ-पच्छिम दिस बढ़ैए वा पच्छिम-सँ-पुब दिस। जइसँ जहिना गरमीमे अन्हर-बिहाड़िक प्रभाव–आक्रमण–तहिना बरसातमे झाँट-पाइनिक आ तहिना जाड़क शीतलहरीक प्रभाव सेहो

हवाक रूखिये बेसी पड़िते अछि। मोटा-मोटी यएह कहि सकै छी जे जइ गामक बास उत्तरे-दच्छिने अछि ओइ गामक बास पुबे-पछिमेबला गामसँ नीक बास भेल। ओना, ई भेल हवाक रूखिये, मुदा ऐ सँ अतिरिक्तो केतेको कारण अछि। मुदा से सभ अखन नहि।

धीरजलाल बाबापर नजैर पड़िते सवुरलाल साइकिल रोकि उतैर गेल। ओना, धीरजोलाल बाबा आ संतोषी दादी सेहो सवुरलालकेँ देखलखिन। मुदा टोका-टोकी नइ भेल छल। जहिना धीरज लाल बाबाक मनमे उठैत रहैन जे गौंआँ रहैथ कि अनगौंआँ सड़क धेने जा रहल छैथ वा सड़कपर ठाढ़े छैथ, जँ घर लग छैथ तँ अगुआ कऽ ने अपन बात बजता जे रस्ता चलैत किए रूकलौं। दोसर ईहो बात जे जहिना धीरजलाल बाबा तहिना संतोषी दादी उमेरोक हिसाबसँ बहुत बेसी छथिए।

साइकिलसँ उतैर दरबज्जा दिसक–माने धीरजलाल बाबाक दरबज्जा दिसक–रस्ता सवुरलाल काटिये रहल छल कि धीरजलाल बाबा बजला- “चुटका सुतरल..!”

‘चुटका सुतरल’ सुनि संतोषी दादी ओहिना विसमित हुअ लगली जेना कोनो बाले-बोध आकि अवोधे-सवोधकेँ कोनो दर्द-पीड़ा भेने औषधीय चुटका भेटने होइ छइ। रस्तासँ दरबज्जा दिसक रस्ता सवुरलाल धेनहि छल कि धीरजलाल बाबाक बात सुनलक। मुदा किछु ऐ दुआरे नहि बाजल जे अपन दुनू परानीक बीचक बात छी तँए बीचमे टोन-टान देब उचित नहि। ‘चुटका सुतरल’ सुनि संतोषी दादीक मनमे अनेको रंगक विचार उठए लगलैन। चुटको तँ केते रंगक होइए। कोनो बेमारीक अवस्थामे सेहो कोनो साधरणो प्रतिकारसँ नीक भेने लोक चुटके सुतरब बुझै छैथ। तहिना आनो-आनो काजमे सेहो होइते अछि। असमंजसमे पड़ल संतोषी दादीक अपने मन उत्तर दैत कहलकैन- ‘जाबे चुटकाक बेवहारिक रूप नहि बुझब ताबे की चुटका सुतरलैन से केना बुझब।’ संतोषी दादी बजली- “की चुटका सुतरल?”

तैबीच सवुरलाल सेहो आगू बढ़ि साइकिल दरबज्जाक ओसारक दाबामे अड़का दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

"गोड़ लगै छी काका..!"

बजैत ओसारपर चढ़ल। सवुरलालकेँ हाथक इशारासँ धीरजलाल बाबा बैसबैत दादीक प्रश्नक उत्तर दैत बजला-

"जेहेन समय बनि गेल अछि, तइमे एक-एक वस्तु आ एक-एक काजकेँ जोड़बे ने चुटका सुतरब भेल।"

पतिक विचार सुनि संतोषी दादी किछु ने बजली। नइ बजैक कारण पतिक जवाबसँ सन्तुष्टि छेलैन आकि सवुरलालकेँ देखि नहि बजली से तँ संतोषीए दादी जनती। ओना, दादीक मनमे एतेक बिसवास बनल छैन्हे जे जाबे तक पति जीवित छैथ ताबे तकक अपनो जिनगीक बिसवास बनले अछि। ओना, संतोषी दीदीकेँ ई बुझले छैन जे मनुख हुअ आकि कोनो आने जीव-जन्तु; मृत्यु सबहक लेल अनिवार्य अछि; जेकर जन्म भेल ओ मरबे करत। मुदा से छैन धोखा सदृश। एहेन धोखा खाली संतोषीए दादीक मनमे छैन से बात नहि, एहेन धोखा प्राय: सभकेँ होइ छै। तँए ने लोक अपन जिनगीक आदि-अन्त बिनु बुझने अनवरत अपन दुख मेटा सुखक पाछू माने सुख प्राप्तिक पाछू लागल रहै छैथ। दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बइसैत सवुरलाल बाजल-

"बाबा, तेहेन दुरकाल समय बनि गेल अछि जे जिनगी जीबैक सभ आशा टुटि रहल अछि।"

सवुरलालक बात 'जीबैक सभ आशा टुटि रहल अछि' सुनि सान्त्वना दैत धीरजलाल बाबा बजला-

"सवुर, एहेन दुरकाल समय कि कोनो अहीबेर टा भेल अछि जे एना जिनगीक आशा तोड़ै छह?"

अपना ऐठाम माने मिथिलांचलमे बाढ़ि-रौदीक संग भुमकम, झाँट-

पानि-पाथर, हवा-बिहाड़िक संग पैघ-पैघ बड़-विर्ड़ो सेहो आइये नहि सभ दिनसँ माने अदौसँ होइत आबि रहल अछि। जेकर साधारण रूप सेहो छै आ प्रलयकारी रूप सेहो रहबे कएल अछि। प्रलयकारी रूप भेने जान-मालक संग खेत-पथारक एहेन मरनशील रूप बनबे कएल अछि जे गामक-गाम उपटबो कएल आ नष्टो होइते आबि रहल अछि मुदा सभ किछु होइतो सभ किछु बँचलो तँ अछिए। सवुरलाल बाजल-

"बाबा, अपने आशा तोड़ै छी आकि समय तोड़ि रहल अछि..!"

सवुरलालक बात सुनि धीरजलाल बाबा बिना किछु बजने मने-मन विचारए लगला। विचारक क्रममे धीरजलाल बाबाक मनमे उठलैन जे होइत तँ दुनू अछि। जखन लोक पैघ समस्यामे फँसि जाइए आ समाधानक कोनो विकल्प सोझामे नइ देखैए तखन आशा टुटिते छै। तैसंग ईहो तँ होइते अछि जे दुरकाल समैयक फेड़मे पड़ने सेहो आशा टुटिते छै। धीरजलाल बाबा बजला-

"बौआ सवुर, जाबे धरि मनुखकेँ साँस चलैए ताबे धरि जिनगीक आशा बनले रहै छइ। तूँ तँ सहजे जुआन-जहान छह तखन एते निराश किए भऽ रहलह हेन?"

धीरजलाल बाबाक विचार सुनि सवुरलालक मनमे द्वन्द्व उत्पन्न हुअ लगल। द्वन्द्वक कारण भेल जे जहिना एक दिस जिनगी चलैक रस्ता नहि देखि निराशासँ आशा टुटि रहल छेलै तँ दोसर दिस ईहो बिसवास मनमे जगले छल जे जाबे तक मनुखक साँस चलैए ताबे तक जिनगीक आशा अछिए। सवुरलाल बाजल-

"बाबा, अपना गामक जे स्थिति–बान्ह-सड़क, नहर बनने–बनि गेल अछि ओ कोशिकन्हा कहियौ आकि चौरीबला गाम कहियौ, सालमे केते दिन उपज देत।"

धीरजलाल बाबा बजला- "बौआ सवुर, तोहर बात मिसियो भरि

झूठ नहि अछि किए तँ दू सालसँ देखिये रहल छी। ओना, रौदियाह समय भेने तेसर साल तँ एक तरहक उपजा जोग जमीन रहबो कएल मुदा दू सालसँ जे स्थिति बनि गेल अछि माने सालक सात-आठ मास पानिसँ घेराएल रहैए, तैबीच जीवन कठिन भइये गेल अछि। ओना, बुइधिक मालिक मनुख छी तँए प्राकृतिक प्रकोप केहनो किए ने हुअए मुदा जीवित मनुख कोनो-ने-कोनो उपाय जीवनक कइये लइए।"

ओना, सवुरलाल अपन जीवनक चर्च उठौने छल मुदा मनमे ओ विचार टँगले छेलै जे धीरजलाल बाबाक मुहेँ जे सुनने छल- 'चुटका सुतरल' से की?

ओना, दुनू परानीक बीचक बात बुझि सवुरलाल नहि बाजए चाहै छल मुदा चुटको तँ चुटका छी जे हुसने जीवन लैतो अछि माने डुमैबितो अछि आ सुतरने जीवन दैतो अछि माने जगैबतो अछि। तैसंग ईहो तँ हेबे करैए जे एकक चुटका दोसरो-तेसरोकेँ लाभ पहुँचबैए आ...। दुनू अछि, एहनो अछि जे दोसरकेँ पहुँचैबतो अछि आ एहनो तँ अछिए जे बेकतीगत भेने नहियोँ पहुँचाबैए। मनकेँ ममोड़ि सवुरलाल बाजल-

"बाबा की कहलिऐ चुटका सुतरल?"

सवुरलालक टुटल मनक आश देखि धीरजलाल बाबाक अपनो मनक आश जगलैन। जिनगीक आश जगिते घिड़नीबला बंशी जकाँ सवुरलालकेँ लग आनि घिरनी चलबैत जादूगर जकाँ धीरजलाल बाबा अपन संकल्प मनमे रोपि विकल्पक चर्च करैत बजला-

"बौआ सवुर, दुनियाँ दिस देखबहक तँ साइबेरिया देश सेहो नजैरपर पड़तह। ओना ओहूठाम किछु इलाकामे सालो भरि बर्फ जमल रहैए तँए किसान-ले उपयोगी नहियेँ अछि, मुदा किछु इलाकामे छअ माससँ नअ मासक बीच बर्फसँ खेत झँपाएल रहैए जे छुटकारा पबिते, उपज दइए। ओही समैयक बीच खेती केनिहार अपन खेतसँ ओतेक

उपजा लइ छैथ जइसँ गुजर-बसर कइये लइ छैथ।"

धीरजलाल बाबाक विचारक धारमे सवुरलाल भँसियाइत बाजल-

"वाह..!"

सवुरलालक 'वाह' सुनि धीरजलाल बाबाक मन मलैक गेलैन जे सवुरलालक आत्मशक्तिकेँ किछु प्रकाश भेटल। ओही प्रकाशकेँ पकैड़ अपनाकेँ प्रकाशित करैत बजला-

"बौआ सवुर, अपना सबहक वंश कृषि आधारित रहल अछि। यएह भेल वंशक जिनगीक जीवन-जापनक उपाय जेकरा संकल्पित होइत अपनो सभकेँ जीवन धारण ने करए पड़त।"

विचारक प्रवाहमे प्रवाहित होइत सवुरलाल बाजल-

"हँ, से तँ करबेक अछि।"

सवुरलालक विचार सुनि धीरजलाल बाबाक मन मानि गेलैन जे जहिना वृन्दावनमे कृष्णक बंशीक डोर पकैड़ गोपिका सभ डोरियाए लगैत छल तहिना सवुरलाल सेहो डोरिया रहल अछि। सवुरलालक विचारमे अपन विचारक-वाण भरैत धीरजलाल बाबा बजला-

"बौआ सवुर, जिनगी चुटकीक खेल छी। जँ चुटका सुतैर गेल तँ क्षण-पलमे जिनगी हँसैत लालसागर पहुँच जाइए; नहि जँ से नहि सुतरल तँ काल बनि कलियाइत-कलियाइत कालासागरमे पहुँच जाइए।"

धीरजलाल बाबाक किछु विचार सवुरलाल बुझबो केलक आ किछु नहियोँ बुझलक। मुदा मनमे एते जिज्ञासा जगिये गेलै जे अपनो पहचान बनाबी आ पहचानल जिनगी धारण करी। बाजल-

"से की बाबा?"

धीरजलाल बाबा बजला-

"अपने गामक रविया जे आब रविशंकर बनि गेल अछि; जेकर

बी.ए.क रिजल्ट निकललै वएह बुझैले ओ युनिवर्सिटी गेल छल, स्टेशनपर एक आदमी भेटलखिन। गप-सप्पक क्रममे नोकरीक चर्च उठल। ओ संगे नेने गेलखिन आ सरकारी नोकरीक कुरसीपर बैसा देलखिन। देखिते छहक जे दरमाहासँ केते बेसी बाइली रुपैआ होइ छै। मुदा दोसर दिस ईहो ने देखिते छहक जे विभूति भूषण छैथ, जे केते मेहनतसँ एम.ए. पास केलैन। प्रोफेसरीक लोभमे जिनगी भरि वौआइत रहला मुदा ठौर नहि भेटलैन। आब तँ सहजे पैंसैठ बर्खसँ ऊपरेक उम्र भऽ गेलैन।”

आँखिक सोझमे गामक दुनू गोरेक जीवन सवुरलाल देखिये रहल छल, बात दुनू सत् अछि। सवुरलालकेँ किछु फुरिये ने रहल छेलै जे केकरा नीक कहब आ केकरा अधला।

असमंजसमे सवुरलालकेँ पड़ल देखि धीरजलाल बाबाक मन मलिया रहल छेलैन जे यार-यारीक भजारीमे सवुरलालक मन पड़ि गेल अछि तँए भरिसक बकार बन्न भऽ रहल छइ। चुल्हिक खोंरनी जकाँ विचारक खोंरनी चलबैत सवुरलालक मनमे उत्पत शक्तिकेँ जगबैत धीरजलाल बाबा बजला-

“बौआ सवुर, घबड़ाइ किए छह। ई दुनियाँ केकरो ने छी। गाए-महींस जकाँ नंगर-डोलौन छी। जेकरा लूरि छै ओ दुहि-गाड़ि अमृत खाइ-पीबैए, जेकरा लूरि नइ छै ओ भेड़ी जकाँ भेड़िया-धसानमे पड़ैए। तँए..?”

ओना, सवुरलालक मन करखनो दहाइ छल तँ करखनो भँसियाइ सेहो छल मुदा अथाह पानिमे–माने अथाह जीवनमे–एते तँ थाह पेबिये रहल छल जे जीवन जीवनकर्माक हाथमे अछि। से तँ सुरक्षित अछिए। तैबीच समैयक प्रकोप भेल, जे जीविकाक आशापर पानि फेड़ रहल अछि।

दुनूक बीचक माने जीवन आ समैयक बीच जे दूरी अछि, जेकरा

सवुरलाल अखन तक नहि बुझै छल, ओ सामनेमे एने एकाएक मनमे झलैक गेलै जइसँ हर्ष-विषमयक बीच विचार उग-डुम करए लगलै। एक दिस नमहर पहाड़ आ नमहर-चौरगर पाइनिक समुद्र आ दोसर दिस सपाट-सुन्दर भूमि सेहो देखए लगल। मर्माहत होइत सवुरलालक मुहसँ एकाएक निकलल-

"बाबा!"

'बाबा' सुनि धीरजलाल बाबाक मन सवुरलालक जिनगीक भ्रमण करए बढ़लैन। अखन सवुरलाल एहेन समैयक–माने कालक–चापमे पड़ल अछि जे मनुख निर्मित छी, तँए जँ सामने-सामने किछु बाजब तइले ओहन हू-ब-हू नमुना चाही; से तँ अछि नहि आ जे देखल नहि अछि ओकरा सोलहन्नी बिसवासक संग मानियोँ लेब सोलहन्नी नीक नहि। ओना, सम्भव दुनू अछि। तँए नीक हएत जे अपन जे जिनगी अछि तेकरे दोहरबैत बाजी तइ बीच जँ सवुरोलालकेँ किछु भेट जेतै तँ बड़ बढ़ियाँ नहि तँ सवुरेलालक विचारकेँ किए ने अगुअबैत बीचमे अपन विचार रखैत चलब। जँ केतौ चुटकीमे चुटका भेटलै तँ जिनगीक चुटका सुतरबे करतै...। सवुरलालक प्रश्नकेँ अपन प्रश्न बना उत्तर दैत धीरजलाल बाबा बजला-

"बौआ सवुर, दुनियाँ जहिना नमहर अछि तहिना लोकक जिनगियो नमहर छइहे। तँए अनका दिस तकने अपना जिनगी थोड़े भेटत। ओ तँ भेटत अपने जिनगीमे।"

धीरजलाल बाबाक विचारक प्रवाहमे सवुरलाल सेहो प्रवाहित हुअ लगल। बाजल- "हँ से तँ भेटबे करत।"

सवुरलालक विचार सुनि धीरजलाल बाबाक मन मानि गेलैन जे जहिना अपने मझोलका किसान छी तहिना सवुरलाल सेहो अछि, तँए अपन जहिना चुटका सुतरल तहिना ने ओकरो सुतैर सकै छइ। बजला-

"सवुर! अपने-सभटा नहि; अपना सबहक पूर्वजो जे भेला ओहो सभ अपने सभ जकाँ जिनगी बनौने छला आ जीबै छला।"

बिच्चेमे सवुरलाल बाजल-

"सुनै छी जे अपना गाममे एकोटा पजेबाक घर नइ छल, उपजो-बाड़ीमे अल्हुआ-सुथनी, कदन-मदनक खेती होइ छल, तखन... ।"

धीरजलाल बाबा बजला-

"हँ, ठीके सुनै छहक जे गाममे एकोटा पजेबाक घर नहि छल, मुदा लोकक रहैले घर तँ छेलैइहे। तहिना उपजो-बाड़ीक अछि। उपज बदलबो कएल आ किछु पैछला अखनो अछि, मुदा मूल बात छी भोजन, से तँ पहिनौं लोक करिते छल आ अखनो करिते अछि। अखन ओइ दिस छोड़ह जे जाबे सिमरियामे गंगाक पुल नहि बनल छल ताबे कोयला नहि अबै छल जइसँ पजेबा नहि बनने पजेबाक घर नहि छल। कियो-कियो लकड़ीसँ पजेबा पकबै छला।"

सवुरलाल बाजल-

"बीतलकेँ अखन छोड़ि दियौ, आइ केना जीब?"

सवुरलालक विचार सुनि धीरजलाल बाबाक मन मानि गेलैन जे सवुरलाल रस्तापर चढ़ि रहल अछि तँए अपने चलल रस्ता किए ने कहि दिऐ। बजला-

"बौआ, जहिना तोहर सभटा जोतसीम खेत टापू बनि गेलह तहिना ने अपनो बनि गेल अछि।"

सवुरलाल बाजल-

"हँ, से तँ बनियेँ गेल अछि।"

धीरजलाल बाबा-

"अखन तक तूँ देखा-देखी देखि रहल छह मुदा अही गाममे हमहूँ

छी किने?”

स्वीकार करैत सवुरलाल बाजल- “हँ, से तँ छीहे।”

धीरजलाल बाबा बजला- “अही गाममे ने समय देखि अपन चुटका सुतारि लेलौं!”

अपना जनैत धीरजलाल बाबा अपन सभ बात बाजि गेला। मुदा सवुरलाल बुझबे ने केलक जे बाबा की बजला। जइसँ बिनु बुझल बटोही जकाँ बीच रस्तापर ठाढ़ भऽ चारू दिस देखए लगल। जे धीरजलाल बाबा सवुरलालक मुँहक रोहानीसँ बुझि गेला। मुदा तैयो ऐ आशामे मुँह बन्न केने रहला जे सवुरलाल अपन पेटक दर्दक पीड़ा किछु बाजि पबैए वा नहि। मुदा से भेल। भेल ई जे हारल नटुआ जकाँ सवुरलाल बाजल-

“बाबा! जिनगी छी, जँ सुइयाक नोको भरि केतौ छेद रहि जाएत तँ ओही छेद होइत पैघ-सँ-पैघ बिपैत असानीसँ घोंसिया जाएत। तँए..?”

धीरजलाल बाबा बजला-

“तेसर साल जखन गामक रूप बदलल, माने बान्ह-सड़क भेने गामक पाइनिक निकास बन्न भेल तखने बुझि गेलौं जे आब गाममे कुरथी-तेबरवा आ राहैड़िक उपज गेल। तैसंग गाछो-बिरीछक उपटान हेबे करत। तँए बदलैत स्थितिमे अपनाकेँ सेहो बदलै दिस मोड़लौं।”

‘बदलै दिस मोड़ब’ सुनि सवुरलाल अपन जिनगी दिस उनैट कऽ देखए लगल मुदा किछु पेब नहि पौलक। जइसँ भीतरे-भीतर उदास हुअ लगल। उदासीपन मनमे जगिते अपन जीवनक उदसपन बिसरैत बाजल-

“बाबा, गाममे रहितो अहाँकेँ नहि देखि पेलौं। आब..?”

सवुरलालक बात सुनि धीरजलाल बाबाक मन मानि रहल छेलैन जे सवुरलाल अपन टुटैत जिनगी आगूमे देखि जिनगीक आशा हारि रहल अछि। बजला- “बौआ सवुर, जाबे तक तनमे प्राण रहैए ताबे तक मनमे जिनगीक आशा जगले रहैए, तँए अपनाकेँ आशान्वित होइत पुन: जगैक

विचार मनमे जगाबह। जखने आशा भरल विचार मनमे जगि जेतह तखने जीबैक आश लगा जिनगीक झूलापर झुलए लगबह।”

धीरजलाल बाबाक विचार सुनि सवुरलालक मनमे जेना जिनगीक नव ऊर्ज जगलै, तहिना बाजल-

“तइले..?”

सवुरलालक अधखड़ुआ विचार सुनितो धीरजलाल बाबाकेँ पूर्ण विचारक आभास भेलैन। बजला-

“बौआ सवुर, जिनगीकेँ जखन जीवन-ले समर्पित करबह तखने ने ओ अपन ऐगला जीवन ताकि लेत आ अपन जीवन धारण धेने जीब लेत।”

धीरजलाल बाबाक बात सुनि सवुरलाल ओहिना अकबका गेल जहिना हजारो रंगक भोज्य-विन्यास देखि खेबैया अकबका जाइए। मुदा बेर-बेर जीवनक चर्च सुनि अपन जीवन दिस तकैत बाजल-

“मुदा तइले..?”

धीरजलाल बाबा बजला-

“त्वदीयं वस्तु गोविन्दं, तुम्यमेव समर्पित: अपन जीवन अपना-ले समर्पित कऽ लाएह।”

धीरजलाल बाबाक विचार सुनि सवुरलाल मतसून जकाँ विचार सून भऽ गेल। अपन तीन सालक जीवनक कथा सुनबैत धीरजलाल बाबा बजला- “तेसर साल बीतैत-बीतैत मन मानि गेल जे आब आने गाम जकाँ चर-चौरियाह गाम भऽ गेल। तँए माइटिक उपज पछार खेबे करत। मुदा पाइनिक उपजक तँ उठाइन हेबे करत, तइले किए ने पनियाह जिनगी दिस बढ़ी।”

‘पनियाह जिनगी’ सुनिते सवुरलाल आँखि खोलैत बाजल- “अहीं

सन-सन दूरदृष्टिबला ने दूरगामी जीवन देखि सकै छैथ।"

धीरजलाल बाबाक मन जेना भरि गेलैन तहिना बजला-

"बाउ सवुर, माइटिक जिनगी जखन पाइनिक जिनगीमे बदलए लगैए तखन बीचमे नव सिरासँ किछु अदलैन-बदलैन हेबे करैए, जे नीक जकाँ अखन तक तँ नहि कऽ सकलौं अछि, मुदा तैयो अनाड़ियो उपज एतेक हाथ लगिये गेल जे साल भरिक जीवन जीबैक चुटका सुतैर गेल।"

धीरजलाल बाबाक विचार सुनि सवुरलालक भक्क जेना खुजि गेल होइ तहिना चौचंग होइत ताकए लगल।



शब्द संख्या : 2445, तिथि : 21 फरवरी 2020

हारल चेहरा जीतल रूप

तीस सालक बाद विचारदेवकेँ छलानन्दसँ आइ झंझारपुर कोर्टमे भेँट भेलैन। रजिष्ट्री ऑफिसक काजसँ विचारदेव कोर्ट आएल छला। रजिष्ट्री ऑफिस अनुमण्डल कार्यालयक परिसरेमे अछि। एक गोरेक जमीनक सनाक बनैक खियालसँ विचारदेव रजिष्ट्री ऑफिस आएल छला आ एन.जी.ओ.क काजसँ छलानन्द आएल छला।

दस्तावेज लिखेला पछाइत ऑफिसमे दस्तावेज पेश केलापर देवन मुंशी विचारदेवक संग पान खाइले पूबारि भाग पीपरक गाछक निच्चाँमे जे पानक दोकान अछि तैठाम ठाढ़ रहैथ कि छलानन्दपर नजैर पड़लैन। ओना, दुनू गोरेक चेहराक रूप बदलल रहबे करैन जइसँ छलानन्दकेँ देखला पछातियो विचारदेव धकमकेला। धकमकाइत विचारदेवक मनमे उठलैन जे पानक दोकानपर पान खाइले ठाढ़ छी, जँ कहीं छलानन्द देखि नेने होथि तखन मने-मन की सोचता। तीस बर्ख करीबसँ भेँट नहि भेला अछि तैबीच चेहराक रंग-रूप सेहो थोड़े बदैल गेल छैन, मुदा तइसँ पूर्व केहेन घनिष्ठता दुनू गोरेक छल जे एकठाम गप-सप्प करैक कोन बात जे एक थारीमे केता दिन खेनौं छी। एक विचारक सभ दिन माने हाइस्कूलसँ लऽ कऽ तीस बर्ख पूर्व धरि रहबे कएल छी। पानक दोकानपर ठाढ़ छी तैठाम तँ अपन ई दायित्व बनिते अछि जे छलानन्दकेँ सेहो पान खाइले शोर पाड़िऐन। मुदा स्पष्ट रूपमे नहि चीन्हि विचारदेव धकमका रहल छला। माथक केश जहिना छलानन्दक कारीसँ उज्जर दप-दप भऽ गेल

छैन तहिना ऐगला दाँत टुटने मुँहक रूप सेहो बदैलिये गेल छैन, तँए विचारदेव धकमकाइ छला। ओना, अनचिन्हारकेँ परिचय कि कोनो काजे वा कोनो विचारे किछु पुछब असान अछि। मुदा चिन्हारकेँ अनचिन्हार-परिचय पुछब केहेन हएत? जँ कहीं उन्टा कऽ कहि दैथ जे 'अहाँ बड़का लोक भऽ गेलौं तँए हमरा सन-सन छोट लोककेँ थोड़े चिन्हब' तखन अपन मुँह केहेन हएत..!

मुदा लगले फेर विचारदेवक मनमे उठलैन जे जँ चिन्हार बुझि कहबैन जे 'छलानन्द भाय पान खाइले आबह' आ जँ छलानन्द नहि होथि आ दोसर आँखि गुरेड़ कऽ कहए जे तूँ बड़ पानबला जे हमरा पान खाइले शोर पाड़ै छह, तखन तँ..!

असमंजसमे विचारदेव पड़ले छला कि मुंशीजीकेँ माने देवन मुंशीकेँ रजिष्ट्री ऑफिसक चपरासी लगमे आबि कहलकैन-

"मुंशीजी, कागजमे माने दस्तावेजमे जमीनक नक्शा छुटि गेल अछि से बड़ाबाबू बजौलैन अछि।"

चपरासीक बात सुनि देवन मुंशी जखन अपन ऊपरका जेबीमे देखलैन तँ कागजमे बनौल नक्शा भेट गेलैन जे धोखासँ दस्तावेजमे लगाएब छुटि गेल छेलैन। तैबीच विचारदेव छलानन्देपर नजैर रखने छला मुदा अखन तक भाँजपर नहियेँ चढ़ल छेलैन जे छलानन्दे छैथ आकि आन। मुदा संजोग बनल जे छलानन्द अपने लच्छेदार शैलीमे दोसरकेँ किछु कहए लगला। चेहराक रंग-रूपसँ जे छलानन्द अखन तक विचारदेवक चीन्हमे नहि आएल छेलैन ओ शब्द शैलीक माध्यमसँ चीन्हिमे आबि गेलैन। वएह शब्द.., वएह शैली.., ओही मुहसँ जहिना मकैक लाबा खापैड़सँ उड़ि-उड़ि छिड़िया लगैए तहिना छलानन्दक छिड़ियाएल जइसँ विचारदेवक बिसवासु मन मानि गेलैन जे छलानन्द निश्चित छिया।

छलानन्दक गपक क्रम जखन विरामपर पहुँचल कि विचारदेव शोर पाड़ैत बजला-

“छला भाय, पहिने पान खाउ पछाइत गप-सप्प होइत रहतै।”

जहिना विचारदेव छलानन्दकेँ देखला पछातियो एक नजैरमे चीन्हि नहि सकला तहिना छलानन्दो विचारदेवकेँ नहि चिन्हलकैन। जइसँ मुँह उठा कऽ तँ तकलैन मुदा ‘हँ-हूँ’ किछु ने बजला। छलानन्दकेँ धकमकाइत देखि विचारदेव दोहरबैत बजला-

“हम छी विचारदेव।”

तैबीच देवन मुंशी चपरासीक संग ऑफिस दिस विदा होइत बजला-

“विचार भाय, पानक पाइ अहाँ दोकानदारकेँ नहि देबइ।”

‘पाइ नहि देबइ’ सुनि विचारदेवक मनमे उठलैन जे मुंशीजी अपना जेबीसँ थोड़े देता ओ तँ चाह-पान तकक हिसाब खरीदबालसँ जोड़ि कऽ लइये लइ छैथ मुदा देखौआ एते इमानदार तँ बनबे करै छैथ जे पानो पार्टीकेँ माने रजिष्ट्रीसँ सम्बन्धितकेँ अपने दिससँ खुआबै छिऐन। जइसँ विचारदेवक मनमे भेलैन जे कहिऐन जे पाइ-पाइक हिसाब तँ अहाँ जोड़ि कऽ पार्टीसँ लइये लइ छी, तखन...। मुदा लगले फेर भेलैन जे अनेरे एहेन बात बाजि अपेक्षामे माने सम्बन्धमे खटास पैदा करब नीक नहि, तँए चुपे रहला। देवन मुंशी ऑफिस दिस बढ़ि गेला। तैबीच छलानन्द सेहो पानक दोकानपर आबि गेला।

कोर्ट-कचहरीक होटलबला हुअए आकि चाह-पानक दोकानबला, बुझिये जाइए। ओना, विचारदेवकेँ तीस बर्खसँ छलानन्द सोझा-सोझीसँ भेँट नहि भेल छेलैन मुदा एक-दोसराक विषयमे आन-आन सूत्रसँ जानकारी तँ होइते रहै छेलैन जइसँ छलानन्दक परोक्ष दिनक माने भेँट नहि भेला बीचक जानकारी दुनूक बीच होइते रहैन। जइसँ विचारदेवक

मनमे ठहकिये रहल छेलैन जे छलानन्द केतए-सँ-केतए उनटैत-पुनटैत पहुँच गेल छैथ मुदा तेकर मिसियो भरि ग्लानि मनमे छैन आकि हेहर-थेथर जकाँ घोरि कऽ सभ पीब गेल छैथ..! छलानन्दक विकृत चेहरा विचारदेवक मानसमे बनियेँ गेल छेलैन मुदा मन बजैसँ मनाही केलकैन जे अनेरे किछु बाजब नव विवादकेँ ठाढ करब हएत। हमरा बजने यएह ने हएत जे जेतबो सम्बन्ध अछि तहूमे खलल पड़त। मुदा लाभ की हएत?

'लाभ की हएत'पर विचार अबैत-अबैत विचारदेवकेँ अपने मनमे टकरेलैन जे गलतकेँ गलत मुँहपर कहबे उचित हएत। तैबीच छलानन्द सेहो पान-जर्दा खा एकबेर पीक सेहो फेक चुकल छला। छलानन्द बजला-

"विचारदेव भाय, तीस बर्खक गप-सप्प पछुआएल अछि चलू केतौ चाहक दोकानपर बैस चाहो पीब आ गप-सप्प सेहो करब।"

अपन मनक भीतर जे विचारदेवकेँ छलानन्दक क्रिया देखि क्रोधक तरंग उठि रहल छेलैन ओकरा संयमित करैत बजला-

"छलानन्द भाय, रजिष्ट्री-काजे ऑफिस आएल छी तैठाम जँ अपने गप-सप्पमे केतौ बोहिया जाएब तँ अनेरे सभ दोखी बनौता।"

बजैक क्रममे विचारदेव तँ बाजि गेला मुदा मनमे ई बात नाचिये रहल छेलैन जे जे-जे कर्म छलानन्द केलैन अछि से सभ बात मुँहपर कहि देब अपन मानवीय भार उतारब सेहो हएत। भार उतारब भेल मनुखक अपन मानवीय कर्तव्य। जँ सोझहामे कियो नीक कि अधला कऽ रहला अछि आ अपन आँखि चुप-चाप देखैत रहैए सेहो नीक नहियेँ भेल। नीककेँ नीक आ अधलाकेँ अधला कहैले सेहो मुँह बनल अछि, खाली खेबे-पीबेटा ले तँ नहि बनल अछि। छलानन्दसँ भरि मन गप करैक विचार विचारदेवक मनमे जागि गेलैन। दोहरबैत विचारदेव बजला-

"छला भाय, गप-सप्प करैक मन अपनो अछि मुदा बीचक कोनो

एहेन जोगार कऽ लेब जइसँ दुनू भैयारी भरि मन विचार कऽ सकी ओ बेसी नीक हएत तँए पहिने रजिष्ट्री ऑफिस चलि मुंशीजी केँ जानकारी दऽ दिऐन जे जँ ऑफिसक काज अगुआएल हुअए तँ पहिने सएह करा लिअ, पछाइत दुनू भैयारी निचेनसँ गप करब। नहि जँ ऑफिसक काजमे बिलम हएत तँ बीचमे गप-सप्प करैक समय भेटिये जाएत।”

गपे-सप्पक बेवसायी छलानन्द बनियेँ गेल छैथ तँए सहमत होइमे कोनो बाधा बीचमे नहियेँ छेलैन। छलानन्द बजला- “बड़-बढ़ियाँ चलू, पानि तँ कोनो पनिबट्टे बहैए किने। माने, काज तँ अपने रस्तासँ ने चलत।”

ओना, विचारदेवकेँ मनमे एकटा बात बेर-बेर खटकए लगलैन जे छलानन्दकेँ टोकब, चूक भेल। अनुमण्डल कार्यालय कि अपन दरबज्जा छी जे कियो एला तँ मान-अपमानक विचार लोक करत। ई तँ अनुमण्डल कार्यलय छी, भरि अनुमण्डलक लोक अपना-अपना काजे अपना-अपना ऑफिस अबै छैथ। मनपर जोर देलैन तँ विचारदेवकेँ भान भेलैन जे जहिना तीस बर्खसँ छलानन्द नहि भेटल छला तहिना बुझितौं जे आइयो नहि भेँट भेला। विचारो विचारक तँ ई दुनियाँ छीहे। मनुखक रंग-रूप ने, माने ऊपरका रंग-रूप किए ने पुरबते हुअए मुदा भीतुरका रंग-रूप कृति-विहीन अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। दुनियाँक दू रूप अछिए। जखने दू रूप अछि तखने ने सभ किछु दू रंगक हेबे करत। जे कियो छलानन्दक भीतुरका रूप चिन्हैबला छैथ ओ जँ छलानन्दक संग देखता तँ मने मन हमरा की बुझता। मुदा हाथी सन चारि पैरबला सेहो जखन हूसि सकैए तखन मनुख तँ सहजे दू पैरबला अछि। तहूमे माइटिक तरमे जँ गाड़ल रहैत तँ कनी सक्कतो आ सोझो-साझ रहैत मुदा सेहो ने अछि, अछि सोलहन्नी माइटिक ऊपरेमे तरबा-बले ठाढ़..!

रजिष्ट्री ऑफिसक मुहेँपर देवन मुंशी भेँट भऽ गेलैन। देवन मुंशीकेँ रजिष्ट्री ऑफिसमे अपन खास पहचान छैन। चपरासीसँ हाकिम धरि देवन

मुंशीकेँ इमानदारो आ सोझमतियो बुझिते छैन जइसँ सबहक मनमे असीम आदरो आ सिनेहो बनले छैन। यएह छी मनुखक चरित्रबल, जे मनुखक धरोहर सम्पैत सेहो छीहे। देवन मुंशीकेँ विचारदेव कहखिन-

“मुंशीजी! एकटा पुरान अपेछित भेँट भऽ गेला अछि दुनू गोरेक बीच बहुत दिनक गप-सप्प पछुआएल अछि। जँ ऑफिसक काज हुअए तँ पहिने सएह करैत निचेनसँ गप-सप्प करब नहि जँ ऑफिसक काजमे बिलम हएत तँ पहिने दुनू भैयारी केतौ बैस गपे-सप्प कऽ लइतौं?”

अपन चरित्रक बल देवन मुंशीकेँ रहने बेकतीत्वक बलक बिसवास मनमे छैन्हे। बजला-

“विचार भाय, साढ़े चारि बजे तक ऑफिस चलैए। पनरह मिनटक काज अछि तँए अहाँकेँ सबा चारियो बजे तक रहलासँ काज चलिये सकैए।”

ओना, छलानन्दक मनमे अपन विचारक दशा-दिशा छेलैन आ विचारदेवक मनमे अप्पन, तँए केतए बैस कऽ गप-सप्प करब तइमे विचार भिन्नता दुनूक बीच छेलैन्हे। छलानन्दक मनमे छेलैन जे चाहक दोकानपर दस-पाँच गोरे रहबे करै छैथ, तइ बीच विचारदेवकेँ मुड़ियबैमे बेसी बाधा नहियेँ हएत तँए चाहक दोकानपर चाहक बहन्ने अपनो विचार ससारि लेब। मुदा विचारदेवक जहिना मनुखक इमान ढहने आक्रोशक तरंग उठैत रहैए तहिना उठि रहल छेलैन। जइसँ आगूमे दुनूक दिशा देखि रहल छला। अपन मनक बात उझैल छलानन्दक मुँहपर थुकब छेलैन मुदा तइले ओहन स्थानपर बैस गप-सप्प करब नीक बुझैथ जैठाम दुइये गोरे होइथ किएक तँ बेसी लोकमे विचारक रूपे बदैल जाइए जइसँ विवाद अगुआ विचारमे मोड़ आनि दइए...। विचारदेव बजला-

“छला भाय, केतए बैस गप-सप्प करब?”

छलानन्द बजला- “ईहो कोनो कि बड़ भारी विचारक बात भेल,

कोट-कचहरीमे चाहक दोकान तँ सभसँ बढ़ियाँ अछिए।"

ओना, छलानन्दक धुर्तइपर विचारदेवक मन भरमै छेलैन जइसँ आक्रोशक लहैर रसे-रसे जगजियारे भेल जा रहल छेलैन मुदा तेकरा गनगुआइर साँप जकाँ, माने जहिना गनगुआइर साँप अपन ओहन विषकेँ जे गहुमन साँपकेँ खा कऽ पचा सकैए तहिना पचबैत मिरमिराइत बजला-

"छला भाय, जखन तीस बर्खक गप-सप्प बाँकी अछि तखन ओइ बीचमे नीक-बेजाए सभ रंगक ने गपो अछि आ काजो अछि, तेकरा जँ दुइये भैयारीमे सुनब से बेसी नीक हएत। तँए दछिनवारि कात जे पीपरक गाछ अछि, तैठाम बैस गप-सप्प करब बेसी नीक हएत।"

जे विचार विचारदेवक मनमे छेलैन तैठाम छलानन्दक नजैर पहुँचबे ने केलैन तँए सहमत होइत बजला-

"चलू, पानो तँ अखने खेलौं हेन। जाबे मुँहक पान सठत ताबे गपो-सप्प भइये जाएत।"

पीपरक गाछक निच्चाँ बैसते जेना ऑक्सीजन भरल हवाक साँस विचारदेवक सगर शरीर लेलकैन तहिना प्राणवायु तेज भऽ गेलैन जइसँ प्रणशक्ति उमैक उठलैन। एकान्त देखि आकि अपन बेवसाय देखि छलानन्द बजैक क्रम बनौलैन आकि की से तँ ओ जानैथ मुदा बैसते बजला-

"विचार भाय, कोट-कचहरीक जँ कोनो काज हुअए तँ कहब। अपने ऑफिस बुझू, हाथक हाथ काज हएत।"

छलानन्दक बात सुनि विचारदेवक मन छिलैक उठलैन। छिलैकते मनमे पूर्वकृत्त जगलैन। पूर्वकृत्त ई जे जखन कौलेजमे दुनू गोरे माने छलानन्दो आ अपनो पढ़ै छेलौं तहियेक जीवनक घटना छी। जाति प्रमाण-पत्र आ आय प्रमाण-पत्रक काजसँ जखन अहीठाम दुनू गोरे आएल रही आ सात दिन दौड़-बरहा केलाक पछातियो काज नहि भेल

छेलए तखन की नौबत भेल छल..! भरिसक छलानन्द सभ बिसैर गेल। विचारदेव अपन शान्त-चित्त चेतन विचार दैत बजला-

"छला भाय, सत्तैर सालक आजादीक पछातियो जँ सरकारी कार्यालय अपन नहि भेल तखन आजादी की भेटल।"

ओना, विचारदेव अपन मनक अनुकूल विचार सेहो रखलैन मुदा चौक-चौराहापर बैसनिहार छलानन्द विचारक गम्भीरता नहि बुझि बजला-

"ऐठाम, जेतेक अफसरसँ लऽ कऽ चपरासी तक छैथ सभ अपने लोक छैथ तँए अपना काजमे केतौ रोक-टोक थोड़े हएत।"

मनक विचार बदलैत विचारदेव बजला-

"देस-कोसक की हाल-चाल अछि छला भाय?"

जेना मनक जन-जागृत विचार छलानन्दक छेलैन तहिना नमहर छड़पान छड़पैत बजला-

"अखन धरिक जीवनक सभसँ अनुकूल परिस्थिति देशक बनि गेल अछि।"

छलानन्दक मुँहक अनुकूल परिस्थिति सुनि विचारदेवक मन विचारक दुनियाँमे चकभौर लेलकैन। चकभौर ई लेलकैन जे देशक एहेन परिस्थिति बनि गेल अछि जे सबहक हाथक काज छीना रहल अछि, लोकक बेकारी बढ़ि रहल अछि आ छलानन्द बाजि रहल छैथ जे अनुकूल परिस्थिति अछि! विचारक दूरी देखि विचारदेव मनपर जोर देलैन तँ बुझि पड़लैन जे जहिना छलानन्द शुरूमे भाषाक जाल पसारि नेतागिरी शुरू केलैन भरिसक ओ चालि अखनो धरि ओहिना धेने छैन!! वएह लच्छेदार भाषण गमैआ भाषासँ कोसो दूर..! जइ जन-गणकेँ जगा अपन जीवन आ शासन सत्तासँ अवगत कराएब अछि तेकरा भाषाक मुखारी बान्हि तेना दूर कऽ देब जे अपन वास्तविको दूरीसँ दूर हटा देब। तैबीच हाथक

घड़ीपर विचारदेवक नजैर गेलैन। लगिचाएल समय देखि माने रजिष्ट्री ऑफिसक, अपन विचारकेँ लगिचियबैत विचारदेव बजला-

"छला भाय, छोड़ू देश-दुनियाँक बात अपन जीवनक हाल-चाल कहू?"

अपन जीवनक हाल-चाल-दे सुनि छलानन्दक मन ओहिना कोढ़ियासँ बतिया गेलैन जेना गाछमे कोढ़ी-सँ-बाती होइए। छलानन्दकेँ एकाएक जेना जीवनक कोनो शुभ सन्देश भेट गेल होनि तहिना बजला-

"विचारदेव भाय, अपन देश अपन समाज अदौसँ धर्मक रस्ता पकैड़ जहिना दुनियाँमे अपन हस्ती बरकरार रखैत आबि रहल अछि तहिना ने आजुक परिवेशमे सेहो अनिवार्य भइये गेल अछि।"

छलानन्दक विचार सुनि विचारदेवक मनमे जेना तीन दिससँ तीनटा गोलाक चोट एक्केबरे लगि गेल होनि तहिना भेलैन। तीन चोटक माने भेल सत्ता, सामाजिक विचारधारा आ समाजक नेतृत्व करैबलाक नेत-गिरी। तीनू विचार विचारदेवक मनमे ओहिना घोर-मट्ठा कऽ देलकैन जेना जूड़शीतल पाबैन दिन धिया-पुता डोह-डाबर वा मरैत पोखैरक माटि-पानिकेँ गील थाल बना दइए। मुदा विचारक लम्बाइ-चौड़ाइ आ समैयक संकीर्णताक बीच सामंजस करैत विचारदेव बजला-

"भाय छला, सभ दिनसँ छल-प्रपंच छलि-छलि दुधमुँह जन-गणकेँ छलैत छिछलबैत अनलक अछि आ अखनो, माने एक्कैसमो सदीमे सहए कऽ रहल अछि। वाह रे जुग आ वाह रे जुगक धर्म आ वाह रे जुग निर्माणकर्त्ता..!"

बिच्चेमे छलानन्द बजला-

"से की विचार भाय?"

विचारदेव बजला-

"दुनू गोरे संगे ने एक्के कौलेजसँ इतिहास विषयमे ऑनर्सक संग

बी.ए. पास केने छी।”

छलानन्द बजला- “हँ, कनियेँ पैरबी हमरा सुतरल तँए अहाँसँ पाँच नम्बर बेसी हमरा ऑनर्समे आबि गेल मुदा अहाँ हमरासँ बेसी मेहनत करै छेलौं से केना सोझामे नकारब।”

विचारदेव-

“ओइ बातकेँ छोड़ू! जेकरा जे मन मानैए से से करैए। ई तँ बुझले अछि ने जे सामाजिक गुलामीसँ लऽ कऽ देश धरि हजारो बर्खसँ गुलाम रहल अछि?”

मुड़ी डोलबैत छलानन्द बजला-

“हँ।”

विचारदेव-

“देशक जन-गण सशक्त छल तँए गुलाम रहल आकि आनो-आन कारण सभ गुलामीक तेहेन पोषक छल जे बान्हि-छान्हि ओकरा गुलाम बनौने रहल?”

विचारदेवक बात सुनि छलानन्द ठमकला। छलानन्दकेँ ठमैकते विचारदेवक मनमे उठलैन जे जेतबे समय अछि तहीमे सभ बात किए ने छलानन्दकेँ मुँहपर कहि थूकि दिऐ। मुँहपर थुकैक कारण विचारदेवक मनमे जोर-सोरसँ ई उठि गेल छेलैन जे धर्मनिर्पेक्ष समाजक चर्च जे दिन-राति करै छला ओ आइ सम्प्रादायिकताक आड़मे अपनाकेँ जीतल रूप देखि रहला अछि..! विचारदेव बजला- “भाय! आब समय लगिचा गेलह तँए बैसारकेँ विसर्जन करैत उपसंहार सुनि लाएह- आध्यात्मवादी जहिना अध्यात्मकेँ आगूमे ठाढ़ करैत अध-आत्मी बनि जन-गणकेँ छलि रहल अछि तहिना तोंहू कऽ रहल छह।”

विचारदेवक विचार जेना छलानन्दक हृदयकेँ छलनी बना देलक तहिना छलानन्द छल-छला उठला। छलछलाइत छलानन्दक मुहसँ

बकार फुटब बन्न भऽ गेल।

एकतरफा विचारदेव बजला-

“छला भाय, जहिना अपन इतिहास गौरवशाली अछि तहिना गौरवशाली इतिहास भंगी माने इतिहासकेँ भंग करैबला सेहो रहल अछि। जहिना गौरवशाली आध्यात्मिक विचार रहल अछि तहिना आध्यात्मिक धाराकेँ धाराशायी करैबलाक गौरवशाली इतिहास सेहो रहल अछि तँए अखन एतबे। सबा चारि बाजि गेल। जइ काजे आएल छी से ने प्रमुख भेल।”



शब्द संख्या : 2255, तिथि : 25 फरवरी 2020

अग्नि-परीछा

एक-सबा माससँ सुधीर नहि भेटल छल तँए मनमे बेर-बेर उठि रहल छल जे भरिसक सुधीर ओहन काज सभमे फँसि गेल अछि जइसँ अवकाश नहि भेटने नहि आएल अछि। जँ से नहि रहैत तँ जहिना सभ दिन वा नइ सभ दिन तँ तेसरा दिनपर भेँट भइये जाइ छल तहिना ने होइत। लगले मनमे विचार आगू बढ़ल। आगू बढ़िते विचार जगल जे जखन सुधीरक संग भैयारीक सम्बन्ध समाजमे अछि तखन तँ जहिना अपन परिवार तहिना ने सुधीरोक परिवार भेल। आब कि ओ जुग-जमाना रहल जे राहड़िक खेती होइत रहै जे आँखिसँ लोक देखतो छल आ मुहसँ खाइतो छल। तेतबे नहि, आमील देल रोड़ियाएल दालि वा रोड़ियाएल उसना खा-खा ढकैर कऽ बजितो छल जे 'भैयारी आ दियादी राहड़िक दालि जकाँ जेतेक गलैए तेतेक ओइमे बेसी सुआद होइ छै..!' आब तँ लोक भैयारीसँ आगू बढ़ि माए-बापकेँ जहिना बीरान बुझए लगल अछि तहिना गर्भ-गर्भित बच्चाकेँ सेहो बुझिये रहल अछि; बुझबे टा नहि करैए अपन इश्कक चलैत कइयो रहले अछि। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए अछि तेतुक्का लोक अपन माला अपने गरदैनमे पहिरह। दुनियाँ कि हमरे ठीकेदारीमे चलि रहल अछि जे ओभरसियर आकि इंजीनियर हिसाब माँगत। अपन तन अछि, तनमे अपन मन अछि, मनमे संकल्प अछि संकल्पमे धारण अछि धारणमे जीवन अछि, जीवनमे जिनगी अछि जेकरा सभ अपन-अपन सीमा-रेखा खींच जीब रहले अछि।

एकाएक मनक इच्छा प्रवल भेल। कहब जे इच्छा कि कोनो नीक

भाव वा वस्तु छी जे अनेरे मनमे उठल आ ओकरा पाछू दौड़ गेलौं? मुदा नहि, इच्छोमे 'कुइच्छा' सेहो रहैए आ 'सुइच्छा' सेहो रहिते अछि। भाय, जखन एक समाजमे–माने एक गाममे–भैयारी रूपमे सुधीर अछि तखन जँ ओ कोनो कारणे नहि आबि भेँट कऽ सकल तँ अपने किए ने सुधीरे ऐठाम पहुँच समय-सालक समाचार बुझी..! मन मानि गेल जे सुधीरसँ भेँट करब औझुका जिनगीक पहिल कर्म भेल।

चाह नइ पीने रही किए तँ सुति कऽ उठले रही, ओना मनमे बिसवास अछिए जे जखने सुधीर ऐठाम जाएब आकि सुनीति सभ काज छोड़ि हमरे आगत-भागतमे जहिना सभ दिनसँ लगैत आबि रहली हेन तहिना लागि जेती, तँए ओइठाम पहुँचबे देरी अछि, चाह भेटिये जाएत। मुदा अपना ऐठामक चाहक समयसँ पाँच मिनट आगू बढ़ि गेल छल, पछुआएल काज देखि पुराइये कऽ निकलब ने कर्तव्य भेल। संजोग बनल पत्नी चाह नेने पहुँच बजली-

"चुल्हि सुनगैमे कनी देरी भऽ गेल तँए... ।"

एक तँ पाँचे मिनटक बिलम समय, दोसर जखन पत्नी अपने मुहेँ कबुल लेली तखन अनेरे मन गरमा पत्नीकेँ किछु कहिऐन सेहो केहेन हएत। चाह पीबैत-पीबैत मनमे जागि गेल जे पत्नीकेँ कहि दिऐन जे 'सुधीर बहुत दिनसँ भेँट नहि भेल अछि तँए पहिने कनी ओकरासँ भेँट केने अबै छी।' मुदा अपने मन मनाही केलक जे ऐ ले पत्नीसँ पुछैक आकि आदेश लइक खगता कोन अछि। अपनो जीवनक क्रिया अछि आ हुनको अपन जीवन-क्रिया छैन्हे। माने जखन परिवारमे काजक विभाजित रेखा स्पष्ट अछि तखन ओ किए हमरा पुछि कऽ किछु करती आकि हमहीं हुनका पुछि करी। बेकतीगत जीवनक अपन-अपन काज अछिए जेकरा स्वतंत्र भऽ निमाहैक अछि जइसँ परिवारक पाया मजगूत बनल रहत। रहल ओहन काज जे दुनूक बीच सम्मिलित रूपमे अछि। मुदा तेकरो तँ करैसँ पहिनहि–माने काजमे हाथ लगबैसँ पूर्वे दुनू बेकती

'करबक विचार रेखा' खींच अपन-अपन क्षमतानुसार हाथ लगाएब। यएह ने स्वतंत्र जिनगीक पारिवारिक डायग्राम भेल। जँ से नहि भेल आ काजक बँटवारा करि करैक जिम्मा देलाक पछातियो जँ बेर-बेर खोंचारन चलत तँ यएह ने परतंत्रताक पहिल आधार भेल। पत्नी होथि आकि बाले-बच्चा किनको काजक जिम्मा देला पछाइत काजक निर्धारित समय पुरलापर काजक जानकारी लेब एक गार्जनक दायित्व सेहो भेल, मुदा काजक बीचमे टोका-टोकी करब भलेँ चरियाएबो किए ने कहल जाए मुदा काजक बीच बाधा उपस्थित करब नहि भेल सेहो तँ नहियेँ मानल जा सकैए। ओना, पत्नियोँ ओहन अभ्यस्त नहियेँ छैथ जे आन-आनक पत्नी जकाँ अगुरबारे तगेदा करैत पुछती जे केतए जाएब वा की करब वा फल्लाँ काज करू।

चाह पीब अपने सुधीरसँ भेँट करए विदा भेलौं आ पत्नी अपन घरक काजमे लागि गेली। रस्ता चढ़िते मनमे सुधीरक प्रति रंग-बिरंगक अनेको प्रश्न उठि गेल। उठबो केना ने करैत, कोनो काज करैसँ पहिने जँ एकाग्र भऽ ओइ काजक रूपो-रेखा आ हानियो-लाभ विचारि ली तँ ओइ काजक सफलताक शत-प्रतिशत जँ नहियोँ तँ पनचानबे-छियानबे प्रतिशत आशा बनिते अछि। भेल तँ कोनो काजक संकल्प लेला पछाइत ओइ काजमे तन-मन-धनक सहयोग लैत करबे ने काजक बफादारियो भेल आ कर्मकारीक कर्मकारो भेलौं। जँ से नहि जीवन बना सकलौं तँ अकासक फुलवारीसँ फूल लोढ़ि अकासदेवकेँ पूजबे ने हएत।

सुधीरक प्रति जे रंग-बिरंगक विचार जगल तइमे रंगक विचार बेसी आ बिरंगक विचार कम जगल। ओना जीवन काँच सूत जकाँ होइते अछि जे करखनो मसैक कऽ भसैक सकैए मुदा तेकरो सम्भावना सभठाम नहियेँ अछि, किए तँ ओ निर्भर करैए जीवनक सूत्रधारपर। जेहेन सूत्रधार रहैए तेहने सूतकेँ ने सुतियबैत अपन जीवन-जाल बुनैए। सुधीरक प्रति विचार जगल जे भरिसक सुधीर जीवनक कोनो उकड़ू काजमे ओझरा

गेल अछि जइसँ भेँट नहि भऽ रहल अछि..! मुदा लगले मन मर्दन करैत कहलक जे सुधीर कि कोनो अनाड़ी खेलाड़ अछि जे अमती काँटक झाड़मे वा मकड़जालमे ओझरा जाएत। ओ तँ जिवनी खेलाड़ अछि जे जीवनकेँ रत्ती-मासासँ तौल अपन काजकेँ खण्ड-खण्ड करैत घरक ठाठ जकाँ एक-एक कोरो-बातीकेँ सुतिया कऽ बान्हि ताधैर गीरह नहि दइए जाधैर मनक कल्पना भोरक सपना बनि साकार नहि होइए। विचार आगू बढ़ि सुधीरक दोसर अंग दिस बढ़िये रहल छल कि पाछूसँ अबैत सुधीरक छोट भाए- बिसवास लालपर नजैर पड़ल। बिसवास लालपर नजैर पड़िते डेग ठामहि रूकि गेल। मनमे उठल ई तँ नीक अवसर अछि जे पाछूसँ अबैत बिसवास लालसँ सुधीरक जानकारी लैत सुधीर लगतक पहुँचब..! चारि लग्गा बिसवास लाल पाछूए छल कि पुछलिऐ- "बौआ, भोरे-भोर केतौ अन्तएसँ अबै छह?"

बिसवास लाल बाजल- "आन गामसँ तँ नहि मुदा दछिनवाइर टोल काजे गेल छेलौं, सएह घुमलौं हेन।"

ओना, बीस-बाइस बर्खक बिसवास लाल अछि मुदा सभ दिनसँ जे बच्चा बुझैत ऐलिऐ से अखनो बुझिते छी। बच्चेमे ने कियो अपन जिनगीकेँ बचिया-बाँचि आगू दिस बढ़ैए। जहिना रंग-बिरंगक वस्तुसँ दुनियाँ भरल अछि तहिना ने रंग-बिरंगक विचारो भरमैए माने भ्रमण करैए आ ओही बीच ने बच्चो आ सियानो अपन भरमैत विचारकेँ पकैड़ चलिते अछि। मुदा से नहि, बच्चा रहितो बिसवास लालकेँ अपन जीवनक मान-दण्ड छइ। किनका संग केहेन सम्बन्ध अछि आ ओइ सम्बन्धकेँ सम्बन्धित बनि केना निमरजना करैक अछि से बिसवास लालकेँ अछिए। पुछलिऐ- "बौआ, भाय साहैब गाममे छथुन की नहि?"

पुछैक कारण छल जे सुधीर अपने तँ डॉक्टर ऐठाम अपना काजे कम जाइए, किए तँ ओ शरीर आ आत्माक सम्बन्ध एक सूत्रमे बन्हने रहए, दुनूक जोग क्रिया बनल रहए तइले सतत् सचेष्ट रहिते अछि। मुदा

गामो तँ गाम छी एक दिस ज्ञानवानसँ भरल अछि तँ दोसर दिस दर्जनो अज्ञानवानक सृजनो प्रतिदिन भइये रहल अछि आ अज्ञानियो महाअज्ञानी दिस सेहो बढ़िते अछि। जखने अज्ञान ज्ञान बीच आ ज्ञान अज्ञानक बीच बसत तखने बेर-बेर उट-पटाँग नइ हएत सेहो बात नहियेँ अछि। तँए अनके-अनके काजे माने आने-आनक काजे सुधीर महिनामे तीन-चारि बेर लहेरियासराय अस्पतालो आ डॉक्टरो ऐठाम जाइते अछि। बिसवास लाल बाजल- "हँ!"

बिसवास लालक मुहसँ 'हँ' सुनि सुधीरसँ भेँट हेबाक आशाक बिसवास तँ जगिये गेल मुदा तैसंग ईहो आशा जागल जे किए ने बिसवासे लालसँ भाँज लगा ली जे अखन कोन काजक धुमसाहीमे सुधीर पड़ल अछि जे मास-सबा-माससँ भेँट नहि भेल। मुदा लगले मनक विचारमे सुधार भेल जे जे काज आँखिसँ देखैबला अछि से भाँज जँ अधा-छिधा लगियो जाएत तैयो मनक भीतरक जे काज–मानसिक वा भाविक–अछि तेकर भाँज थोड़े लागत। ओना, ऐ विचारसँ मन पाछू हटए लगल मुदा दोसर विचार जोर मारलक जे एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे एक परिवारक सहोदर भैयारीक बात छी, जँ परिवारजन मिलि कोनो काजक निस्पादन करैत हुअए तखन तँ सोल्होअना भाँजपर चढ़ैक सम्भावना बनिते अछि। तैबीच संगे-संग माने अपनो आ बिसवासो लाल किछु डेग आगू बढ़िये गेल छेलौं। सामंजस करैत बजलौं- "बौआ, परिवारक समाचार बढ़ियाँ छह किने?"

जहिना पीतमरू लोक अपन काजमे अन्न-पानि छोड़ि जी-जान गमौने रहैए तहिना विचारवानो ने अपन विचारक पाछू जी-जान लगेलाक पछातियो दोसरकेँ किछु नहि कहि ताधैर आनक सहयोगक आशा नहि करैए जाधैर अपन सफलताक आशा जागृतावस्थामे रहै छै। एक्के पाँतिमे बिसवास लाल उत्तर देलक-

"हँ, सभ बढ़ियाँ अछि।"

ओना, बिसवास लालक बात सुनि मनमे एते बिसवास तँ बनियेँ गेल जे सुधीर आँगे-समाँग नीक अछि। मुदा नीक जखन अछि तखन एते दिनक बीच भेँट किए ने भेल? मनमे दोसर-तेसर विचार जागए लगल। एक तँ बिसवास लालकेँ बच्चा बुझै छी जे परिवारक सभ बात बुझितो ने हएत। मुदा सुधीर तँ से नहि छी ओ तँ परिवारक मेहथान छी; माने घरक संचालक छी। एहनो तँ सम्भव अछिए जे परिवारजनसँ सुधीर बेकता-बेकती ओतबे सम्बन्ध बना चलैत हुअए जेते सम्बन्धसँ ओ सम्बन्धित हुअए। लगले मनमे भेल जे पाइ-पाइक जोड़-जोग भेने रुपैआ बनि जाइए, पजेबा-पजेबाक जोड़-जोगसँ घर बनि जाइए तहिना जँ गप-सप्पक क्रममे किछु नव-नव विचार भेटैत जाएत तँ ओही जोड़-जोगसँ ने सभ अनुमानो लगिये जाएत। भेल तँ जँ अधो-छिधो सही अनुमान भेट गेल तँ बाँकी जहिना कुम्हार काँच माइटिक बरतन गढ़ि पक्का कऽ बना लइए तहिना अपनो मनकेँ मना पक्का बना लेब। मुदा से सभ विचार रस्तेमे गड़बड़ा गेल। गड़बड़ाएल ई जे थोड़ेबे आगू बढ़ला पछाइत बिसवास लाल बाजल-

"भाय साहैब! हम दोसरो काजे निकलल छी, ऐठामसँ दोसर दिसक रस्ता धड़ब।"

एते काल जे मनमे छल जे रस्तामे सुधीरक सम्बन्धमे बिसवास लालसँ सभ समाचारक भाँज लगि जाएत से नइ भेल। बजलौं-

"जखन काजे संकल्पित छह तखन तोरा थोड़े कहबह जे संगे-संग घरपर तक चलह।"

बिसवास लाल बिच्चेमे बाजल-

"भाय साहैब, भैया घरेपर छैथ पहुँचते भेँट भऽ जेता।"

कहि बिसवास लाल अपन रस्ता कटलक आ अपने आगू बढ़लौं। असगर बटोहीक मनमे जहिना रस्ता-पेड़ाक रंग-रंग वस्तु देखि रंग-रंगक विचार जगैए तहिना अपनो भेल। अपनेपर शंका हुअ लगल जे सुधीरकेँ

कहीं हमरेसँ ने तँ किछु भऽ गेलै जइ क्रोधे आएब-जाएब छोड़लक वा हमर विचारक कारीपन देखि-देखि राक्षस बुझि मुँह देखबकेँ अशुभ बुझैए। आगूओ बढ़ी आ मनमे ईहो हुअए जे घुमि जाइ। मुदा बटोहीक घुमबाक ठौर जहिना कोनो चौक-चौराहा वा अपन गन्तव्य जगहपर पहुँचला पछाइत होइए तेना तँ अपने किछु नहि भेल, ने चौके-चौराहा बीचमे अछि जे चाह-पान खा-पीब घुमि जाएब आ ने अपन गन्तव्ये जगहपर पहुँचलौं जे घुमितौं। अधरस्तासँ घुमने अनेरे ने लोक कहत जे मतिछिन्नू अछि। ओना, डेग रसे-रसे आगूए दिस बढ़ैत रहए मुदा मनक घुरियान सेहो चारू दिस घुमैत रहल। की करी, की नइ करी से किछु फुरिये ने रहल छल।

अपन दरबज्जाक आगूमे सुधीरकेँ ठाढ़ देखि मनक सभ विष-विषाद एकाएक तर पड़ि गेल। तैबीच सुधीरे आगूसँ बाजल-

"गोड़ लगै छी भाय साहैब! किमहर-किमहर सवारी चललै हेन?"

जहिना भनसिया एक्के दाबिये चुल्हिपर चढ़ल अनेको बरतनकेँ लाड़ै-चाड़ैए तहिना सुधीरक विचार बुझि पड़ल। मुदा किछु अछि तँ भाए तुल्य अछि तँए अपनाकेँ संयमित करैत बजलौं-

"बौआ, तोरासँ भेँट भेना बहुत दिन भऽ गेल छल तँए मन उबियए लगल। तोरेसँ भेँट करए एलौं अछि।"

सुधीर बाजल- "भाय साहैब, हम तँ दोहरी फेड़मे पड़ि गेल छी तँए समैयक अभाव दुआरे अहाँ ऐठाम नइ जा होइ छल, काल्हिसँ कनी निचेन भेलौं हेन। आइ विचार करै छेलौं जे अहाँसँ भेँट करी।"

दरबज्जाक चौकीपर बैसबैत सुधीर आँगन जा पत्नीकेँ चाह बनबए कहि लोटामे पानि नेने दरबज्जापर पहुँच लगमे बैसल। ओना, सुधीरक बात सुनि मन मानियेँ गेल छल जे सुधीर काजमे ओझरेने भेँट नहि होइ छल, तँए दोसर जेतेक कारण मनमे छल सभटा अपने निर्मूल भेने मनेमे समाप्त भऽ गेल। तैबीच सुधीरक जेठकी बेटी सुकृत्तिया चाह नेने

दरबज्जापर पहुँचल। बेटीक हाथसँ चाह लऽ सुधीर हमरो हाथमे धरौलक आ अपनो लेलक। दुनू गोरे चाह पीबए लगलौं। अधा चाह गिलासक सठि गेल मुदा गप-सप्प किछु उठबे ने कएल। पुछलिऐ-

“केहेन दोहरी काजमे फँसि गेल छेलह सुधीर?”

गाममे जँ कियो हमरा चिन्हैए तँ सुधीर चिन्हैए, माने कोन कदरक लोक हम छी से सभ थोड़े चिन्हैए। चीन-पहचीन दैत सुधीर बाजल-

“भाय साहैब, गाममे रहितो अहाँ जकाँ गामसँ हम हटल नइ ने छी। समाजमे छी, सामाजिक लोक भेने अनेको काज समाजक सिरचढ़ रहिते अछि। पैछला दू मासक बीच गाममे की सभ भेल अछि से नीक जकाँ अहाँकेँ बुझल अछि?”

बजलौं- “नइ!”

ओना, सुधीरक विचारक प्रवाहमे मुहसँ ‘नइ’ निकैल गेल मुदा पाछू उनैट तकलौं तँ बुझि पड़ल जे धोखामे ‘नइ’ कहा गेल। गामे छी हजारो लोक अछि हजारो रंगक काज अछि। तइमे भलेँ सभ काज नइ बुझल हुअए मुदा किछु ने बुझल अछि से तँ धोखामे कहेबे कएल किने। ओना, पैछला दू माससँ अधासँ बेसी समय गामसँ बाहरे रहलौं तँए मुहसँ ‘नइ’ निकैल गेल।

सुधीर गम्भीर होइत बाजल-

“भाय साहैब, पैछला डेढ़ मासक सभ वृतान्त कहि दइ छी।”

सुधीरक मुहसँ ‘पैछला डेढ़ मासक वृतान्त कहि दइ छी’ सुनि मन हलैस गेल जे बीचमे जेतेक दिनसँ सुधीर नइ भेटल छल से सभ बातक भाँज बुझिये लेब। सामंजस करैत बजलौं- “सुधीर, जहिना तोरा घर-बाहरक काज सदिकाल रहै छह तेना तँ अपना नइ अछि मुदा दू गोरेक भेँटक बीच दुनूक समैयोक मिलानी तँ चाहबे करी, भरिसक दुनू गोरेक बीच सहए भेल तँए एते दिनक बाद भेँट भेल।”

दुनू गोरेक बीच विचारक वातावरण बनियेँ गेल। सुधीर बाजल-

“भाय साहैब, वृन्दावनसँ एकटा व्यासजी एला। टोलक लोक सभ विचार केलैन जे सात दिन भागवत कथा हुअए। लगले सूरे सभ भार उठा लेलैन। संजोग एहेन भेल जे गामक भागवत कथा नहि भऽ टोलक भऽ गेल। माने समाजक नहि भऽ एक जाइतिक भागवत भऽ गेल। जइसँ आन टोल माने आन जातिक टोलमे जानकारी नइ देल गेल। अहूँ छुटि गेलौं।”

ओना, दुनू गोरेमे माने हमरा आ सुधीरक बीच विचारक एकरूपता रहने काजोक एकरूपता अछिए मुदा ऐठाम ओहन विचार फँसि गेल जइसँ सुधीर हमरोसँ दूर भऽ गेल। ओ भेल जे आन टोलक माने आन जातिक जँ किनको एक बेकतीकेँ भागवत सुनैक हकार देल जेतैन तँ दोसरोकेँ किए ने देल जेतैन। बजलौं-

“जे समय बीतल आ ओइमे जँ किछु भूल-चूक वा गलती भेल ओकर तँ प्रायश्चिते उपाय अछि। नइ तँ मनमे सड़ैन करत। खाएर जे भेल से नीके भेल।”

हमर बात सुनि सुधीरक मनक बोझ जेना उतैर गेल होइ तहिना बुझि पड़ल। सुधीर बाजल-

“जहिना टोलक सभ माने टोलक सभ परिवार एकमुँहरी भऽ भागवत कथा सुनैक दिशामे अगुएला तहिना अन्तो-अन्त तक माने सातो दिन धरि बनल रहला; जे टोलक कहियौ आकि समाजक पैघ उपलब्धि तँ भेबे कएल।”

नीककेँ नीक आ अधलाकेँ अधला जखन सामुहिक रूपमे धड़त तखन ने ओ धाराक रूपमे धारण करैत धार बनि धड़धड़ाइत बहत। बजलौं- “वाह! वाह!! नीक उपलब्धि भेल।”

‘नीक उपलब्धि’ सुनि सुधीरक मन जेना विसाइन हुअ लगलै

तहिना बुझि पड़ल। सुधीरक विसविसाएल मन देखि अपनो मनमे जेना विसविसी उठए लगल। दोहरा कऽ बजलौं-

“बौआ सुधीर, नीकेमे अधलो छीपल अछि आ अधलेमे नीको ने छीपल अछि, तँए सातो दिनक सम्पूर्ण बात कहऽ जे केना-केना भेल।”

‘भागवत कथाक सातो दिनक बात कहऽ’ सुनि आकि ‘सम्पूर्ण बात’ सुनि सुधीरक मन जेना बदलल। जइसँ मनक विषादमे कम-कमी आएल। बाजल-

“भाय साहैब, जहिना टोलक समाज एकमुँहरी विचार केलैन तहिना एकमुँहरी बेवस्थो केलैन जइसँ जहिना भागवत कथाक संकल्प लेल गेल तहिना विसर्जने तक निमहबो कएल।”

सुधीरक विचार सुनि मनमे भेल जे जँ सातो दिनक वृतान्त सुनए लगब तखन तँ सात दिन लगि जाएत। किए तँ बेवस्थासँ प्रवचन धरि दोहरी रूपमे चलल अछिए तँए नीक हएत जे संक्षेपेमे किए ने सुनी। बजलौं-

“सुधीर सभ बात जे फरिछा कऽ कहबह ओते सुनैक समय नहि अछि। तँए मुख्य-मुख्य बातटा कहऽ।”

सुधीरो जेना बुझि गेल। बाजल- “भाय साहैब, जखने व्यासजी संकल्पक संग आसनपर बैस मुँह खोललैन कि पहिल शब्द ‘सज्जन वृन्द’ निकललैन।”

अनायास मुहसँ निकैल गेल-

“वाह..!”

एक तँ वृन्दावनसँ आएल व्यासजी तैपर सज्जन वृन्द, माने भद्र समूह, भद्र समाजसँ जखन कथा प्रारम्भ केलैन तखन जरूर सुपथ दिशाक बोध सेहो करेबे करता। सुनैले उत्सुकता आरो बढ़ि गेल। सुधीरक आँखिपर आँखि गाड़ि अपन जिज्ञासा जगेलौं। सुधीरो बुझि

गेल। बाजल- "भाय साहैब, अपन वचन शुरू करैसँ पहिने तीनटा संकल्प सुननिहार सभसँ सामुहिक रूपेँ करौल गेल।"

पुछलिऐ-

"तीन संकल्पमे की सभ छल?"

सुधीर बाजल-

"पहिल छल जे 'झूठ नइ बाजी', दोसर छल 'केकरो अधला नइ करी' आ तेसर छल 'मनुख-मनुखक एक जाति अछि तँए कोनो मनुखकेँ अधला वा नीच नइ बुझी।"

तीनू संकल्प सुनि मुहसँ निकैल गेल-

"अति उत्तम संकल्प छल..!"

बजैक क्रममे 'अति उत्तम' बजा तँ गेल मुदा जखन पाछू उनैट तकलौं तखन बुझि पड़ल जे एहेन संकल्प कि धिया-पुताक खेल छी। यएह दू-मुहाँ रूप ने समाजो आ समाजक बीच मनुखोक बीच एते दूरी बनौने अछि जे एक दिस जहिना कियो राजा अछि तँ दोसर दिस रंक सेहो अछि। तहिना एक दिस कियो मालिक अछि तँ दोसर दिस कियो नोकरो अछि। इत्यादि-इत्यादि अनेको दूरी मनुख-मनुखक बीच आइये नहि आदिएसँ होइत आबि रहल अछि...। 'अति उत्तम' सुनि सुधीरक मनमे खुशी नहि विषाक्त उत्पन्न भऽ गेल। विषाक्त उत्पन्न होइक कारण भेलै जे बेवहारिक जिनगीसँ परिचित सुधीरकेँ ऐ बीचक समयमे आरो नव सिरासँ बेवहारक परिचय भेलइ। सुधीर बाजल-

"भाय साहैब, संकल्प लेना आइ मास दिन भऽ गेल मुदा..?"

एते बात तँ बुझले छल जे गामक समाजकेँ वृन्दावनक व्यासजी तीनटा संकल्प करौलैन, मुदा 'मुदा' कहि सुधीर चुप किए भेल। कोनो एहेन विचार जरूर बीचमे अछि जइ खट-दे सुधीर 'मुदा' कहि चुप भऽ गेल। बजलौं- "मुदा की सुधीर?"

'मुदा की' सुनि सुधीर आँखि उठा आँखिपर देलक। सुधीरक आँखिक रूप देखि अपनो मन थकथका गेल। बुझि पड़ल सुधीरक नयन ज्योतिमे असीम वेदनाक लहैर उफैन रहल छै, मुदा ओ वेदना हनुमानक पसेना जकाँ खसाएत केतए से जगहे ने देखि रहल अछि। सुधीर बाजल-

"भाय साहैब, कोनो विचारकेँ उचित महत ओइठाम भेटै छै, जैठाम उचित सुननिहार आ उचित करतो होइथ। उचित सुननिहार ओ भेला जे विचारक मर्मकेँ बुझि मर्माहत होइत भूमिक मर्मकेँ अपनाबैथ। से मास दिनक बीच कियो ने रहला। आइ संयोगे कि सुसंजोगे अपनेक दर्शन भेल, तँए..?"

'तँए' कहि सुधीर चुप भऽ गेल। बीचमे जे किछु बाजल छल ओ तँ सामान्य विचार बनि समाजमे चलिये रहल अछि। मुदा ओइसँ प्रभावित भऽ केते लोक प्रभावक बनल छैथ? सबहक मुहसँ सदिकाल निकैलते छैन जे 'झूठ बाजब पाप छी!' पापे ने नर्कक रस्ता पकड़ा नर्कमे धकेलैए मुदा इमानदारीसँ केतेक लोक एकर निमरजना करै छैथ? जहिना धिया-पुता गीत गाबि-गाबि कहैए जे 'शिकारी औत, जाल बिछौत, दाना देत, लोभसँ ओइमे फँसी नहि।' मुदा मुँहक बात मुहेँमे रहैए आ फँसि जाइए सभ। तहिना ने समाजोक लोकक मुँहमे अछि। गुरु बनि सभ गुरुआइ करिते छैथ जे झूठ बाजब पाप छी, चोइर करब पाप छी, कुदृष्टिसँ केकरो देखब पाप छी..! मुदा बेवहारमे केतेक सही अछि ओ केकरोसँ छीपलो तँ नहियेँ अछि। बजलौं-

"तँए की सुधीर?"

सुधीर बाजल-

"भाय साहैब, जे सभ तीनू संकल्प लेने छला तइमे एको गोरे अपन संकल्पपर ठाढ़ नहि रहला जइसँ समाजमे ने कोनो नव दिशा-बोध भेल आ ने समाजक विचारे वा काजेमे सुधार भेल अछि। तँए अपनो बुझै छी

जे समाजक पाँच हजार रुपैआ माने भागवत कथामे भेल खर्च अनेरे पानिमे फेका गेल..!"

बजलौं-

"सुधीर, अहीले एते व्यग्र छह। समाज सागरोसँ गहींर आ गम्भीर अछि। सागर तँ पाइनिक समूह स्थल छी जेकरा ने बुधि छै आ ने विवेक मुदा समाज तँ से नहि छी। समाज चरिटंगासँ लऽ कऽ बुधि-विवेकबलाक सेहो छीहे। तँए ने कहल जाइए जे 'कियो करै आप-ले माए-ले ने बाप-ले।' जखन अपन-अपन जीवनो आ अपन-अपन जीवनक फलोक मालिक सभ छीहे, तखन अपने कर्मक भोग ने सभकेँ मलिकपना दइए।"

अपना जनैत समाजमे जे सान्त्वनाक विचार चलैनमे अछि तइ अनुकूल सुधीरकेँ सेहो सान्त्वना देलिऐ मुदा तइ विचारमे सुधीरकेँ की भेटल से तँ वएह बुझैत हएत मुदा अपना बुझि पड़ल जे मन प्रफुल्लित जरूर भेलै जइसँ मन्द-मन्द मुस्की सुधीरक मुहसँ जरूर मुसैक रहल अछि। सुधीर बाजल- "भाय साहैब! ठीके समाजमे कहल जाइए जे 'दुनियाँमे कियो केकरो ने छी!' तखन तँ..?"

बजलौं- "तखन की?"

सुधीर बाजल- "जीवनक दिशाक संकल्प अराधि, साधना करैत जीवन-यापन करैत चली। अही तीनू संकल्पमे अपन अग्नि-परीक्षण सेहो सीता जकाँ भइये रहल अछि।"

बजलौं- "सएह..!"

सुधीर बाजल- "हँ सएह।"

❑

शब्द संख्या : 3097, तिथि : 01 मार्च 2020

आसीरवचन

आने-आन गाम-समाज जकाँ कीर्त्तपुर गाममे सेहो सभ रंगक लोक छथिए। बच्चासँ लऽ कऽ साए बर्खक बुढ़ो-पुरान छैथ आ अनपढ़सँ पढ़ल-लिखल धरि सेहो छैथ। बजैक क्रममे तँ सभ बजिते छी जे समाजक–गामक–सभ एकेरंग छी मुदा एकरंग केते छी से तँ समाजक आँट-पेट अपने कहैए। ओना, जँ मनुखक समूहकेँ समाज मानि ली तँ एकरंग समाज जरूर भेल मुदा जँ ओकर गुण-क्रियाक आधारपर देखल जाए तँ सभ थोड़े एकरंग छी। खाएर जे छी मुदा एक सीमाक भीतर बसने एक समाज तँ छीहे।

कीर्त्तपुर गाममे साए बर्खसँ ऊपर उमेरक एकटा छैथ ओ छैथ सुमतिया दादी। ओना, चेहराक रंग-रूपसँ साए बर्खसँ ऊपरक जरूर बुझि पड़ै छैथ मुदा देहक चुलबुली, बोलीक टाँस आ हाथक जे काज छैन तइसँ से नहियेँ बुझि पड़ै छैथ। बेकतीगत जीवन हुअए कि पारिवारिक आकि सामाजिक, तीनूक बीच जहिना नीक-सँ-नीक विचारो आ बेवहारो अछि तहिना दब-सँ-दब माने अधला-सँ-अधला विचार-बेवहार सेहो तँ अछिए। तँए, नीक-अधलाक बीच सीमांकन तँ नहियेँ कएल जा सकैए; हँ, तरवन एकटा लकीर खिंचल जा सकैए। मात्र दुइये रंगक विचार-बेवहार अछि तइसँ दुनूकेँ दू भागे कएल जा सकैए। किए तँ नीकोमे कोनो कम नीक आ कोनो ओइसँ कनी बेसी नीक आ कोनो बहुत नीक तँ कोनो बहुतोमे बहुत नीक होइए। तहिना अधलोमे कोनो कम अधला तँ कोनो बेसी अधला सेहो अछिए।

कीर्त्तपुर गाममे एकटा परिवार सज्जन कुमार आ दुर्जन कुमारक अछि। दुनू सहोदरे भाए छैथ। पिता रघुवंश मध्यम श्रेणीक किसानी जीवनसँ जुड़ल अपन जीवन अन्त केलैन। मुदा अपना जीवनमे जहिना समाजक बीच उच्चकोटिक परिवार बना चलौलैन तहिना दुनू बेटाकेँ सेहो कौलेज तकक शिक्षा दियौलैन। जेठ बेटा सज्जन कुमार पढ़ला-लिखला पछाइत नोकरी करए पटना चलि गेला। छोट बेटा दुर्जन कुमार गाममे रहि खेती-पथारीकेँ आधार बना जीवन-जापन करए लगला।

दू ठाम रहने आकि दू तरहक जीवन-जापन रहने दुनू भाँइ–सज्जन, दुर्जन–क बीच मतभेदक जन्म भेलैन। जइसँ एक-दोसरपर दोषारोपन करैत अपनाकेँ इमानदार आ दोसरकेँ बेइमान बनबैक पाछू लगि गेला, जइसँ सज्जन कुमार गाम आएब-जाएब छोड़ि देलैन आ पटनेमे नोकरिया जीवन जीबए लगला। आइ बीसम बर्ख भऽ रहल अछि। चारिटा सन्तान छैन, एकटा बेटी आ तीनटा बेटा। जेठ बेटी आ छोट तीनू बेटा।

दुर्जन कुमारकेँ सेहो चारिटा सन्तान, एक बेटा आ तीन बेटी छैन। बेटा जेठ आ तीनू बेटी छोट।

जहिना उमेर बीतलापर काज करैक लूरि सेहो सुधैरकऽ बदलैए तहिना विचारो आ बेवहारो तँ बदैलते अछि। ओना, बदलैए दुनू दिशामे। केतौ नीकसँ नीकतम दिस आ केतौ अधलासँ अधलातम दिस सेहो बदलैत बढ़ैए। तइमे एकटा बात आरो अछि। ओ अछि जे परिवारमे नीक काज-विचार रखैबलाकेँ जँ अधला काज-विचार रखैबला वंश बढ़ल तँ ओइ परिवारक धारामे एकाएक मोड़ आबए लगैए आ जँ से नहि भेल तँ पूरवते धड़ कहियौ आकि धड़-धड़ कहियौ, धड़धड़ाइत प्रवाहित होइते अछि। तहिना अधला काज करैबला वा अधला विचार रखैबला वंश बढ़ल तँ विपरीत दिशामे–माने नीक पिताक अधला बेटा भेने अधला दिस, वा अधला पिताक नीक बेटा भेने नीक दिस–बढ़िते अछि। ओना, दुनू भाँइ–सज्जन आ दुर्जन–अपन विचारो आ काजोमे परिवारो आ

भैयारियोक प्रति सुधारात्मक गुण सेहो आबिये रहल अछि। मुदा ऐगला पीढ़ीक विचारधारा ओइमे भरपूर जान फूकलक, जइसँ परिवारक बीच जे दुनू भाँइमे दूरी बनि गेल छल ओ धीरे-धीरे लगीच भऽ भेल। ओना, बीस बर्खक जे दुनू भाँइक भैयारीमे मतभेद भेने एकाकी जीवन बीतल तैबीच एक-दोसराक सम्बन्धक चलैत भेल कि एक-दोसराक खगने भेल आकि अपन जीवनक, मनुखक जीवनक आँट-पेट, कर्म-धर्मक आगमनसँ भेल से तँ सज्जने कुमार जनता आकि दुर्जने कुमार, मुदा से भेल।

सज्जन कुमारक बेटीक नाओं सुरूचि आ तीनू बेटाक नाओं धीर, अधीर आ सुधीर अछि। सुरुचि समाजशास्त्रसँ एम.ए. केलाक पछाइत पी.एच-डी. लेल विश्वविद्यालयमे रजिष्ट्रेशन करौलक। पाँच बर्खक समयो भेटने आ कौलेजक क्लासो सठने, सुरूचि गाम अबैक विचार केलक। ओना, सुरुचि जन्मसँ लऽ कऽ अखन धरि कीर्त्तपुर नहि आएल छल। तेकर कारण यएह छल जे दुनू भैयारी पिताक बीच जे मतभेदो आ एक-दोसराक बीच जे गलत दोषारोपनसँ दुनूक बीच जे दूरी बनल छल। ओना, सुरूचिकेँ गाम अबैक आकर्षणक मुख्य तीन कारण छेलइ। पहिल, पितियौत तीनू बहिनक प्रति सिनेह, दोसर कारण छल, पिताक दुनू भैयारीमे विचारक बदलाव आ तेसर कारण छल गाम-समाजक आकर्षण।

अपनासँ छोट भाइक संग सुरूचि गाम आएल। अनभुआर जगह सुरूचिक लेल कीर्त्तपुर छेलैहिये। मुदा अनभुआर गाम रहितो सुरूचिक आकर्षण अपन गामक प्रति परिचितो गामसँ बेसी छेलैहिये। बेसी आकर्षणक कारण भेल जे जहिना स्कूल-कौलेजमे अध्ययनक क्रममे खास-खास विषयक आकर्षण खास-खास विद्यार्थीमे जहिना भऽ जाइत अछि; भलेँ स्कूल-कौलेज एक्के किए ने होउ। एहेन कोनो स्कूले-कौलेजमे होइए सेहो बात नहियेँ अछि गामो-समाजमे होइते अछि। तँए ने गाममे

कोनो नमगर-चौड़गर सरोवरक (पोखैरक) आकर्षण बहुआयामी भइये जाइए। जेना सरोवर कि पोखैर किए ने हुअए, जोगी-जती जहिना ओकर जलक गुण-गान करै छैथ तहिना ने कवि-मनीषी ओइमे फुलाएल कमल आ भ्रमरक गुण-गान सेहो करिते छैथ, तहिना दोसर दिस मछखौका ओइ पोखैरमे पलित रोहु-भाकुर माछक सुआदक प्रशंसा करै छैथ तँ सिल्लीक शिकार केनिहार चिड़ैक गुण-गान सेहो करिते अछि। तहिना ने गामक माटियो अछिए। कियो नीक माटि देखि नीक उपजक कल्पना करै छैथ तँ कियो दोरस माइटिक उपजक गुण-गान सेहो करिते छैथ। जीवनक आनो-आन उपयोगी वस्तुक सेहो अहिना अछि। खाएर जे अछि जेतए अछि से तेतए रहअ; ओइसँ सुरुचिकेँ कोन मतलब छइ। समाजशास्त्रक अन्वेषी रहने सुरुचिकेँ मतलब छै समाजक बास, मनुखक बाससँ लऽ कऽ आइ धरिक जीवनक बीच वैचारिक, बेवहारिक क्रिया-कलापसँ। जे किताबसँ परे अछि। ओना, मोटा-मोटी जानकारीक रूपमे इतिहासो, भूगोल आ अर्थोशास्त्र, राजनीतिशास्त्र बीर्त अछिए मुदा जहिना दुनियाँक धरतीपर असंख्य जीव-जन्तुक बीच मनुख सेहो एक जाइतिक जीव छीहे, मुदा हर मनुखक चेहराक रूप आ हाथक अक्षरक लिखाबटमे जहिना भिन्नता भइये जाइए तहिना ने जीवनोक किछु तत्त्व एहेन अछिए जे एक-दोसरसँ अलग करिते अछि। भलेँ ओ चालि-चलैन माने जीवन-जापनमे नहि देखि पड़ए, मुदा नहि अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए, सेहो तँ अछिए।

कीर्त्तपुर एला पछाइत सुरुचिकेँ पहिल दिन अपन पूर्वज आ मौजूदा परिवार जे अछि तेकरे-तेकरे खोज-भाँजमे लगि गेलइ। ओना, किछु भाँज अस्पष्टो आ स्पष्टो रहल मुदा नीक कि बेजाए अनेको प्रकारक जानकारी सुरुचिक मनकेँ घूर्णसँ घर्षण नहि केलक सेहो बात नहियेँ रहल, से करबे केलक। गाम एलाक दोसर दिन सुरुचि तीनू पितियौत बहिनक संग भिनसरमे चाह पीबिये रहल छल कि सभसँ छोट बहिन सुवृत्ति

फुदकैत बाजल- “दीदी, आइ गाम घुमए चलू।”

छोट बहिनक बात, माने बाल-बोधक विचारकेँ सुरुचि बाल मति नहि बुझि सुमति बुझलक। बुझबो केना ने करैत, जखन अपन बाप-पुरुखाक गाम सुरुचि आएल अछि जे पूर्वजक वंशगत इतिहास तँ बुझैए आ गामक इतिहास बुझबे ने करैए तखन पूर्वजक जीवन-जापन केना बुझि सकैए आ जँ जीवन-जापन बुझबे ने करत तखन ओकर इतिहास बुझब की भेल? अन्वेषी सुरुचिक मन ठमकल। ठमैकते, जहिना असथिर पानिमे किछु खसलासँ कम्पन्न उठैए, शान्त-थीर वृक्षक पात हवाक सिहकीसँ डोलए लगैए तहिना सुरुचिक मनमे उठल जे जहिना उमेरक हिसाबसँ माने जेते उमेरक लोक छैथ तहिना ने जहियासँ हुनका ज्ञान-प्राण भेलैन तहिया तकक इतिहास हुनकासँ भेटिये जाएत। ओना, चेतन मनसँ अचेतन मनमे बिसरैक गुण बेसी अछि मुदा किछु शेष नहि अछि सेहो केना नहि कहल जाएत। जँ से गुण जीवित रहिते अछि तखन तँ भेल जे जीवनक घटित मुख्य-मुख्य अधिकांश घटना तँ मनमे जीवित हेबे करतैन। जखने मुख्य-मुख्य घटनाक जानकारी हएत तखने घटनाक परिवेशक जानकारी सेहो भइये जाइए।

ओना, गाम नइ एने सुरुचिकेँ चेहरासँ माने शरीरक रंग-रूपसँ चिन्हारए नहि छल मुदा जानल-सुनल जानकारी तँ किछु-ने-किछु माता-पितासँ भेटले छलइ। जइसँ अधखड्डुए किए ने हुए मुदा समाजक एकटा रूप तँ मनमे बनले छेलइ। तखन तँ भेल जे मनक ओइ रूपकेँ सहर-जमीनसँ चिन्हब। पितियौत तीनू बहिनकेँ, माने सुचिन्त्य, सुकृत्ति आ सुवृत्तिकेँ सम्मलिते स्वरमे सुरुचि कहलक- “बुच्ची! तूँ सभ तँ बच्चे छह, गामक सभ किछु नीक जकाँ गहराइसँ नहियोँ बुझैत हेबह, मुदा किछुओ ने बुझै छह सेहो केना कहबह, बहुत किछु तँ बुझिते छह, तँए चारू बहिन संगे चलह।”

सुचिन्त्य कौलेजमे अही साल नाओं लिखौने छल तँए लोअर

प्राइमरी स्कूलसँ लऽ कऽ हाइ स्कूल तकक समुचित ज्ञान आ कौलेजमे प्रवेश पौने कौलेजक सिंह-दुआरिक परिचय भइये गेल छेलै, जइसँ सुकृत्ति आ सुवृत्ति दुनू बहिन सुचिन्त्यक लेहाज करिते छइ। ओना, बजै-भुकैमे सुवृत्ति सभसँ छोट रहितो सभसँ चंगलो आ चड़फड़ो अछिए मुदा से अछि अपन सीमामे। हाइ स्कूलक नौमाक छात्रा रहितो बहिनमे छोट-पैघक विचार करिते अछि। ओना, सुचिन्त्य कौलेजमे प्रवेश लऽ चुकल अछि मुदा सुरुचिक जेठपनो आ ज्ञानपनोक धाखसँ धखाइते अछि। सुचिन्त्यकेँ ई विचार मनमे जगिये चुकल छल जे जेठपन हुअ कि बुधिपन आकि ज्ञानपन, हुनका मुहसँ जे बात (प्रश्न) निकलतैन ओइ बातक उत्तर जेते बुझल अछि, जइ स्रोतसँ बुझल अछि, तेकर जानकारी दैत 'हँ' कहबैन आ जे नइ बुझल रहत तेकरा 'नइ' मे कहबैन। अपन तँ यएह ने सीमा भेल। की बुझता नइ बुझता, केते बुझता आ केते नइ बुझता ई तँ भेल बुझनिहारक मनक बात। तेकर कर्तो-धर्तो आ मालिको-जवाबदेहो तँ अपने ने हेती। तँए सुचिन्त्यक मन पोखरिक पानि जकाँ थीरो आ स्वच्छो...। चारू बहिनक बीच सुरुचि मनकेँ थाहि विचारि नेने जे तीनू बहिनमे सुचिन्त्य सभसँ पैघ अछि, तँए दुनू छोट बहिनसँ बेसी अनुभवो आ जानकारियो हेबे करतै। सुचिन्त्यकेँ सुरुचि मने-मन अपन मुँहलगुआ बनाइये लेने छल।

आँगनसँ निकैलते सुरुचिक मनमे ठनकाक बिजलोका जकाँ चमकल। ओना, बिजलोका बिनु ठनकोक चमकैए मुदा ठनकाबला बिजलोकाक चमकमे गाढ़ोपन आ भारियोपन बेसी होइते अछि। जीवनक छिटकबो ओहने हेबे करैए। तइमे जे जेहेन घटना रहल ओइ घटनाक चमको-दमकक रंग सेहो तहिना होइते अछि। सुरुचिक मनमे ठनकाक बिजलोका जकाँ ई चमकल जे गाममे बच्चासँ बुढ़ धरि हजारो आदमी छैथ तइमे जे सभसँ बेसी उमेरक होथि हुनकासँ जेतेक जानकारी भेटत ओइसँ कम्मे ने कम उमेरबलासँ भेट सकैए। तँए नीक हएत जे

सभसँ पहिने गामक ई भाँजपर चढ़ा ली जे सभसँ अधिक उमरधारी के छैथ। हुनकर आँखिक देखल गामक सभ परिवारक संग हमरो परिवारक जानकारी हेबे करतैन जइसँ पैछला जे वंशगत धारा रहल माने पूर्वजक जे जीवनधारा रहल ओ आजुक सम्बन्ध स्थापित करैमे सेहो सहायक हेबे करत। जखने एक-दोसराक बीच अतीतक वृतान्त औत आकि ओहीमे सँ ने तीतपनकेँ तीतपन मानि वर्तपनक मीठपन बनाएब बेसी नीक हएत। ओना, गामो देखनिहारक नजैर अपन-अपन होइए। बेपारीक नजैरिक गाम, किसानक नजैरिक गामसँ भिन्न होइए, तहिना मछबारक नजैरिक गाम फलवाहक वा सब्जिवाहकक गामसँ भिन्न होइते अछि। ओना, भिन्नो-भिन्नोमे अन्तर अछिए। से अखन नहि। अखन एतबे जे एक समाजशास्त्रीक गाम केहेन होइए।

सुरुचिक मनमे अपन ओ विचार ओही दिन बसि गेल जइ दिन पी.एच-डी.क रजिष्ट्रेशन करौलक। बसल ई छल जे किताबक बीच, माने शास्त्रक बीच जे उच्चकोटिक मानव निर्माणक प्रक्रियाक संग उच्च कोटिक समाज, माने नीकसँ नीक समाज निर्माणक प्रक्रिया अछि आ कल्पित समाजक जे रूप-रेखा स्वप्निल समाजक मनक धारण बनि नाचि रहल अछि, आ दोसर दिस धरतीक ऊपर बसल मनुखो आ मनुखक समाजोक जे रूप-रंग अछि, ओइ दूरीकेँ अधिक-सँ-अधिक लग आनि एक रंगमे रंगाइत देखी।

प्रश्न–विचार–तँ सुरुचिक मनमे जगि चुकल छल, मुदा तेकर प्रमाणिकक बाट की अछि जइ माध्यमसँ चलि ओकरा जानि प्रमाणिक कएल जाए.! तइले एक दिस पोथी-पुराण अछि तँ दोसर दिस गाम-घरक सर-समाज अछि। अही ताककेँ तकबाक खियाल सुरुचिक मनमे छल।

आँगनसँ सड़कपर पहुँचते सुरुचिक मनमे दोसर विचार जागि गेल। जागल ई जे समाजशास्त्रमे विशेषज्ञताक लेल प्रयासरत् छी, तँए सभसँ मूल प्रश्न अछि जे समाज तँ मनुखक समूह भेल, मुदा शास्त्र की

भेल? अखन धरि हम सभ पोथी-पुराणकेँ शास्त्र मानैत एलौं हेन? तहीसँ निकलल समाजशास्त्र, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, राजनीतिशास्त्र इत्यादि-इत्यादि अनेको शास्त्र अछि। जहिना विशाल दुनियाँक बीच मनुख अपनाकेँ पाइनिक बुनोसँ कम अछि, तैठाम समुद्रकेँ समेटब बाल-बोधक खेल नइ ने छी..! दुनियाँक विशाल रूप देखि शीशाक छोट-छोट टुकड़ी जकाँ सुरुचिक मनभूमि चनैक उठल। अधीर-धीरक बीच पुल बनबैत सुरुचि अपनाकेँ सुधीर बनि शास्त्रपर नजैर दौड़ौलक। अपन दौड़ैत नजैरकेँ सुरुचि जेते बान्हि कऽ दौड़बए चाहि रहल छल तेते बन्हन तोड़ि-तोड़ि नजैर पड़ाए लगलै। उड़ल मनमे सुरुचि विचारए लगल जे शास्त्र तँ वएह ने भेल जे मनुखो आ मनुखक समूहोकेँ समयानुकूल जिनगी धड़बैत चलए। समयानुकूल जिनगी पबैमे समाजो आ परिवारोकेँ पहाड़ोसँ पैघ बाधा आगूमे देखि सुरुचि सुचिन्त्यकेँ कहलक- "सुचिन्त्य, हम तँ कीर्त्तपुर गाममे नइ रहै छी, ओना जन्म कीर्त्तपुरेमे भेल, मुदा दुइये बर्खक जखन रही तहिये पटना गेलौं आ आइ बीस बर्खसँ पटनिया बनल छी।"

सुरुचिक मुहसँ 'पटनिया' सुनि नौमा क्लासक छात्रा सुवृत्ति फुदकैत बाजल-

"बहिन, पटनिया जिनगी तँ बीस सालसँ भोगि रहल छी, चितनिया पाँचो साल भेगि कऽ देखबै तखन ने पटनिया चितनिया जिनगीक भाँज पेबइ।"

ओना, सुवृत्तिक विचार गाम आ शहरक तुलनासँ अछि, जे सुरुचि बुझि गेल, मुदा सुचिन्त्य बुझबे ने केलक। भाय, सुचिन्त्य तँ तखने ने जीवनमे अबैए जखन चिन्त्य सुचिन्त्यक विचार बुझत। जाबे सुचिन्त्य विचार नहि बुझत ताबे सुचिन्त्य चिन्त्य केना भऽ सकैए...। छोट बहिन सुवृत्तिकेँ सुरुचि कहलक- "बुच्ची, पाँच बर्खक करारपर–माने पी.एच-डी.क अवधि धरि– पटनियासँ चितनिया एलौं हेन। तोरो आँखिक बीझ,

देखला पछाति मेटा जेतह।”

बिच्चेमे सुचिन्त्य बाजल- “बहिन, गामक मुख्य सड़कपर आबि गेल छी।”

सुरुचिक बात सुनि सुचिन्त्य एक क्षण चुप रहि मने-मन विचारए लगल जे बेसी उमेरक लोक ने कम उमेरबलाक उमेर बुझैए मुदा कम उमेरबला बेसी उमेरबलाक उमेर केना बुझत? मनपर जोर दइते सुचिन्त्यक मनमे उठल, कम उमेर हुअए आकि बेसी उमेरक, के केहेन अनुभवी अछि ई तँ समाजमे सभ अपनो बजैए आ दोसरोक मुहसँ निकैलते अछि। तैसंग भैयारीक सम्बन्धे भैया-बौआ, काका-बाबाक चलैन सेहो अछिए।

अपन पितोक आ पड़ोसियो प्रवुद्धजनक मुहसँ केता दिन सुचिन्त्य सुनि चुकल छल जे गामेक कोन बात परोपट्टामे ‘सुमतिया दादी’ सभसँ उमेरगर छैथ। टोलक बीचमे सुचिन्त्यक घर आ टोलक पुबरिया कोणपर सुमतिया दादीक घर। सुचिन्त्य बाजल-

“बहिन, सुमतिया दादी सभसँ उमेरगर गाममे छैथ।”

ओना, गाम गामे छी, जेतए हेराएल-नुकाएल बहुत विचारो आ जीवनो अछिए तँए जखन खोजी बनि खोज करए निकलल छी तखन पहिने ई तय करब जे सभसँ नीक वा सभसँ उमेरगर के छैथ। जहिना पानिक करहर-सौरखीकेँ पनिपत देखि ओकर नार पकैड़ मूल–बीज–तक उखारनिहार पहुँचै छैथ वा जहिना चौरी आकि पनिगर भूमिमे उपजैबला केशौरक जड़ि तक पहुँचैले माटि तरक पन्ना पकैड़ आगू बढ़ए पड़ैए तहिना सुरुचि मनमे रोपि लेलक जे सभसँ पहिने सुमतिया दादीसँ भेँट करैत हुनकासँ आसीरवचन लैत आगू बढ़ब...।

विचारमे मजगूती अबिते सुरुचि सुचिन्त्यकेँ कहलक-

“बहिन, भने कहलह जे सुमतिया दादी सभसँ उमेरगर गाममे

छैथ। घर केते दूरपर छैन?”

सुचिन्त्य- “अही टोलक पुबरिया कोणपर छैन।”

सुरुचि, सुवृत्ति, सुकृत्ति आ सुचिन्त्य- चारू बहिन सुमतिया दादी-ऐठामक बाट पकैड़ आगू बढ़ल।

निसचित जगह आ निसचित काज देखि सुरुचिक मन नीक जकाँ थीर भेबो ने कएल छल कि एकटा नूतन विचार मनमे उपैक गेल। उपैक ई गेल जे आइये नहि अदौसँ अहिना होइत आबि रहल अछि जे कोनो वृत्तिकेँ मनमे पहिने चित्र खिंचल जाइए आ ओ चित्र समयानुसार परिवर्त्तित होइत चलै छै, जइसँ किछु अंशक रूप एहेन बनि जाइए जे पैछला चित्रसँ बिल्कुल भिन्न बुझाइए। मुदा किछु अंश एहेन तँ रहिते अछि जे आदि-सँ-अन्त धरि जीवित रहैत अछि, ओकरे जानब-परिखब ने भेल सुमति...। सुमति लग सुरुचिक विचार पहुँचले छल कि सुमतिया दादीक घर देखि हाथसँ इशारा करैत बिच्चेमे सुचिन्त्य बाजल-

“बहिन, यएह घर सुमतिया दादीक छिऐन..!”

सुचिन्त्यक बात सुनि सुरुचि आगूक बात जाबे किछु बाजए-बाजए तइ बिच्चेमे सुमतिया दादी आँगनसँ निकैल दरबज्जा दिस अबैत सोझहामे पड़ली। सुमतिया दादीकेँ देखिते सुचिन्त्य बाजल-

“बहिन, यएह छैथ दादी..!”

गाम-समाजमे जँ एतबो आदर लोकक मनमे रहै जे जीवनानुकूल आदर भेटए तँ अनेरे मनमे प्रेमाश्रुक आगमन हुअ लगैए। जाबे सुरुचि अभिवादनक स्वरमे किछु बाजए-बाजए तइसँ पहिने सुमतिये दादी बजली-

“अबै जाइ जा, चलह अँगनेमे बैस हब-गब करब।”

परम्पराकेँ निमाहैत सुमतिया दादी बाजल छेली। अपना ऐठामक परम्परा रहल अछि जे पुरुख दरबज्जापर आ औरतक सत्कार आँगनमे

होइ छैन। पाछुए सही, माने बिलम्मेसँ सही मुदा अपन उपस्थिति दर्ज करबैत सुरुचि बाजल- “दादी, गोड़ लगै छी, हमर नाम सुरुचिया छी।”

ओना, अखियाससँ सुमतिया दादी अखियाइस लेलैन जे चारू बच्चिया सज्जन-दुर्जन परिवारक छी। जहिना सुमतिया दादी आन-आनकेँ असिरवाद दैत कहैत आबि रहल छैथ तहिना बजली-

“बाउ, हमरो औरुदा भगवान तोरे देथुन।”

अनपढ़-अनाड़ी सुमतिया दादीक आसीरवचन सुनि सुरुचि अवाक भऽ गेल। दादी की असिरवाद देलैन से बुझि कहाँ पाबि रहल छी..! साए बर्खसँ ऊपरक उमेर छैन, प्रेमचन्द चाचा कहै छैथ जे जखने चालीस तखने घपचालीस आ शास्त्र-पुराण कहैए, अस्सी तँ खस्सी! तैठाम दादी साए बर्ख पार केलाक पछातियो अपन प्रसाद स्वरूप असिरवाद बाँटि रहली अछि जे हमरो औरुदा भगवान तोरे देथुन। से आब अपन रहलैन की जे हमरा देती..!

असोथकित जकाँ सुरुचिकेँ देखि सुमतिया दादी मने-मन जेना गुर-चाउर फाँकए लगली तहिना किछु बाजिए ने रहल छेली। ओना, बजैक पाहि सुरुचिक छल तँए सुमतिया दादी मुँहक कपाट बन्न केने रहली। मुदा अन्तो-अन्त सुरुचिकेँ असोथकित भेल चुप देखि सुमतिया दादीक मनमे नाचि उठलैन जे भरिसक सुरुचि हमर औरुदानुकूल आसीरवचन नहि बुझि पेब रहल अछि..!

❑

शब्द संख्या : 2564, तिथि : 06 मार्च 2020

❑❑❑

❑❑

❑

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक ‘पंगु’ उपन्यासक पछातिक रचना-क्रम:

---------.

पंगु- (उपन्यास) लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018
770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018
771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018
772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018
773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018
774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018
775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018
776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018
777. हमर मेला चोरि भS गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018
778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018
779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018
780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018
781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018
782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018
783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018
784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018
785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018
786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018
787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018
788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018
789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018
790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018
791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019
792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019
793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019
794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019
795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019
796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019

854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019

855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019

856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019

857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019

858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019

859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019

860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019

861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019

862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019

863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019

864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019

865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019

866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019

867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019

868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019

869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019

870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019

871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019

872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019

873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019

874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020

875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020

876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020

877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020

878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020

879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020

880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक : शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

898. सुचिता- दू : शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन : शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि : शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह : शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात : शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुद्दढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक : शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू : शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात : शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस : शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक : शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू : शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन : शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि : शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह : शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात : शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ : शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ : शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस : शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुद्दढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि : 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि : 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि : 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकS मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- शब्द संख्या: 1735, तिथि: 07 दिसम्बर 2023

1140. उकडू समयमे सुकडू काज: शब्द संख्या: 1737, तिथि: 10 दिसम्बर 2023

1141. मुक्ति: जारी...

❑❑❑

❑❑

❑

Notes

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
